तिमाही

पयामे बरकात

ख़ानकाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ का दीनी व समाजी तर्जुमान

जुलाई ता सितम्बर 2020 ई. जि. 5, शुमारा 3

पैग़ाम • बरकाते कुरआन • बरकाते हदीस • इस्लामी अक़ीदा • फ़िक़्ही मसाइल • मज़ामीन • गोशा-ए-ख़ानक़ाह
नात-व-मन्कबत • तिब-व-सेहत • करियर गाइडेंस • बच्चों का कॉलम • मुर्शिदाने मारहरा के तब्लीग़ी दौरे • बरकाती ख़बरें

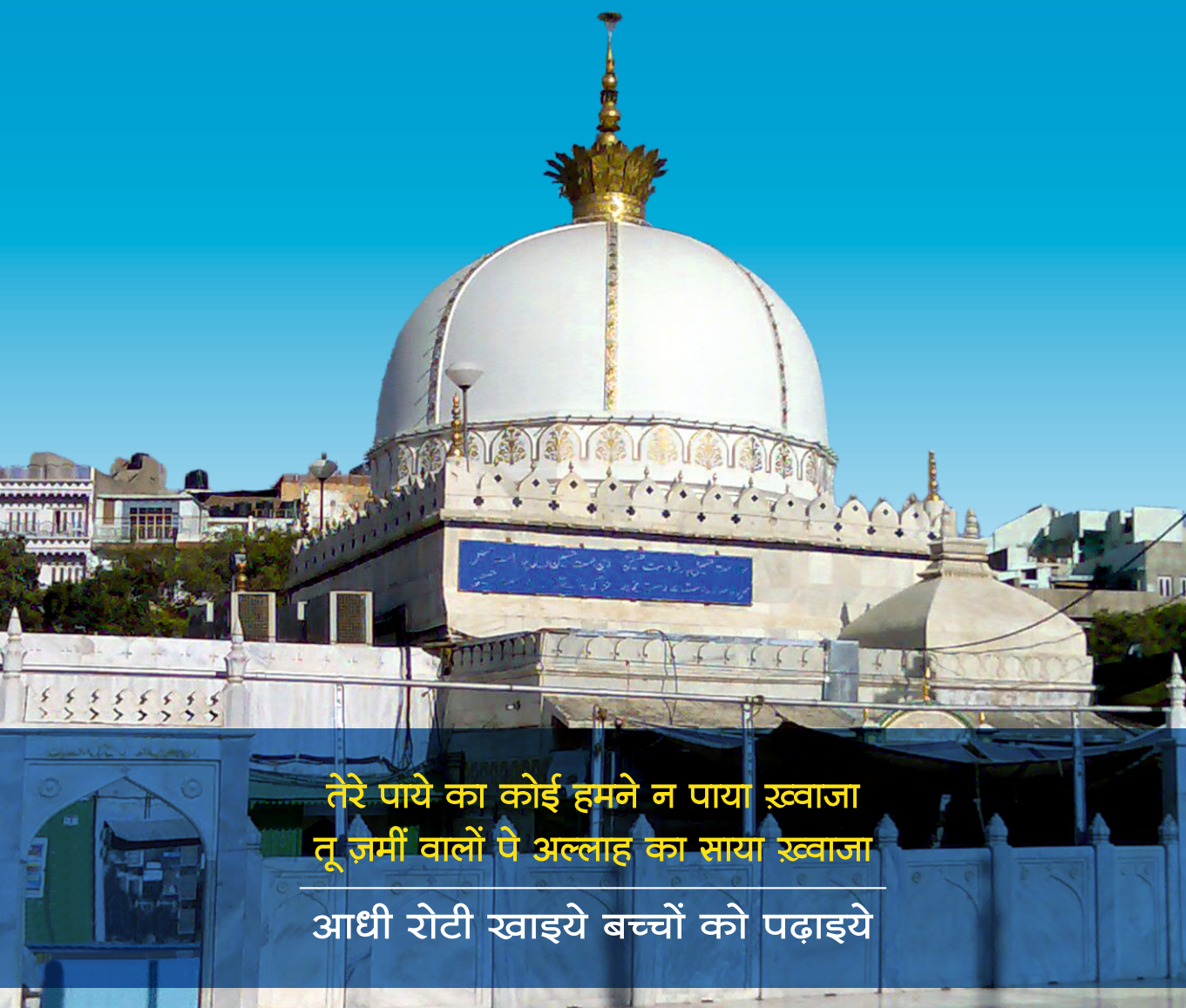

तेरे पाये का कोई हमने न पाया ख़्वाजा
तू ज़मीं वालों पे अल्लाह का साया ख़्वाजा

आधी रोटी खाइये बच्चों को पढ़ाइये

ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ का दीनी व समाजी तर्जुमान

तिमाही

पयामे बरकात

जुलाई ता सितम्बर 2020 ई० | जिल्दः 05 - शुमाराः 03 | ज़ि क़अ़दा ता मुहर्रम 1442 हि०

सरपरस्ते आला

अमीने मिल्लत हज़रत **सय्यद मुहम्मद अमीन मियाँ** क़ादरी
सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़, एटा (यूपी)

मजलिसे मुशावरत

शरफ़े मिल्लत हज़रत **सय्यद मुहम्मद अशरफ़** मारहरवी
साबिक़ मेम्बर ऑफ़ सेटेलमेंट कमीशन, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

फ़ज़्ले मिल्लत हज़रत **सय्यद मुहम्मद अफ़ज़ल** क़ादरी
ए.डी.जी (इकॉनोमिक ऑफ़ेन्सेज़ विंग) भोपाल (मध्य प्रदेश)

रफ़ीक़े मिल्लत हज़रत **सय्यद नजीब हैदर** नूरी
सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़, एटा (यूपी)

मजलिसे इदारत

डॉ० अहमद मुजतबा सिद्दीक़ी
सय्यद मुहम्मद उस्मान क़ादरी
सय्यद मुहम्मद अमान क़ादरी
सय्यद हसन हैदर क़ादरी

मुदीरे ऐज़ाज़ी तौहीद अहमद बरकाती

मुदीर आरिफ़ रज़ा नोमानी

कम्पोज़र व डिज़ाइनर मुहम्मद हाशिम ख़ान बरकाती

क़ीमत फी शुमारा	: 35/—	₹
सालाना फ़ीस	: 130/—	₹
ऐज़ाज़ी फ़ीस	: 1100/—	₹

ख़त व किताबत का पताः तिमाही पयामे बरकात

Payam-e-Barkaat (Quarterly)
Al-Barkaat Islamic Research & Training Institute, Jamalpur, Aligarh (U.P) 202122
E-mail: payamebarkaat@gmail.com
WhatsApp No -09045536754

स्वामी/प्रकाशक सय्यद मुहम्मद अमान एवं प्रिन्टर आबिद नसीम द्वारा Marwah Graphic Enterprises 8-A.Q. मार्केट, बदर बाग़, जेल रोड, अलीगढ़ –202002 द्वारा मुद्रित एवं अल–बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट अनूपशहर रोड, अलीगढ़ से प्रकाशित

नोटः रिसाले से मुताल्लिक़ कोई भी मुक़द्दमा सिर्फ अलीगढ़ की अदालत में क़ाबिले समाअ़त होगा।

सं० न०	मज़ामीन	मज़मून निगार	पेज न०
1	पैग़ाम	हुज़ूर अमीने मिल्लत दामा ज़िल्लहू	3
2	मुल्क के मौजूदा हालात और तक़ाज़े	आरिफ़ रज़ा नोमानी	4
3	सूरह मायदा की तफ़सीर (क़िस्त 3)	मौ० साजिद नसीरी	6
4	हज व उमरा के फ़ज़ाइल	तौहीद अहमद बरकाती	8
5	बर्रे सग़ीर के बनाम मुस्लिम फ़िरक़े	तौहीद अहमद बरकाती	11
6	नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा	मुफ़्ती अ़ब्दुल मुस्तफ़ा बरकाती	14
7	क़ुर्बानी की हिकमतें और बरकतें	मौ० शादाब अमजदी बरकाती	17
8	क़ुर्बानी के मसाइल और चन्द ग़लत फ़हमियाँ	आरिफ़ रज़ा नोमानी	22
9	शहादते इमामे हुसैनः अहादीस की रौशनी में	मौ० अ़ब्दुल मुबीन नोमानी	25
10	तिलावते क़ुरआ़न की फ़ज़ीलत	मौ० दानिश रज़ा मन्ज़री	28
11	निकाह और फ़िक्रे मआ़श...	मौ० मुहम्मद हारून मिस्बाही फतहपुरी	33
12	खाने पीने के इस्लामी आदाब व अहकाम	मौ० मुहम्मद अकबर अ़ली बरकाती	35
13	मज़हबे इस्लाम में औरतों पर एहसानात	मौ० मुहम्मद मोहसिन मिस्बाही	37
14	पानी अल्लाह पाक की अनमोल नेअ़मत	हाफ़िज़ मुहम्मद हाशिम क़ादरी	39
15	लॉकडाउन, मदारिसे इस्लामिया और...	मौ० नईमुद्दीन फ़ैज़ी बरकाती	43
16	हुज़ूर साहिबुल बरकात के तसर्रुफ़ात	डॉ० अहमद मुज्तबा सिद्दीक़ी	46
17	हज़रत सय्यदना शेख़ इब्राहीम ईरजी अलैहिर्रहमा	सय्यद मुहम्मद अमान क़ादरी	48
18	हज़रत सय्यदना निज़ामुद्दीन अलैहिर्रहमा		49
19	बरकाते ख़ानदाने बरकात	हज़रत सय्यद नजीब हैदर नूरी	51
20	हयाते साहिबुल बरकात के चन्द गोशे	हज़रत सय्यद मुहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी	52
21	नात शरीफ़	सय्यद मुहम्मद अशरफ़ क़ादरी	55
22	मन्क़बत	मौ० अ़ली अहमद सीवानी मिस्बाही	55
23	कोविड-19: अ़लामात और हिफ़ाज़ती तदाबीर	डॉ० अज़हर अ़ली बरकाती	56
24	बचत खाता खुलवाने के फ़वाइद...	डॉ० आतिफ़ सालार	59
25	सबक़ आमोज़ कहानियाँ	डॉ० मुशाहिद हुसैन रज़वी	61

नोटः मज़मून निगार के अफ़कार व ख़्यालात से इदारे का मुत्तफ़िक़ होना ज़रूरी नहीं है।

पैग़ाम

ख़्वाजा-ए-बुज़ुर्ग सुल्तानुल हिन्द अता-ए-रसूल ग़रीब नवाज़ सय्यदना मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु न सिर्फ़ इक़लीमे विलायत के ताजदार और इम्तियाज़ी करामात व रूहानियत के अ़लम्बरदार हैं, बल्कि हिन्दुस्तान की मख़्लूत तहज़ीब व सक़ाफ़त में मुन्फ़रिद व मुमताज़ क़यादत के हामिल भी। बिला शुब्हा सरकार ग़रीब नवाज़ की आमद से लेकर दौरे हाज़िर तक सर ज़मीने हिन्दुस्तान पर उनकी बिला शिरकते ग़ैर हुकूमत है। महाराजा धिराज सुल्तानुल हिन्द के दरबार की वह इम्तियाज़ी शान है कि सुबह व शाम इस बारगाह में तमाम क़ौमों और मज़ाहिब के लोग अपने दामन को फैलाये बरगाहे ख़ुदावन्दी में अपनी मुरादों के बरआने के लिये सिफ़ारिशें करते हुए नज़र आते हैं और कामरान होकर दामने मुराद भरकर वापस होते हैं। हुकूमतें और सरबराहाने हुकूमत अपनी दस्तारे इक़्तिदार ख़्वाजा-ए-बुज़ुर्ग के क़दमों में रखना अपने इक़बालमन्द होने की दलील समझते हैं।

हाल में एक टेलीविज़न के पत्रकार के ज़रिये ख़्वाजा-ए-ख़्वाजागान की शान में गुस्ताखाना कलेमात अदा करने और उसके नतीजे में सामने आये रद्दे अमल से यह बात साबित हो गई है कि सरकार सुल्तानुल हिन्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हिन्दुस्तानी मुसलमानों को किस दर्जा अमीक़ वाबस्तगी है। एक नाज़ेबा जुमले के मन्ज़रे आ़म पर आने के बाद कश्मीर से कन्याकुमारी और बंगाल से कटिहार तक ख़्वाजा के दीवाने अपनी जान को नामूसे इरादत व अक़ीदत पर लुटाने को कमर बस्ता हो गए।

हिन्दुस्तान की तारीख़ में यह पहला वाक़्या था कि किसी बद-बख़्त व बे-अक़्ल जिसको न तो हिन्दुस्तान की मख़्लूत तहज़ीब का इल्म है और न बैनल अक़वामी मन्ज़र नामे पर सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अज़मत का अन्दाज़ा है, इनकी शान में गुस्ताख़ी करने की जुरअत की, लेकिन तमाम अहले मशरब व अहले मसलक ने जिस तरह के बातिल इरादों की सरकूबी की वह लायक़े तहसीन है और बिल ख़ुसूस बरकाती नौजवानों की सई के लिये मैं उनको दिली मुबारकबाद पेश करता हूँ।

रब तबारक व तआ़ला हमको दीने मतीन और मसलक व मज़हब की मुख़्लिसाना ख़िदमात अन्जाम देने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। (आमीन)

दुआ़ गो

सय्यद मुहम्मद अमीन क़ादरी
सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया,
मारहरा शरीफ़, ज़िला एटा, (यूपी)

मुल्क के मौजूदा हालात और तक़ाज़े

इस दुनिया में हर दिन कहीं न कहीं नए-नए वाक़्यात रूनुमा होते हैं। उनमें से कुछ अच्छे होते हैं तो कुछ बुरे और तकलीफ़देह, कुछ सियासी और कुछ समाजी होते हैं तो कुछ मज़हबी, उन्हीं में से एक निहायत अफ़सोसनाक और तकलीफ़देह वाक़्या हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में रूनुमा हुआ। हुआ कुछ यूँ कि न्यूज़ 18 के एंकर अमिश देवगन ने हिन्द के राजा, हम सबके ख़्वाजा हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अलैहिर्रह़मा की शान में अभद्र शब्द कहे और उन्हें ''अक्रांता और लुटेरा'' कहा। इस प्रकार से की गई तौहीन हिन्दुस्तान के मुसलमान बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकते।

बल्कि यह सभी हिन्दुस्तानी के लिये दुख की बात है। जब आप हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हयात का मुतालआ़ करेंगे तो हक़ीक़त सामने आ जायेगी कि हज़रत ख़्वाजा ''अक्रांता व लुटेरे'' थे या ''अम्न व शान्ति के प्रतीक।'' आपने दीने इस्लाम की तब्लीग़ की ख़ातिर अपने मुल्क को छोड़ा और किरमान, हम्दान, अस्तराबाद, हेरात वग़ैरह की सैर करते हुए लाहौर पहुँचे, वहाँ हज़रत गंज बख़्श अ़ली हिज्वेरी के मज़ारे मुबारक पर मुराक़बा फ़रमाया। लाहौर से दिल्ली आये यहाँ कुछ दिनों क़याम किया, फिर अजमेर शरीफ़ का रूख़ किया।

आपके अजमेर शरीफ़ आने का वाक़्या हर शख़्स जानता है कि जब अजमेर शरीफ़ आये तो उस वक़्त अजमेर और दिल्ली का राजा पिथौरा राय और उसके दरबारियों को आपकी आमद नागवार लगी। उसके आदमियों ने हज़रत ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ के क़याम में रूकावटें डालीं और तकलीफ़ें पहुँचाई। लेकिन ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ डटे रहे और राजा को आपकी शख़्सियत का अन्दाजा हो गया और वह इस्लाम का दामन थाम कर मुसलमान हो गया।

आप पूरे वाक़्ये पर ग़ौर करेंगे तो कहीं से भी यह बात साबित नहीं होती है कि आप अक्रांता व लुटेरे थे। आपकी ज़ात पर यह सरासर झूठ बांधा गया। हम हिन्दुस्तानी ख़्वाजा से अक़ीदत रखने वाले इस क़िस्म की हरकतों को कभी भी बर्दाश्त नहीं करेंगे।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अख़्लाक़े करीमाना की एक झलक दिखाने के लिये यह वाक़्या पेश कर रहा हूँ।

''एक बार एक क़ातिल क़त्ल के इरादे से आपके पास आया, आपने रूह़ानी नज़र से उसे पहचान लिया, आओ भगत की, इ़ज़्ज़त से बैठाया, ख़ैरियत पूछी फिर फ़रमाया जिस इरादे से आये हो वह कर गुज़रो। घबराने की ज़रूरत नहीं। यह सुनते ही उसका हाल यह हो गया कि काटो तो ख़ून नहीं, बदन पर कपकपी तारी हो गई, छुरी सामने रख कर अर्ज़ किया कि मेरा इरादा नहीं था दुश्मनों ने मुझे लालच देकर भेजा था। अब मैं शार्मिन्दा हूँ, मुझे माफ़ कर दीजिए। अपने आपको मुजरिम की हैसियत से पेश करता हूँ, आपको इख़्तियार है जो चाहे सज़ा दें, चाहें तो मार डालें मैं इसके लिये भी

तैयार हूँ, लेकिन सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने उसे माफ़ कर दिया यह देखकर वह क़दमों में गिर गया और इस्लाम में दाख़िल हो गया।'' (बरकाते ख़्वाजाः पे० 13)

यह थी आपके अख़्लाक़े ह़सना की एक झलक, यह वाक़्या पढ़ने के बाद कोई भी अक़्लमन्द आपको लुटेरा या अक्रांता नहीं कह सकता। आपकी सीरत ऐसे बहुत सारे वाक़्यात से भरी पड़ी है, आपने पूरे बर्रे सग़ीर में इस्लाम की रौशनी फैलाई और लाखों दिलों को नूरे ईमान से भर दिया।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बारगाह ऐसी मक़बूल बारगाह है जहाँ हर धर्म और जाति के लोग आते हैं और उनसे अक़ीदत रखते हैं। देश की सियासी पार्टियाँ उनकी बारगाह में चादरें पेश करके उनसे दुआ़यें लेती हैं। ऐसे में अगर कोई भी हिन्दुस्तानी ख़्वाजा अजमेरी की शान में अक्रांता और लुटेरा जैसा शब्द प्रयोग करके मुल्क को नफ़रत की आग में झोंकना चाहते हैं तो हम हुकूमत से यह मुतालबा करते हैं कि मुल्क में अमन व सलामती और भाईचारा क़ायम रखने के लिये इस तरह की हरकत करने वालों पर सख़्त कार्यवाही करें और हज़रत ख़्वाजा साह़ब की शान में गुस्ताख़ी करने वाले पत्रकार अमिश देवगन को गिरफ़्तार करके सख़्त कार्यवाही करें। ताकि फिर कभी कोई दूसरा किसी वली, बुज़ुर्ग की शान में गुस्ताख़ी करने की जुरअत न करे।

मुसलमानों को भी बेदार रहना चाहिए कि अगर कोई धार्मिक मामलों में दख़ल अन्दाज़ी करे तो क़ानून के दायरे में रहकर उसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करें।

हिन्दुस्तान में सिलसिला क़ादिरिया, चिश्तिया की ह़सीन संगम, अज़ीम ख़ानक़ाह ख़ानक़ाहे बरकातिया के सज्जादगान हुज़ूर अमीने मिल्लत और हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामा ज़िल्लहुमा ने हज़रत ख़्वाजा की शान में गुस्ताख़ी करने वाले एंकर के ख़िलाफ़ लीगल नोटिस जारी की है और उसमें हुकूमत से सख़्त एक्शन और दीगर शहज़ादगान ने लेने की बात कही है।

वली-ए-अहद ख़ानक़ाहे बरकातिया हज़रत सय्यद अमान मियाँ क़ादरी ने कहा कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की शान में गुस्ताख़ी करने वाले एंकर के ख़िलाफ सख़्त कार्यवाही की जाये और यह भी फ़रमाया कि इस वक़्त मुल्क जिन हालात से गुज़र रहा है, इस वक़्त ऐसी नफ़रत फैलाना वह भी उस अज़ीम रूह़ानी पेशवा के बारे में जिनकी इ़ज़्ज़त हर किसी के दिलों में है। ऐसी बात कहकर मुल्क को कमज़ोर करने की साज़िश की जा रही है जो कि क़ाबिले मज़म्मत है। आपने ''कुल हिन्द अन्जुमन इस्लाहे मुआ़शरा अलीगढ़'' के तहत FIR भी दर्ज कराई और उस गुस्ताख़ के ख़िलाफ़ सख़्त से सख़्त कार्यवाही करने की अपील की।

कुछ इस शुमारे के बारें में: ख़्वाजा साह़ब की शान में गुस्ताख़ी किये जाने पर हुज़ूर अमीने मिल्लत का पैग़ाम अवामे अहले सुन्नत के नाम शामिल किया गया। ज़िल ह़िज्जा के मौक़े पर दो अहम मज़मून शामिल किये गए हैं। माहे मुह़र्रम के मौक़े से ह़दीस की रौशनी में शहादते हुसैन पर एक मज़मून है। निकाह और रोज़गार पर एक मालूमाती मज़मून है। मुर्शिदाने मारहरा के तब्लीगी दौरे का इस बार कॉलम नहीं है, क्योंकि कोरोना के सबब कई माह से कोई सफ़र नहीं हुआ है। कारियर गाइडेंस के कॉलम में बैंक अकाउण्ट के बारे में अहम और मालूमाती मज़मून शामिल किया गया है। ★★★

★ arifnomani2016@gmail.com

सूरह मायदा की तफ़सीर

क़िस्त (3)

रूकूअ़ न० 8 का ख़ुलासाः अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः ऐ मुसलमानो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, जो उनको दोस्त बनायेगा वह उन्हीं में से होगा। अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता है, जिनके दिल में खोट है उनकी दोस्ती के लिये मरे जाते हैं, कहते हैं कि हम कहीं मुसीबत में न फंस जायें, तो क़रीब है कि अल्लाह तआ़ला फतह लायेगा या ऐसी बात ज़ाहिर फ़रमायेगा जिससे वह अपने दिलों मे छुपाई हुई बातों पर शर्मिन्दा होंगे। उस वक़्त मुसलमान कहेंगे कि यह वह लोग हैं जो क़समें खाकर कहते थे कि हम मुसलमान हैं, फिर उनके आमाल बर्बाद हो जायेंगे।

अल्लाह तआ़ला मुसलमानों से फ़रमाता है जो दीने इस्लाम से फिरेगा तो अल्लाह तआ़ला ऐसी क़ौम को पैदा फ़रमायेगा जिनसे अल्लाह मुहब्बत करेगा और वह अल्लाह से मुहब्बत करेंगे। मुसलमानो के लिये नर्म होंगे, काफ़िरों के लिये सख़्त होंगे, अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे और यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है अता फ़रमाता है। बेशक मुसलमानों का वली (दोस्त) अल्लाह और उसके रसूल और नमाज़ क़ायम करने वाले और ज़कात देने वाले मुसलमान हैं जो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों को दोस्त बनाये यह अल्लाह का गिरोह है और यही ग़ालिब रहने वाला है।

रूकूअ़ न० 9 का ख़ुलासाः अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः ऐ मुसलमानो! अहले किताब और कुफ़्फ़ार को दोस्त न बनाओ जो तुम्हारे दीन को मज़ाक़ बना लें, अगर तुम मुसलमान हो तो अल्लाह से डरो और जब लोगों को नमाज़ की तरफ बुलाया जाता है तो ना-समझ लोग मज़ाक़ उड़ाते हैं।

अहले किताब को मुसलमान की जानिब से यह बात बुरी लगती है कि वह अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आये, जो कि हक़ है और उन्हें ख़ुद भी उस पर अमल करना चाहिए।

कुछ यहूदी हुज़ूर ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुए और हुज़ूर से कुछ बातें करने के बाद कहने लगे कि तुम्हारा दीन कितना बुरा है। अल्लाह तआ़ला ने जवाब दिया कि बुरा तो वह है जिस पर अल्लाह ने लानत भेजी, ग़ज़ब फ़रमाया, उनमें से कुछ को बन्दर और सूअर बनाया और जिन्होंने शैतान की पूजा की, यह लोग सीधे रास्ते से भटके हुए हैं। आपके पास आकर सिर्फ़ ज़बान से कहते हैं हालाँकि वह असल में काफ़िर ही हैं। और अल्लाह सब जानता है उनमें से बहुत से लोग गुनाह व ज़्यादती और ह़राम खोरी की तरफ भागे जाते हैं। यह बहुत बुरा काम करते हैं और उनके मज़हबी रहनुमा उन कामों से मना न करके बहुत बुरा कर रहे हैं।

यहूदी कहते हैं कि अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है। हक़ीक़त में तो ख़ुद उनके हाथ बंधे हुए हैं और उन पर लानत की गई है। अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए, वह जैसे चाहता है ख़र्च करता है। अल्लाह ने जो कुछ नाज़िल किया है अपने ह़बीब पर, उसकी वजह से बहुत से लोग कुफ़्र और सरकशी में बढ़ गए। अल्लाह फ़रमाता हैः हमने उनके दरमियान क़यामत तक के लिये बुग़्ज़ और दुश्मनी डाल दी जब जब उन्होंने जंग की

आग भड़काने और ज़मीन में फ़साद मचाने की कोशिश की अल्लाह ने उन्हें ख़त्म कर दिया। अल्लाह फ़सादियों को पसन्द नहीं फ़रमाता है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है अगर अहले किताब (यहूद व नसारा) ईमान लाते, तक़वा इख़्तियार करते, तौरेत व इंजील और आख़िरी किताब क़ुरआ़न के मुताबिक़ अमल करते तो हम उन्हें जन्नत में दाख़िल करते और उन्हें ऊपर व नीचे से खिलाते (बे-शुमार नेमते देते) उनमें से एक जमाअ़त ऐतेदाल पसन्द है लेकिन अक्सर लोग बुरा काम करते हैं।

रूकूअ़ नम्बर 10 का खुलासाः इसमें अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ नबी ﷺ ! जो आपकी तरफ नाज़िल किया जा रहा है उसको लोगों तक पहुँचा दीजिए और अगर ऐसा नहीं हुआ तो आपने पैग़ाम को नहीं पहुँचाया, अल्लाह तआ़ला लोगों से आपकी हिफ़ाज़त करेगा, बेशक अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं देता और ऐ नबी! आप अहले किताब से कहिये कि जब तक तुम तौरेत, इंजील और जो कुछ तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया उसको क़ायम नहीं करते, तुम किसी दीन व मिल्लत पर नहीं हो, (और तौरेत व इंजील में यह भी हुक्म है कि तुम आख़िरी नबी मुहम्मद ﷺ पर ईमान लाना इसलिए उन पर भी ईमान लाना ज़रूरी है) और आप पर जो नाज़िल किया जा रहा है, उसके ह़सद व बुग़ज़ में बहुत से लोग कुफ़्र व ज़्यादती में बढ़ जायेंगे तो आप काफ़िरों का ग़म न खायें। जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं और इसी तरह यहूदी, सितारा परस्त और नसरानी जो कोई अल्लाह, आख़िरत पर ईमान लाये और नेक अमल करे तो उसे न कोई ख़ौफ़ है और न कोई ग़म। अब बनी इस्राईल के बारे में बताया जा रहा है कि जब जब उनकी तरफ किसी रसूल को भेजा जाता और वह कोई ऐसा हुक्म लाते जो उनके मिज़ाज के ख़िलाफ़ होता तो एक गिरोह नबियों को झुटलाता और दूसरा गिरोह उन्हें क़त्ल करता तो उन्होंने समझा कि कोई सज़ा नहीं होगी तो वह अंधे और बहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें माफ़ किया फिर उनमें से बहुत से लोग अंधे और बहरे हो गए। अल्लाह उनके करतूतों को जानता है, वह लोग काफ़िर हैं, जिन्होंने कहा कि मसीह इब्ने मरियम (ईसा अलैहिस्लाम) ही अल्लाह हैं। और मसीह ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो तुम्हारा और मेरा रब है। जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहरायेगा अल्लाह ने उसके लिये जन्नत ह़राम कर दी है, उसका ठिकाना जहन्नम होगा और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं है। बेशक वह लोग काफ़िर हैं जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में से तीसरा है, मअ़बूद सिर्फ एक है, अगर वह अपने क़ौल से फिरे नहीं तो ज़रूर उन्हें अल्लाह का अज़ाब पहुँचेगा। क्या वह अल्लाह से तौबा व इस्तिग़फ़ार नहीं करते, अल्लाह तो बख़्शने वाला मेहरबान है। हज़रत मसीह इब्ने मरियम सिर्फ एक रसूल हैं और उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके, उनकी वालिदा सिद्दीक़ा थी, वह दोनों खाना खाते थे (जबकि अल्लाह खाने पीने से पाक है) ऐ नबी! देखिये, हम कैसे उनके लिये निशानियाँ बयान करते हैं, फिर वह कैसे भागते जा रहे हैं।

आप फ़रमाईये कि क्या तुम अल्लाह तआ़ला के अलावा उसकी इबादत करते हो जो न तुम्हें फ़ायदा दे सकते हैं, न नुक़सान पहुँचा सकते हैं। अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है। आप कहिए ऐ अहले किताब! अपने दीन में हक़ के अलावा हद से न बढ़ो और गुमराह क़ौमों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो, जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया और खुद भी सीधी राह से भटके। (जारी...) ★★★

★ रिसर्च ऐसोसिऐट, (ABIRTI), अलीगढ़, (यूपी)

हज व उमरा के फ़ज़ाइल

عـن عبـدالله بن مسعود رضى الله عنه قال قال رسول الله ﷺ تابعوا بين الحج و العمرة فانهما ينفيان الفقر والذنوب كما ينفى الكير خبث الحديد و الذهب و الفضة، وليس للحجة المبرورة ثواب الا الجنة _ (رواه الترمذى، حديث ٨١٠)

तर्जुमाः हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः हज व उमरा मिलाकर करो कि यह दोनों ग़रीबी और गुनाहों को ऐसे मिटा देते हैं, जैसे भट्टी लोहे, सोने और चाँदी के मैल को और हज मक़बूल का सवाब जन्नत के सिवा कुछ नहीं है। (तिर्मिज़ी शरीफ़ः हदीस 810)

हल्लुल मुफ़रदातः تَابِعُوْ मुताबअ़त बाबे मुफ़ाअलत से फ़ेअ़ल अम्र हाज़िर मारूफ़ जमा मुज़क्कर का सेग़ा है। मुताबअ़त का माना है मिलाना, लगातार करना, कहा जाता हैः تابع بين الاعمال लगातार किया, يَنْفِيَانْ यह फ़ेअ़ल-ए-मुज़ारेअ़ मारूफ़ तसनिया मुज़क्कर ग़ायब का सेग़ा है। नफ़ा यनफ़ी नफ़ियन सें जिसका माना है ''दूर करना'' कहा जाता है نَفَتِ الرِّيْحُ اَلتُّرَابَ हवा ने मिट्टी को उड़ा दिया। اَلْفَقْرُ मुफ़लिसी, मोहताजी, इसी से आता है फ़क़ीर। اَلذُّنُوْبُ यह जमा है ज़म्ब की, जिसका माना होता है ''गुनाह'' है। اَلْكِيْر लोहार की भट्टी, इसकी जमा अकयार है। اَلْحَدِيْد लोहा इसी से आता है। हद्दाद यानी लोहार। اَلذَّهَبُ सोना इसकी जमा अज़हाब और ज़ुहूब आती है। اَلْفِضَّةُ चाँदी इसकी जमा फ़ेज़्ज़ाज़ आती है।

हालाते रावीः हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु का इस्मे गिरामी ''अ़ब्दुल्लाह'' और कुन्नियत अबुर्रहमान है। क़बीला-ए-हुज़ैल से आपका ख़ानदानी ताल्लुक़ है। क़दीमुल इस्लाम सहाबा में आपका भी शुमार होता है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पहले इस्लाम लाये। निहायत आबिद व ज़ाहिद और आ़लिम व फ़ाज़िल सहाबी हैं। आपको दो हिजरतों का शर्फ़ हासिल है। हुज़ूर ﷺ के ख़ादिमे ख़ास थे। सफ़र में हमेशा आपके साथ रहते थे, इसी लिए आपको ''साहिबुन्नअ़ल वल-विसादा'' कहा जाता है। मुज्तहेदीन सहाबा की सफ़े अव्वल में आपका शुमार होता है। ख़ल्क़े कसीर ने आपसे हदीसें ली हैं। अहदे फ़ारूक़ी में कूफ़ा (इराक़) के क़ाज़ी और बैतुल माल के ख़ाज़िन थे। इब्तिदा-ए-ख़िलाफ़ते उस्मानी तक आप इसी ओहदे पर रहे, फिर मदीना शरीफ़ वापस आ गए और वहीं पर 32 हि० में इन्तेक़ाल फ़रमाया। विसाल के वक़्त उम्र मुबारक 60 बरस से कुछ ऊपर थी। जन्नतुल बक़ीअ आख़िरी आरामगाह है। (उसदुल ग़ाबाः जि० 3, पे० 394)

हदीस की शरहः हुज़ूर ﷺ के इरशादे पाक का मतलब यह है कि जो शख़्स हज्जे बैतुल्लाह को जाये वह हज व उमरा को मिलाकर अदा करे, मिलाकर करने का मतलब यह है कि वह हज्जे क़ेरान या हज्जे तमत्तोअ़ करे या बक़ौल इमाम तीबी शारह-ए-मिश्कात

के ह़ज के फ़ौरन बाद उमरा करे या उमरा के फ़ौरन बाद हज करे। तो यह मुबारक अमल मुफ़लिसी और गुनाह दोनों को इस तरह ख़त्म कर देता है, जिस तरह लोहार की भट्टी ज़ंग लगे हुए लोहे से सारा ज़ंग दूर करके लोहे को ख़ालिस कर देती है और जिस तरह सुनार की भट्टी सोने और चाँदी से मैल व कुचैल को दूर करके ख़ालिस सोने और चाँदी को अलग कर देती है।

ह़ज व उमरा मुफ़लिसी को दूर करते हैं या तो हक़ीक़त में इस तौर पर कि हाजी को मालदार बना देते हैं, अगर यह माना मुराद हो तो ह़दीस बिल्कुल ज़ाहिर है, इसलिए कि हमारे इर्द-गिर्द ऐसे बहुत से हाजी हैं जो हज करने के बाद पहले से ज़्यादा मालदार और ख़ुशहाल हो गए। या हुक्मन यानी अल्लाह पाक हाजी के रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमाता है। मालदार करने का एक मतलब यह भी है कि अल्लाह तआ़ला उसे क़नाअ़त की दौलत से नवाज़ता है। लिहाज़ा वह अगरचे फ़क़ीरों की सी ज़िन्दगी गुज़ारता है, मगर हक़ीक़त में मालदारों की तरह अपनी ज़िन्दगी से लुत्फ़ उठाता है।

गुनाहों को दूर करने से मुराद उनको मिटा देना और ख़त्म कर देना है, जैसा कि कुछ ह़दीसों में आया है कि हज करने वाला ऐसा हो जाता है जैसे कि अपनी माँ के पेट से अभी पैदा हुआ हो।

ख़्याल रहे कि गुनाह और फ़क़ीरी दूर करना अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का काम है, मगर यहाँ इस ह़दीसे पाक में उसे हज व उमरा की तरफ मन्सूब किया गया है, इसलिए कि यह दोनों इसका सबब हैं। यह बिल्कुल ऐसे ही हैं जैसे अल्लाह पाक का इरशाद है: ''उन्हें क्या बुरा लगा यही न कि अल्लाह व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया।'' (सूरह तौबाः 9, आयत 74)

यानी जो हज़रात सरकार के दामन से जुड़ गए ईमान लाकर, वह तबाह हाल थे अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें ग़नी कर दिया अपने फ़ज़्ल से, इसमें ग़नी करने की निस्बत अल्लाह ने अपनी तरफ और अपने रसूल की तरफ की, इसमें जिन लोगों को बुरा लगा वह मुनाफ़िक़ीन थे।

وليس للحجة المبرورة ثواب الا الجنة की शरह बयान करते हुए हकीमुल उम्मत हज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी अलैहिर्रह़मा फ़रमाते हैं: यह वह (ह़ज) है जो ह़लाल कमाई और सही तरीक़े से अदा किया जाये। इख़्लास के साथ और मरते दम तक कोई ऐसी हरकत न हो जिससे हज बेकार हो जाये। यानी मक़बूल का बदला सिर्फ दुनियावी ग़िज़ा और गुनाहों की माफ़ी या दोज़ख़ से निजात या तख़्फ़ीफ़े अज़ाब (अज़ाब में कमी) न होगा। बल्कि जन्नत ज़रूर मिलेगी। और लिखते हैं कि मुन्ज़िरी की रिवायत में है कि जो हज के लिये इख़्लास से जाये तो उसकी भी बख़्शिश होगी और उसकी शफ़ाअ़त भी क़ुबूल होगी और हाजी घर वापस आने तक अल्लाह की अमान में रहता है। हज में एक दिरहम ख़र्च करना दूसरे मौक़े पर दस लाख दिरहम ख़र्च करने से अफ़ज़ल है। (मिरआत शरहे मिश्कात)

हज के फ़ज़ाइल अह़ादीसे करीमा में कसरत से बयान किये गए हैं। नीचे चन्द ह़दीसें लिखी जा रही हैं:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः जिसने हज किया और रफ़्स (बुरी बात) और फिस्क़ (गुनाह) न किया तो वह गुनाहों से पाक होकर ऐसे लौटा जैसे

उस दिन अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ। (सहीह़ बुख़ारी शरीफ़ः जि० 1, पे० 512)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि रसूलल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः उमरा से उमरा तक उन गुनाहों का कफ्फ़ारा हैं जो दरमियान में हुए और मक़बूल ह़ज का सवाब जन्नत ही है। (बुख़ारी शरीफ़ः जि० 1, पे० 586)

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः हाजी अपने घर वालों में से 400 की शफ़ाअ़त करेगा और गुनाहों से ऐसे निकल जायेगा कि जैसे उस दिन अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ हो। (बुख़ारी शरीफ़ः जि० 1, पे० 314)

हज़रत इमाम तबरानी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने मुअ़जमे कबीर में एक लम्बी ह़दीस पाक ज़िक्र की है जिसमें यह है कि हज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने एक साइल के जवाब में फ़रमाया कि जब तू बैतुल ह़राम के इरादे से घर से निकलेगा तो ऊँट के हर क़दम रखने और हर क़दम उठाने पर तेरे लिये नेकी लिखी जायेगी और तेरी ख़ता मिटा दी जायेगी। और तवाफ़ के बाद दो रकअ़तें ऐसी हैं जैसे औलादे इस्माईल में कोई ग़ुलाम हो उसके आज़ाद करने का सवाब। और सफ़ा व मरवा के दरमियान दौड़ 70 ग़ुलाम आज़ाद करने की तरह है। और अ़रफ़ा के दिन ठहरने का हाल यह है कि अल्लाह पाक आसमाने दुनिया की तरफ ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और तुम्हारे साथ फ़रिश्तों पर फ़ख़्र फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता हैः मेरे बन्दे दूर दूर से प्रागन्दा (बिखरे हुए) सर मेरी रह़मत के उम्मीदवार होकर ख़ास हाज़िर हुए। अगर तुम्हारे गुनाह रेत की गिनती और बारिश के क़तरों और समुन्द्र की झाग बराबर हों तो मैं सबको बख़्श दूँगा। मेरे बन्दो! वापस जाओ तुम्हारी मग़फ़िरत हो गई और उसकी भी जिसकी तुम शफ़ाअ़त करो।

और जमरों पर रमी करने (शैतान को कंकड़ी मारने) में हर कंकड़ी पर एक ऐसा कबीरा गुनाह मिटा दिया जायेगा जो हलाक करने वाला है और क़ुर्बानी करना तेरे रब के हुज़ूर तेरे लिये ज़ख़ीरा है और सर मुण्डाने में हर बाल के बदले में नेकी लिखी जायेगी और एक गुनाह मिटाया जायेगा, उसके बाद ख़ाना-ए-काबा के तवाफ़ का हाल यह है कि तू तवाफ कर रहा है और तेरे लिये कुछ गुनाह नहीं है। एक फ़रिश्ता आयेगा और तेरे शानों (कंधों) के दरमियान हाथ रखकर कहेगा। ज़माना-ए-आइन्दा में अमल कर और ज़माना गुज़िश्ता में जो कुछ था माफ कर दिया गया। (अल तरग़ीब वल-तरहीब, किताबुल ह़ज व उमराः जि० 2 पे० 110)

इमाम अबू याअ़ला हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः जो हज के लिये निकला और मर गया। क़यामत तक उसके लिये हज करने का सवाब लिखा जायेगा और जो जिहाद में गया और शहीद हो गया उसके लिये क़यामत तक ग़ाज़ी का सवाब लिखा जायेगा। (मस्नदे अबू यअ़लाः जि० 5, पे० 441)

अल्लाह से दुआ़ है कि अपने ह़बीब ﷺ के सदक़े में मुझे और तमाम ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों को अपने मुक़द्दस घर का ह़ाजी बनायें और अपने ह़बीब के मुबारक रौज़े के दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाये। आमीन!

★★★

★ tauheedahmad92@gmail.com

बर्रे सग़ीर के बनाम मुस्लिम फ़िरक़े

क़िस्त (14)

दूसरे फ़िरक़ों की तरह शिया भी शुरूआ़त में एक ही फ़िरक़ा था, मगर वक़्त गुज़रने के साथ उसके अन्दर भी छोटे-छोटे फ़िरक़े बनने लगे, इस तरह शियों के कई फ़िरक़े हो गए, जिनकी पूरी तादाद 32 या उससे ज़्यादा बताई जाती है। इनमे से बर्रे सग़ीर मे पाये जाने वाले चन्द बड़े फ़िरक़े और उनकी ज़ैली शाखें यह हैं:

(1) इमामिया फ़िरक़ाः शियों का सबसे बड़ा मज़हबी गिरोह है। यह कहते हैं कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की इमामत बिल्कुल साफ़ है, उन्होंने बा-इत्तेफ़ाक़ सह़ाबा की तकफ़ीर की है और इमामत हज़रत जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु तक पहुँचाई है। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ के बाद मरातिबे इमामत में उनके दरमियान इख़्तिलाफ़ है।

इमामिया की कुल 8 शाखें हैं: 1. अफ़ज़हिया, 2. मुफ़ज़्ज़लिया, 3. ममतूरिया, 4. मूसविया, 5. रजईया, 6. अह़मदिया, 7. इस्ना अशरिया, (जब इमामिया बोला जाता है तो ज़ेहन पहले इन्हीं की तरफ जाता है), 8. जाफ़रिया।

(2) ज़ैदिया फ़िरक़ाः यह लोग हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ़ली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के बाद उनके फ़रज़न्द हज़रत ज़ैद बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की इमामत के क़ाइल हैं। शियों के तमाम फ़िरक़ों में ज़ैदिया अहले सुन्नत के ज़्यादा क़रीब था। इनके अक़ीदे के मुताबिक़ अइम्मा आम इन्सान ही होते हैं, मगर हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ के बाद सबसे अफ़ज़ल हैं। यह फ़िरक़ा सह़ाबा में से किसी की तकफ़ीर नहीं करता और न तबर्रा (बुरा, भला कहना) करता है। यह लोग अहले सुन्नत की तरह वज़ू में पाँव धुलने के क़ाइल हैं और निकाह-ए-मुतआ़ को ह़राम समझते हैं। इनकी कुल तीन शाखें हैं। 1. जारूदिया, 2. सुलैमानिया, 3. तबीरिया।

(3) इस्माईलिया फ़िरक़ाः शियों का यह फ़िरक़ा हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की इमामत तक इस्ना अशरिया से इत्तेफ़ाक़ रखता है, मगर हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ की वफ़ात के बाद उनके बड़े बेटे हज़रत इस्माईल बिन जाफ़र को अपना इमाम मानता है। जबकि फ़िरक़ा इस्ना अशरिया मूसा बिन जाफ़र की इमामत को बरहक़ मानता है। ख़ुलासा यह कि हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ की इमामत तक तो इत्तेफ़ाक़ रहा, मगर उनकी वफ़ात के बाद उनके जानशीन के सिलसिले में इख़्तिलाफ़ हो गया, लिहाज़ा जिन लोगों ने उनके बेटे हज़रत इस्माईल को इमाम माना वह ''इस्माईली'' कहलाये और जिन लोगों ने हज़रत मूसा काज़िम को इमाम माना वह ''इस्ना अशरी'' कहलाये। इस्माईलियों के सात अल्क़ाब हैं।

1. बातिनियाः इस लक़ब की वजह यह है कि यह हज़रात ज़ाहिर-ए-क़ुरआ़न को छोड़कर उसका बातिन माना लेने के क़ाइल हैं।

2. क़रामताः यह नाम इस सबब से पड़ा कि पहला शख़्स जिसने लोगों को अपने मज़हब की दावत

दी वह हम्दान क़रमत है।

3. हुरमियाः इनका यह लक़ब इसलिए हुआ कि वह मुहर्रमात (हराम की हुई चीज़) और महारिम को हलाल जानते हैं।

4. सबईयाः यह लक़ब इसलिए हुआ कि यह कहते हैं कि अहकामे शरीअत बयान करने वाले अम्बिया सात हैं। हज़रत आदम, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा, हज़रत मुहम्मद और हज़रत इमा मेहदी अलैहिमस्सलातु वस्सलाम। हज़रत इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु अन्हु सातवें रसूल हैं।

5. इस्माईलियाः इन्होंने हज़रत जाफ़र सादिक़ के बड़े बेटे इस्माईल के लिये इमामत साबित की। इसलिए इस्माईलिया कहलाये या इस सबब से कि उनका अक़ीदा मुहम्मद बिन इस्माईल की तरफ मन्सूब है।

(4) बोहरा (मुस्तअलिया) फ़िरक़ाः शिया फ़िरक़ा इस्माईलियों की शाख़ ''दावत तीबी'' के पैरोकार हैं। यह उमूमन बोहरा कहलाते हैं। यह तिजारत पेशा हैं और आम तौर से शहरों में रहते हैं। बेशतर बोहरे गुजरात, मुम्बई, बुरहानपुर, मालवा, राजपुताना और कराची में रहते हैं। जबकि इनका दाई (बड़ा मुबल्लिग़) पहले शहर सूरत (गुजरात) में रहता था और अब शहर मुम्बई (महाराष्ट्र) में रहता है। ख़्याल रहे कि बोहरों के दाई ''बुरहानुद्दीन'' के इन्तेक़ाल के बाद इनके यहाँ भी दो फ़िरक़े हो गए। 1. दाऊदी बोहरा, 2. सुलैमानी बोहराः मगर इनका इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ इलाक़ाई है। दाऊदी बोहरों के दाई हिन्दुस्तानी होते हैं और गुजरात के शहर सूरत उनका मरकज़ है। (अब मुम्बई हो गया है) जबकि सुलैमानी बोहरों के दाई (लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाने वाला) यमन में रहते हैं।

(5) आग़ाख़ानी फ़िरक़ाः यह फ़िरक़ा भी इस्माईलियों की एक शाख़ है और '' सर आगा ख़ान'' की इबादत करता है, इनके अन्दर हुलूले ख़ुदाई का अक़ीदा रखता है, इनके अक़ीदे के मुताबिक़ अल्लाह का नूर हज़रत अ़ली में चला गया और हज़रत अ़ली का नूर उनके हर इमाम में आता रहा, उनके हिसाब से ''प्रिंस आग़ा ख़ान'' इस वक़्त के अ़ली हैं और जब यह लोग ''या अ़ली मदद'' कहते हैं तो उनकी मुराद हज़रत इमाम अ़ली नहीं होते बल्कि प्रिंस करीम आग़ा ख़ान होते हैं। यह मआ़दे जिस्मानी के मुन्किर हैं, यानी इनके नज़दीक मैदाने हश्र, पुल सिरात, जन्नत व जहन्नम का कोई ज़ाहिरी वजूद नहीं, बल्कि यह किनाया है और इनका अक़ीदा है कि हम इस जिस्म के साथ हश्र के दिन नहीं उठाये जायेंगे।

फ़िक़्हे जाफ़रियाः जिस तरह अहले सुन्नत के दरमियान मसाइले शरइया के इस्तिमबात और इस्तिख़राज के लिये चार फ़िक़्ह (फ़िक़्हे हन्फ़ी, फ़िक़्हे शाफ़ई, फ़िक़्हे मालिकी, फ़िक़्हे हम्बली) राइज हैं, इसी तरह शिया के दरमियान एक फ़िक़्ह राइज है जिसे ''फ़िक़्हे जाफ़रिया'' कहते हैं। शियों का मानना है कि फ़िक़्हे जाफ़रिया में मज़कूर मसाइल इमाम जाफ़र सादिक़ के इज्तिहाद और आपके निकाले हुए हैं। फ़िक़्हे जाफ़रिया में मज़कूर बहुत से मसाइल अइम्मा-ए-अहले सुन्नत के निकाले हुए मसाइल से अलग हैं। शियों के दरमियान इबादात व मामलात से मुताल्लिक़ कुछ मसाइल जिन्हें वह फ़िक़्हे जाफ़रिया से ताबीर करते हैं बतौर नमूना पेशे ख़िदमत हैं:

शियों का कलमाः शिया हज़रात का कलमा सुन्नी मुसलमानों के कलमे से ज़रा मुख़्तलिफ़ है। उनका

कलमा यह है: (लाइलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह अलीयुन वलीयुल्लाह-वसीयों रसूलिल्लाह, व ख़लीफ़तुहू बिला फ़स्लिन) जबकि अहले सुन्नत के नज़दीक इस्लाम का कलिमा सिर्फ़ لا اله الا الله محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم है।

शिया वज़ू का तरीक़ाः फ़िक़्हे जाफ़रिया के बक़ौल वज़ू को तर्तीबी और इरतिमासी दोनों तरीक़ों से अन्जाम दिया जा सकता है। तर्तिबी वज़ू में पहले चेहरा, फिर दायाँ हाथ और उसके बाद बायाँ हाथ धोया जाता है, फिर सर का मसह किया जाता है और उसके बाद दायाँ पाँव फिर बायाँ पाँव का मसह किया जाता है और इरतिमासी वुज़ू में चेहरा और हाथों को पानी में डुबोया जाता है, फिर सर और पाँव का मसह किया जाता है।

यानी फ़िक़्हे जाफ़रिया यह कहता है कि वुज़ू में चेहरा और हाथ धुला जायेगा और सर और पाँव का मसह किया जायेगा। जबकि फ़िक़्ह ह़न्फ़ी, शाफ़ई, मालिकी और हम्बली चारों में पाँव के धुलने को फ़र्ज़ क़रार दिया गया है, लिहाज़ा अगर कोई पाँव को धुलने के बजाये मसह करे तो अइम्मा-ए-अरबआ के नज़दीक उसका वुज़ू नहीं होगा।

शिया अज़ानः अहले सुन्नत की अज़ान के मुक़ाबले में शियों की अज़ान में कलेमाते अज़ान ज़्यादा हैं। शिया हज़रात اشهد ان محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم के बाद اشهد ان عليا حجة الله और اشهد ان عليا ولى الله का इज़ाफ़ा करते हैं। यूँही ''हय्या अलल-फ़लाह'' के बाद ''हय्या अला ख़ैरिल अमल'' का इज़ाफ़ा करते हैं। जबकि अहले सुन्नत इन अल्फ़ाज़ को अज़ान का ह़िस्सा नहीं मानते हैं। इसलिए कि हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ह़दीस (जो अज़ान के बाब में असल की ह़ैसियत रखती है) इसमें यह कलेमात नहीं हैं।

शियों की नमाज़ः शिया हज़रात के नज़दीक कुछ नमाज़ें वाजिब हैं, कुछ मुस्तह़ब हैं।

वाजिब नमाज़ेंः वाजिब नमाज़े यह हैं: यौमिय्या नमाज़ें, नमाज़े जुमा, नमाज़े ईद, नमाज़े आयात और नमाज़े मय्यत हैं।

मुस्तह़ब नमाज़ेंः नमाज़े तहज्जुद, नमाज़े ग़फ़ीलह, नमाज़े जाफ़रे तैय्यार, नमाज़े इमामे ज़माना, नमाज़े इस्तिस्क़ा, नमाज़े शबे क़द्र, नमाज़े वहशत, नमाज़े शुक्र, नमाज़े इस्तेग़ासा वग़ैरह हैं।

यौमिया नमाज़े अहले सुन्नत की तरह 5 हैं। नमाज़े फ़ज्र, नमाज़े ज़ोहर, नमाज़े अस्र, नमाज़े मग़रिब और नमाज़े इशा अलबत्ता इन नमाज़ों की तादाद और रकआ़त अहले सुन्नत से ज़रा अलग हैं।

फ़िक़्हे जाफ़रिया के मुताबिक़ नमाज़े फ़ज्र की रकआ़त 2 हैं और उसका वक़्त तुलूअ़े फ़ज्र से तुलूअ़-ए-आफ़ताब तक है।

नमाज़े ज़ोहर की रकआ़त की तादाद 4 हैं और उसका वक़्त ज़वाले आफ़ताब से लेकर ग़ुरूबे आफ़ताब से पहले तक है।

नमाज़े असर की रकआ़त 4 हैं और उसका वक़्त ज़ोहर की नमाज़ के बाद 4 रकआ़त नमाज़े ज़ोहर के बराबर वक़्त गुज़रने के बाद शुरू होता है और ग़ुरूबे आफ़ताब तक रहता है।

नमाज़े मग़रिब की रकआ़त 3 हैं और उसका वक़्त ग़ुरूबे आफ़ताब के बाद से उस वक़्त तक पढ़ी जा सकती है जब तक कि शरई निस्फ़ शब से पहले नमाज़े इशा की 4 रकअ़तों जितना वक़्त बाक़ी हो।

नमाज़े इशा के रकआ़त की तादाद 4 हैं जो कि अज़ाने मग़रिब से बाक़ी पेज न० 16 पर देखें!

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

क़िस्त (14)

क़ारेईने किराम! पिछले शुमारे में औक़ाते नमाज़ के तफ़सील से बयान किया गया था। इस शुमारे में मर्द और औरत की नमाज़ का तरीक़ा अलग-अलग बयान किया जा रहा है ताकि समझने में आसानी हो।

मर्दों की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ाः नमाज़ पढ़ने वाला मर्द बा-वज़ू क़िब्ला की तरफ चेहरा करके दोनों पाँव के पंजों में चार ऊँगली की दूरी बना कर खड़ा हो और दोनों हाथों को कानों तक इस तरह ले जाये कि अँगूठे कान की लौ (कान का नर्म हिस्सा) से छू जायें और उँगलियाँ न मिली हुई रखे, न ख़ूब खुली हुई हों, बल्कि अपनी हालत पर हों और हथेलियाँ क़िब्ला की तरफ़ हों। नियत करके अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ नीचे लाये और नाफ़ के नीचे यूँ बाँध ले कि दाहिनी हथेली की गुद्दी बायीं कलाई के सिरे पर हो और बीच की तीन उँगलियाँ बायीं कलाई की पुश्त (पीठ) पर और अँगुठा और छँगुलियाँ कलाई के ऊपर नीचे हों और सना पढेः

سبحانک اللّٰھم و بحمدک و تبارک اسمک
و تعالیٰ جدک ولا اله غیرک

फिर अऊज़ुबिल्लाह पढ़े और फिर बिस्मिल्लाह कहे, फिर सूरह फ़ातिहा यानी अलहम्दुलिल्लाह पढ़े और ख़त्म पर आमीन धीरे कहे, उसके बाद कोई सूरत या तीन आयतें पढ़े या एक आयत जो तीन आयतों के बराबर हो। अब अल्लाहु अकबर कहता हुआ रूकूअ़ में जाये और घुटनों को हाथ से पकड़े इस तरह कि हथेलियाँ घुटने पर हों और उँगलियाँ ख़ूब फैली हुई हो, न कि सब उँगलियाँ एक तरफ हों और न यूँ कि चार उँगलियाँ एक तरफ़ और एक तरफ़ सिर्फ अँगूठा और पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर हो ऊँचा नीचा न हो और कम से कम तीन बार ''सुब्हाना रब्बी यल-अज़ीम'' कहे, फिर ''समीअल्लाहु लेमन ह़मीदा'' कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाये और अकेले हो तो ''रब्बना लकल-ह़म्द'' कहे। फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दे में जाये कि पहले घुटने ज़मीन पर रखे फिर दोनों हाथों के दरमियान बीच में सर रखे न यूँ कि सिर्फ़ पेशानी छू जाये और नाक की नोक लग जाये, बल्कि इस तरह कि पेशानी की हड्डी जम जाये और बाज़ुओं की करवटो और पीठ की दोनों पिण्डलियों से अलग रखे और दोनों पाँव की सब उँगलियों के पीठ क़िब्ला की तरफ़ जमे हों और हथेलियाँ बिछी हों और उँगलियाँ क़िब्ले की तरफ हों और कम से कम तीन बार ''सुब्ह़ाना रब्बी-यल-आला'' कहे फिर सर उठाये, फिर हाथ और दाहिना क़दम खड़ा करे उसकी उँगलियाँ क़िब्ले रूख़ करके और बायाँ क़दम बिछाकर ख़ूब सीधा बैठ जाये और हथेलियाँ रानों पर घुटने के पास रखे कि दोनों हाथों की उँगलियाँ क़िब्ला की तरफ हों, फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दे में जाये और इस तरह सज्दा करे, फिर सर उठाये, फिर हाथ को घुटने पर रखकर टखनों के बल खड़ा हो जाये, अब बिस्मिल्लाह पढ़कर किराअत शुरू कर दे, फिर इसी तरह रूकूअ़ और सज्दे करे दाहिना क़दम खड़ा करे, बायाँ क़दम बिछाकर बैठ जाये और ''अत्तहिय्यात'' पढ़े।

अगर दो से ज़्यादा रकअ़तें पढ़नी हों तो

अतहिय्यात के बाद सीधा खड़ा हो पहली दो रकअ़तों की तरह दो रकअ़तें और पढ़े, मगर फ़र्ज़ की इन रकअ़तों में सूरह फ़ातिहा के साथ सूरत मिलाना ज़रूरी नहीं, हाँ सुन्नत और नफ़्ल, वित्र की इन दो के बाद वाली रकअ़तों में भी सूरत मिलाना ज़रूरी है। अब पिछला कअ़दा जिसके बाद नमाज़ ख़त्म करना है, उसमें (अत्तहिय्यात) के बाद ''दुरूद शरीफ़'' पढ़े।

और उसके बाद दुआ़-ए-मासूरा पढ़े। फिर दाहिने शाने की तरफ मुँह करके ''अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह'' कहे फिर बायें शाने की तरफ़।

औरतों की नमाज़ का तरीक़ाः बा-वज़ू क़िब्ला की तरफ़ इस तरह खड़ी हो कि दोनों पाँव के पंजों में चार उँगली का फ़ासला रहे और दोनों हाथ कंधों तक उठाये और चादर से बाहर न निकाले। हाथों की उँगलियाँ न मिली हुई हों न ख़ूब खुली, बल्कि अपनी हालत पर (Normal) रखे और हथेलियाँ क़िब्ला की तरफ हों, निगाह सज्दा की जगह पर हो। अब जो नमाज़ पढ़नी है उसकी नियत यानी दिल में उसका पक्का इरादा करे, साथ ही ज़बान से भी कह ले कि यह ज़्यादा अच्छा है। अब तकबीरे तहरीमा यानी अल्लाहु अकबर कहते हुए हाथ नीचे लाये और उल्टी हथेली सीने पर पिस्तान के नीचे रखकर उसके ऊपर सीधी हथेली रखे। फिर सना पढ़े और अऊज़ुबिल्लाह पढ़े, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े, फिर मुकम्मल सूरह फ़ातिहा पढ़े, सूरह फ़ातिहा ख़त्म करके आहिस्ता से आमीन कहे। फिर तीन आयात या एक बड़ी आयत जो तीन छोटी आयतों के बराबर हो या कोई सूरह मसलन सूरह इख़्लास पढ़े। अल्लाहु अकबर कहते हुए रूकूअ़ में जाये। रूकूअ़ में थोड़ा झुके यानी इतना कि घुटनों पर हाथ रख दे ज़ोर न दे और घुटनों को न पकड़े और उँगलियाँ मिली हुई और पाँव झुके हुए रखे, मर्दों की तरह ख़ूब सीधा न करे। कम से कम तीन बार रूकूअ़ की तस्बीह यानी ''सुब्हाना रब्बी यल अ़ज़ीम'' कहे। फिर ''समीअ़ल्लाहु लेमन ह़मीदा'' कहते हुए बिल्कुल सीधी खड़ी हो जाये, इस खड़े होने को क़ौमा कहते हैं। इसके बाद कहे ''अल्लाहुम्मा रब्बना वलकल ह़म्द'' फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए इस तरह सज्दे में जाये कि पहले घुटने ज़मीन पर रखे फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में इस तरह सर रखे कि पहले नाक फिर पेशानी और यह ख़ास ख़्याल रखे कि नाक की सिर्फ़ नोक नहीं बल्कि हड्डी लगे और पेशानी ज़मीन पर जम जाये, निगाह नाक पर रहे, सज्दा सिमट करके करे यानी बाज़ू करवटों से, पेट रान से, रान पिण्डलियों से और पिण्डलियाँ ज़मीन से मिला दे और दोनों पाँव पीछे निकाल दे। अब कम से कम तीन बार सज्दे की तस्बीह यानी ''सुब्हाना रब्बी यल-आला'' पढ़े। फिर सर उसी तरह उठाये कि पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथ उठे। दोनों पाँव सीधी तरफ़ निकाल दे और उल्टी सुरीन पर बैठे और सीधा हाथ सीधी रान के बीच में और उल्टा हाथ उल्टी रान के बीच में रखे। दोनों सज्दों के बीच बैठने को जलसा कहते हैं। फिर कम से कम एक बार ''सुब्हानल्लाह'' कहने की मिक़दार ठहरे, फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए पहले सज्दे ही की तरह दूसरा सज्दा करे। अब उसी तरह पहले सर उठाये फिर हाथों को घुटनों पर रखकर पंजों के बल खड़ी हो जाये। उठते वक़्त बग़ैर मजबूरी ज़मीन पर हाथ से टेक न लगाये। यह आपकी एक रकअ़त पूरी हुई। अब दूसरी रकअत में बिस्मिल्लाह पढ़कर अलह़म्दुल्लिाह और सूरह पढ़े और पहले की तरह रूकूअ और सज्दे करे दूसरे सज्दे से सर उठाने के बाद दोनों पाँव सीधी तरफ निकाल दे

और उल्टी सुरीन पर बैठे और सीधा हाथ सीधी रान के बीच में और उल्टा हाथ उल्टी रान के बीच में रखे। दो रकअत के दूसरे सज्दे के बाद बैठना कअ़दा कहलाता है। अब कअ़दा में तशह्हुद (अत्तहिय्यात) पढ़े। जब तशह्हुद में लफ़्ज़े ''ला' के क़रीब पहुँचे तो सीधे हाथ के बीच की उँगली और अँगूठे का ह़ल्क़ा बना ले और छुंगलियाँ (यानी छोटी उँगली) और बिन्सर यानी उसके बराबर वाली उँगली को हथेली से मिला दे और (अशहदू अल के फ़ौरन बाद) लफ़्ज़े ला कहते ही कलमे की उँगली उठाये, मगर उसको इधर उधर न हिलाये और लफ़्जे इल्ला पर उँगली गिरा दे और फ़ौरन सब उँगलियाँ सीधी कर ले। अब अगर दो से ज़्यादा रकअ़तें पढ़नी हैं तो अल्लाहु अकबर कहती हुई खड़ी हो जायें। अगर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रही हैं तो तीसरी और चौथी रकअत के क़याम में बिस्मिल्लाह और अलह़म्दुलिल्लाह शरीफ पढ़े। सूरह मिलाने की ज़रूरत नहीं बाक़ी काम इसी तरह करे और नमाज़ अगर सुन्नत या नफ़्ल हों तो सूरह फ़ातिहा के बाद सूरत भी मिलाये, फिर चार रकअ़तें पूरी करके आख़िरी कअ़दे में तशह्हुद के बाद दुरूदे इब्राहीमी पढ़े और फिर कोई सी दुआ़-ए-मासूरा (कुरआ़न व ह़दीस की दुआ़ को दुआ़-ए-मासूरा कहते हैं) पढ़े, फिर नमाज़ ख़त्म करने के लिये पहले दायें (सीधे) कंधे की तरफ मुँह करके अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह कहे और इसी तरह बायीं (उल्टे) तरफ़। अब नमाज ख़त्म हुई। (जारी...) ★★★

★ रिसर्च ऐसोसिऐट, (ABIRTI), अलीगढ़, (यूपी)

पेज न० 13 का बाक़ी! नमाज़े मग़रिब जितना वक़्त गुज़रने के बाद शरई निस्फ़ शब (आधी रात) तक पढ़ी जा सकती है।

शिया नमाज़ पढ़ने का तरीक़ाः शियों की नमाज़ का तरीक़ा सुन्नियों के तरीक़ा-ए-नमाज़ से ज़रा अलग है। यह लोग इरसाल करके नमाज़ पढ़ते हैं यानी क़याम की ह़ालत में दोनों हाथ छोड़े रखते हैं, उनके यहाँ क़याम की ह़ालत में हाथ बांधने से नमाज़े बातिल हो जाती है। इसी तरह उनके यहाँ रूकअ़ व सुजूद में रफ़अ़फ़ यदैन भी होता है। और रूकूअ़ व सुजूद की तस्बीह़ात के बाद اللهم صل علىٰ محمد و آل محمد भी पढ़ते हैं। हर नमाज़ की दूसरी रकअ़त में क़िराअत के बाद हाथ उठाकर दुआ़-ए-क़ुनूत पढ़ते हैं, तीसरी और चौथी रकअत में किराअत नहीं करते हैं, उसकी जगह पर तस्बीह़ाते अरबआ़ पढ़ते हैं। तस्बीह़ाते अरबआ़ यह हैः

سبحٰن اللّٰه و الحمد للّٰه و لا اله الا اللّٰه و اللّٰه اكبر

फ़िक़्हे जाफ़रिया के मुताबिक़ सज्दा सह़ी होने के लिये ज़रूरी है कि सज्दा ज़मीन की क़िस्म पर हो या ज़मीन से उगने वाली उन घासों और पौधों पर होगा जो खाने और पहने के इस्तेमाल में न हों। जैसेः मिट्टी, रेत, पत्थर, लकड़ी, पेड़ की न खाई जान वाली पत्तियों वग़ैरह। शीया हज़रात आम तौर से तुरबते हुसैनी पर सज्दा करते हैं। तुरबते हुसैनी वह मिट्टी है जो हज़रत इमाम हुसैन के क़ब्रे मुबारक से ली जाती है।

अहले सुन्नत और शिया के अक़ाइद व आमाल और नज़रियात में बहुत ज़्यादा फ़र्क़ है। इस बारे में मुकम्मल मालूमात के लिये गुन्यतुत तालेबीन, तोह़फ़ा-ए-इस्ना अशरिया, रद्दुर्रफ़ज़ा, अलअदिल्लतुत ताइ़ना, हुदूसुल फ़ितन वग़ैरह उलमा-ए-अहले सुन्नत की किताबों का मुतालआ़ फ़रमायें। यह मज़मून इन्हीं किताबों की मदद से तय्यार किया गया है। ★★★

★ tauheedahmad92@gmail.com

कुर्बानी की हिकमतें और बरकतें

कुर्बानी एक अज़ीम इबादत है। अबुल अम्बिया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत व यादगार है। इश्क़ व सरमस्ती का नमूना है। जाँ निसारी और वफ़ा शेआ़री का एक उनवान है। कुर्बानी इश्क़े ख़ुदा की दबी चिंगारी को शोअ़ला ज़न करती है। जूद व सख़ा और ग़ुरबा परवरी जैसी अज़ीम सिफ़ात से आरास्ता करती है। रिश्तेदारों के दरमियान उल्फ़त व मुहब्बत का बीज बोती है। ख़ुद ग़र्ज़ी, नफ़्स परस्ती, लालच और कंजूसी जैसी आ़दतों के लिये दवा का काम करती है। ख़ुदा-ए-ज़ुल जलाल के मुख़्तारे कुल और क़ादिरे मुतलक़ होने का अक़ीदा ज़ेहन व दिमाग़ में नक़्श करती है। इबादत व बन्दगी और फ़रमाबरदारी का सबक़ सिखाती है। और हुक्मे ख़ुदा के सामने सर झुकाने के जज़्बे को मज़बूत करती है।

गर्ज़ कि कुर्बानी एक ऐसी इबादत है जिसके दामन में इन्सानों के लिये नसीहत और पाकीज़गी के राज़ छिपे हैं। मौजूदा दौर में आम इन्सानों की नज़र सिर्फ यहीं तक पहुँचती है कि बकरीद के मौक़े पर मालदार और साहिबे हैसियत मुसलमान मख़्सूस जानवर के गले पर छुरी चला देते हैं और उसका गोश्त खा जाते हैं। लेकिन वह लोग कि जिन पर अल्लाह तआ़ला ने करम फ़रमाया, उनकी निगाहें कुर्बानी में छिपे हुए राज़ तक पहुँचती है और यही लोग इन हक़ीक़तों को जानकर अपने रब का कुर्ब हासिल करते हैं।

अब कुर्बानी का फ़लसफ़ा और उसमें छिपी हुई हिकमतों को बयान किया जायेगा।

सबसे पहले ज़िल हिज्जा के पहले दस दिनों में पोशिदा हिकमत से आँखें ठण्डी कीजिए। ह़दीस शरीफ़ में है कि ''जिसने ज़िल हिज्जा का चाँद देख लिया और उसका इरादा कुर्बानी करने का है तो जब तक कुर्बानी न करे, बाल और नाख़ुनों से न ले यानी न तरशवाये।'' (तिर्मिज़ी शरीफ़ः ह़दीस 1528, जि० 3, पे० 117)

शरीअ़त का यह हुक्म वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब है और वह भी उस शख़्स के लिये जिसने नाख़ुन और बालों की सफ़ाई चालीस दिन अन्दर की हों और जिसके 40 दिन हो चुके उस पर तराशना या तरशवाना वाजिब है अगरचे उस शख़्स पर कुर्बानी वाजिब हो।

बाल और नाख़ुन न तरशवाने मे हिकमतः इसमें एक बहुत ही अहम हिकमत पोशिदा है वह यह कि कुर्बानी करने वाले दस ज़िल ह़िज्जा तक हजामत न बनवायें तो वह लोग जिन्हें दाढ़ी मुण्डाने की लत पड़ी होती है शायद वह इस नेकी की बरकत से दाढ़ी मुण्डाने के गुनाह से हमेशा के लिये बाज़ आ जायें, क्योंकि जिस शख़्स को रोज़ाना सुबह उठते ही चेहरे पर उस्तरा चलाने की आदत हो और वह लगातार दस दिन तक उस गुनाह से बाज़ रहे, दिल में बार-बार ख़्वाहिश उठने के बावजूद गुनाह के क़रीब न जाये तो कुछ दूर नहीं कि अल्लाह की रह़मत उस बन्दे की मदद फ़रमाये और वह उस गुनाह को हमेशा के लिये छोड़ दे। लेकिन जो सच्चे दिल से नहीं बल्कि मुआ़शरे को दिखने के लिये रूके

रहते हैं और दाढ़ी नहीं मुण्डाते उन्हें अल्लाह तौफ़ीक़ से भी महरूम रखता है, फिर वह क़ुर्बानी करने बल्कि हज कर लेने के बावजूद भी उस गुनाह से बाज़ नहीं आते। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ से नवाज़े।

इसमें एक दूसरी हिकमत यह भी है कि क़ुर्बानी दसवीं ज़िल हिज्जा की सुबह से से बारहवीं की शाम तक करनी है, जिसका बुनियादी मक़सद और क़ुर्बानी की असल रूह यह है कि अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में मुसलमान अपनी तमाम ख़्वाहिशात को एक एक करके ज़बह कर दे, लेकिन छुरी चलाते वक़्त तमाम ख़्वाहिशाते नफ़्सानी पर भी छुरी चला देना आसान न था, इसलिए अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने दस रोज़ पहले से ही नफ़्स की क़ुर्बानी में लगा दिया कि सर के बाल भी जब बढ़कर कानों तक लटकने लगते हैं तो चेहरे की ख़ूबसूरती बुझ जाती है, लेकिन जो मुसलमान बाल कटाने की ख़्वाहिश को दस रोज़ तक क़ुर्बान करता है, दाढ़ी मुण्डाने वाला हर दिन अपनी ख़्वाहिश की क़ुर्बानी देता है तो उसके लिये जानवर ज़बह करते वक़्त नफ़्से अम्मारा को ज़बह करना मुश्किल न होगा।

क़ुर्बानी क्या है?: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अर्ज़ कीः या रसूलल्लाह! यह क़ुर्बानियाँ क्या हैं? फ़रमायाः ''तुम्हारे बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है।'' लोगों ने अर्ज़ कीः या रसूलल्लाह! हमारे लिये इसमें क्या सवाब है? फ़रमायाः ''हर बाल के बदले नेकी है।'' अर्ज़ कीः ऊन का क्या हुक्म है? फ़रमायाः ''ऊन के हर बाल के बदले में नेकी है।'' (सुननू इब्ने माजाः जि० 3, पे० 531)

क़ुर्बानी के दिनों में हक़ीक़ते क़ुर्बानी का सबक़ः फ़रमाने रिसाल है कि क़ुर्बानी सुन्नते इब्राहीमी है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस क़ुर्बानी का ज़िक्र क़ुरआ़ने करीम की सूरह अल-साफ़्फ़ात की आयत (102—110) में मौजूद है।

ख़ुलासा यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र 80 या 84 साल हो चुकी थी। ताक़त व क़ुव्वत की फ़स्ले बहार रूख़सत हो गई थी। दूसरी तरफ आपकी बीवी हज़रत हाजरा बड़ी उम्र की और बांझ थीं और अब औलाद होने की उम्मीद नहीं थी। ऐसे वक़्त में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपनी क़ुदरत से उनको एक बेटा अता किया। जब वह कुछ बड़ा हुआ और वह वक़्त आ गया कि अपने माँ-बाप का सहारा बने, ना-मुवाफ़िक़ हालात में उनका मददगार हो। अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़्वाब में लाडले बेटे को क़ुर्बान करने का हुक्म दिया। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को अल्लाह के हुक्म से आगाह किया और राय जाननी चाहिए। बेटे ने ख़्वाब सुनते ही अर्ज़ कियाः अब्बा जान! आप तामीले हुक्म में ताख़ीर न करें, मैं ज़बह होने के लिये तैयार हूँ।''

ज़रा तसव्वुर कीजिए! उस वक़्त बाप के दिलों की कैफियत क्या रही होगी? एक तरफ बाप के दिल में बेटे की फ़ितरी मुहब्बत, दूसरी तरफ उसी बेटे की क़ुर्बानी का हुक्मे ख़ुदा वन्दी। बेटा भी कैसा फ़रमाँबरदार कि उसने भी ज़रा देर नहीं की, बल्कि ख़ुशी-ख़ुशी अपने वालिद के ख़्वाब की ताबीर बनने के लिये राज़ी हो गया।

ये फ़ैज़ाने नज़र था या कि मकतब की करामत थी
सिखाये किसने इस्माईल को आदाबे फ़रज़न्दी

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि बेटे को ज़बह

करने का हुक्म फ़रिश्तों के ज़रिये भी भेजा जा सकता है, जबकि आम तौर से फ़रिश्ते ही पैग़ामे इलाही अम्बिया-ए-किराम तक पहुँचाने का ज़रिया होते हैं, लेकिन ख़्वाब में ज़बह का मन्ज़र दिखाये जाने के पीछे ब-ज़ाहिर यह हिकमत थी कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की फ़रमाबरदारी अपने कमाल के साथ ज़ाहिर हो, क्योंकि ख़्वाब में जो हुक्म दिया जाता है उसमें इन्सान के लिये तावीलात की बड़ी गुंजाइश होती है, लेकिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने किसी तरह की कोई तावील नहीं की, बल्कि हुक्मे इलाही के आगे सर झुका दिया और अपने प्यारे बेटे को क़ुर्बान करने के लिये तैयार हो गए और उस बेटे के गले पर छुरी चला दी, जो कि सालों साल की दुआओं के बाद आया था, यह मन्ज़र देखकर आसमान व ज़मीन लरज़ गए, काएनात का ज़र्रा ज़र्रा बे क़रार हो गया। आख़िर रह़मते हक़ जोश में आई और हज़रत इस्माईल की जगह दुम्बा ज़बह करने का हुक्म हुआ।

आम आदमी की निगाहों में तो उन्होंने अपने फ़रज़न्द के गले पर छुरी चलाई बस। लेकिन हक़ीक़त यह है कि वह अपनी तमन्नाओ और आरज़ुओं को सिर्फ एक इशारा-ए-ख़ुदा वन्दी पर क़ुर्बान करने के लिये तैयार हो गए थे, अपनी ख़्वाहिशात को सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी पाने के लिये कुचलने पर आमादा हो गए थे।

अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस बे-मिसाल क़ुर्बानी का ईनाम यूँ दिया कि उम्मते मुस्लिमा के हर साह़िबे इस्तेताअ़त इन्सान पर बकरीद के मौक़े पर सुन्नते इब्राहीमी के अदा करने को वाजिब क़रार दिया और क़यामत तक के लिये इस अमल को ज़िन्दा व जावेद बना दिया।

यहाँ एक और प्यारा नुक्ता है वह यह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अल्लाह तआ़ला से मुह़ब्बत हक़ीक़ी है और अपने फ़रज़न्द से फ़ितरी है और इन्सान मह़बूबे हक़ीक़ी तक तब ही पहुँच सकता है जब उसके अन्दर यह हौसला पैदा हो जाये कि अगर उससे ऐसी चीज़ या ऐसे शख़्स की क़ुर्बानी तलब की जाये जो उसे इस दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यारा है तो आँख बन्द करके क़ुर्बानी देने पर तैयार हो जाये।

आज बकरीद के मौक़े पर क़ुर्बानी के ज़रिये दर असल इसी अहदे वफ़ा की तजदीद है और उम्मते मुस्लिमा से इसी फ़रमाँबरदारी, जाँ-निसारी और वफ़ादारी के जज़्बे के साथ जानवरों की क़ुर्बानी मतलूब है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यह ज़िन्दा जावेद सुन्नत मुसलमानों से इस बात का तक़ाज़ा करती है कि वह अपने दिलों में अल्लाह की मुह़ब्बत पैदा करें। हुक्मे ख़ुदा पर मर मिटने और उसकी रज़ा व ख़ुशनुदी के लिये अपनी ख़्वाहिशात को क़ुर्बान कर देने का जज़्बा पैदा करें। अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व फ़रमाँबरदारी और उसकी ख़ुशी ही एक मोमिन की पूँजी है। उसी की मुह़ब्बत में वह जीता और मरता है, उसके एक इशारे पर अपना चैन व सुकून, माल व दौलत और ओहदा बल्कि अपनी जान तक क़ुर्बान कर देता है। क़ुरआ़न की ज़बान में: ''बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानियाँ और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिये है, जो रब सारे जहान का।'' (सूरह अनआमः आयत 162)

गोश्त की तक़सीम में हिकमतः शरीअ़ते मुतह़्हरा ने क़ुर्बानी के गोश्त को तीन हिस्सों में तक़सीम करने को मुस्तहब क़रार दिया है, जिनमें से एक ह़िस्सा क़ुर्बानी करने वाला ख़ुद रखे, दूसरा हिस्सा दोस्त व

अह़बाब और करीबी रिश्तेदार और तीसरा हिस्सा गुरबा व मसाकीन को दे। क़ुर्बानी का पूरा गोश्त अपने इस्तेमाल में लाना अगरचे जाईज़ व दुरूस्त है, लेकिन दोस्त और क़रीबी रिश्तेदार और फ़ुकरा के लिये इस गोश्त में हिस्सा लगाने की तरग़ीब देकर शरीअ़त उन अख़्लाक़ी बीमारियों को दूर करना चाहती है जो माल कमाने और उसकी ख़ातिर दौड़ धूप करने से आम तौर से इन्सान के अन्दर पैदा हो जाती हैं, कंजूसी दूर करके सख़ावत व फ़य्याज़ से उसको आरास्ता करना चाहती है।

बकरीद पर इस सबक़ आमोज़ हिकमत की भी याद देहानी कराई जाती है कि फ़ुक़रा की मदद और उनकी ख़ैर ख़्वाही करना मालदार और साहिबे हैसियत लोगों की शरई और अख़्लाक़ी ज़िम्मेदारी है। जो लोग माली हैसियत के कमज़ोर हैं और अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये माल के मोहताज हैं, उनसे हमदर्दी रखना और कभी-कभी उनकी मदद करते रहना, मालदार लोगों का फ़र्ज़ बनता है। बकरीद के मौक़े से अगर हम इस भूले हुए सबक़ को ताज़ा करते रहें तो फिर मालदारों और मेहनत मज़दूरी करने वाले लोगों में जो दूरी पाई जाती है और इसकी वजह से पूरा समाज जो एक अजीब क़िस्म की टूट-फूट का शिकार है। यह दूर होगी पूरी दुनिया से इस दूरी का ख़ात्मा होगा।

शरीअ़त ने क़ुर्बानी के गोश्त में रिश्तेदारों का भी ह़िस्सा लगाने की ख़ास तरग़ीब दी है। इससे दर असल रिश्तेदारों का ख़्याल रखने और उनके हुक़ूक़ अदा करने की जो ख़ास ताकीद की गई है और उनके साथ ग़लत सुलूक करने पर जो वईद आती है वह किसी बा-शऊर मुसलमान से ढकी छिपी नहीं है और रिश्तेदारों के साथ बद-सुलूकी करने और उनको तकलीफ़ पहुँचाने का जो रूझान हमारे मुस्लिम समाज में बढ़ रहा है वह ख़तरनाक है। बकरीद के मौक़े पर क़ुर्बानी की इस हिकमत और फ़लसफ़े को समझें और यह अहद करें कि रिश्तेदारों के साथ ताल्लुक़ात बेहतर रखेंगे और उनके हुक़ूक़ अदा करने का ख़ास एहतिमाम करेंगे और इस तरह जानवर की क़ुर्बानी के साथ अल्लाह और बन्दों दोनों के हुक़ूक़ की अदायेगी भी होगी।

चन्द शुब्हात और उनका इज़ालाः मौजूदा दौर में बहुत से रौशन ख़्याल और आज़ाद ज़ेहन लोग ऐतेराज़ करते हैं कि यह क़ुर्बानी ख़ुदा तक नहीं पहुँचती और ना ही अल्लाह इस बात पर ख़ुश होता है कि किसी का ख़ून बहाया जाये, ख़ुदा को तो सिर्फ पाकी क़ुबूल है।

अल्लामा सय्यद अह़मद सईद काज़मी अलैहिर्रह़मा इसका जवाब देते हुए लिखते हैंः ''क़ुरआ़न मजीद में किसी जगह नहीं आया कि क़ुर्बानी ख़ुदा तक नहीं पहुँचती, अलबत्ता यह ज़रूर फ़रमाया गया कि क़ुर्बानी के जानवरों का गोश्त और ख़ून बारगाहे ख़ुदा में नहीं पहुँचता। ऐतेराज़ करने वालों को मालूम होना चाहिए कि क़ुर्बानी का जानवर और क़ुर्बानी दोनों एक चीज़ नहीं। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में क़ुर्बानी के जानवरों का ख़ून नहीं पहुँचता, लेकिन क़ुर्बानी ज़रूर पहुँचती है। रहा यह कि क़ुर्बानी क्या है? तो मालूम होना चाहिए कि क़ुर्बानी दर असल वही तक़वा है जिसके मुताल्लिक़ अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः ''कि जानवरों का गोश्त और ख़ून तो मेरी बारगाह में नहीं पहुँचता, लेकिन तुम्हारा तक़वा ज़रूर मुझे पहुँचता है।'' (सूरह ह़ज, आयत 37)

लेकिन याद रखिये तक़वा सिर्फ ज़बानी दावे का नाम नहीं, बल्कि आयते करीमा मे तक़वा से मुराद

सिर्फ़ गोश्त खाने खिलाने और ख़ून गिराने से रज़ा-ए-इलाही हासिल नहीं हो सकती। क्योंकि जानवर ज़बह करने और गोश्त खाने खिलाने का सिलसिला तो लोगों में हमेशा जारी रहता है। ज़बान की लज़्ज़त के लिये जानवर ज़बह किये जाते हैं। ऐसे गोश्त और ख़ून को रज़ा-ए-इलाही से क्या ताल्लुक़? अल्लाह तआ़ला की ख़ुशी तो उसी वक़्त हासिल हो सकती है जबकि बन्दा ख़ुश दिली और मुहब्बत के साथ क़ीमती जानवर अल्लाह के हुक्म पर ज़बह करे और दिल में यह जज़्बा भी हो कि जिस तरह हमनें यह जानवर तेरे नाम पर ज़बह किया है इसी तरह हम ख़ुद भी तेरी राह में क़ुर्बान होने के लिये तैयार हैं। यही क़ुर्बानी की हक़ीक़त है और इसी का नाम आयते करीमा में तक़वा रखा गया है।

दूसरा ऐतेराज़ यह करते हैं कि क़ुर्बानी की वजह ये लाखों लोगों की यह रक़में बिला वजह बर्बाद होती हैं, इसके बजाये अगर इतना माल मुफ़ीद कामों के लिये ख़र्च किया जाये तो मुआ़शरे के ग़रीब लोगों का भला हो जाये।

इस सूरते हाल में सबसे पहले तो ग़ौर करने की बात यह है कि ईदुल अज़्हा के ख़ास मौक़े पर अगर क़ुर्बानी करने के बजाये समाजी कामों में माल ख़र्च करना ही अफ़ज़ल व मुनासिब या ज़रूरी होता तो हुज़ूर अकरम ﷺ के ज़माने में साहिबे निसाब मुसलमानों पर क़ुर्बानी के बजाये ग़रीब लोगों पर माल ख़र्च करना ज़रूरी क़रार दिया जाता। लेकिन हुज़ूर ने ऐसे ज़माने के साहिबे निसाब मुसलमानों को क़ुर्बानी के मौक़े पर यह हुक्म नहीं दिया, बल्कि यह हुक्म फ़रमाया कि इस मौक़े पर अल्लाह की बारगाह में जानवर की क़ुर्बानी पेश करें। ख़ुद हमारे आक़ा ﷺ इन दिनों में क़ुर्बानी किया करते थे और सहाबा-ए-किराम का इसको हमेशा क़ायम रखना इस बात की दलील है कि ईदुल अज़्हा के मौक़े पर क़ुर्बानी करना ही अफ़ज़ल व ज़रूरी है।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि "इस दिन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक (क़ुर्बानी के जानवर का) ख़ून बहाने से बढ़कर बनी आदम (मुसलमानों) का कोई अमल पसन्दीदा नहीं।" (तिर्मिज़ीः ह़दीस 1481)

एक और ह़दीस शरीफ़ मुलाहज़ा होः प्यारे आक़ा ﷺ ने फ़रमाया कि "ईदुल अज़्हा के दिन किसी काम में माल ख़र्च किया जाये तो उस दिन क़ुर्बानी में ख़र्च किये जाने वाले माल से अफ़ज़ल नहीं।" (अल-जामेऊस्सग़ीर सुयूतीः ह़दीस 7824)

अगर क़ुर्बानी की हक़ीक़त पर नज़र हो तो यह शुब्हा भी पैदा नहीं हो सकता। क्योंकि क़ुर्बानी तो यादगार है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की, उनको हुक्म दिया गया था कि अपना बेटा ज़बह करो, लेकिन क़ुर्बान जायें सय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर कि उन्होंने अल्लाह से यह नहीं पूछा किः ऐ अल्लाह! जो बच्चा मुझे बरसों की दुआ़ओं के बाद मिला, आख़िर उसका क्या क़ुसूर है? और अगर क़ुसूर है भी तो उसको मारने से क्या हासिल होगा? नहीं! इसलिए कि जहाँ और जिस काम में अल्लाह का हुक्म आ जाता है, वहाँ कुछ सोचने की गुंजाइश नहीं रहती, चाहे फ़ायदा नज़र आये या नहीं।

क़ुर्बानी का मतलब है अल्लाह तआ़ला के हुक्म के सामने अपना सर झुका लेना, क्योंकि यही फ़लसफ़ा-ए-क़ुर्बानी है और यही रूहे क़ुर्बानी है। ★★★

★ उस्तादः जामिआ़ अह़सनुल बरकात
मारहरा शरीफ़, एटा, (यूपी)

कुर्बानी के मसाइल और चन्द ग़लत फ़हमियों की निशानदेही

इबादतों में ग़ौर करने के बाद यह बात वाज़ेह हो जाती है कि इबादत कुर्बानी चाहती है। कुर्बानी के बग़ैर इबादत का तसव्वुर नहीं किया जा सकता। कुर्बानी कभी वक़्त की होगी, कभी जान की होगी, क्या यह अच्छी बात है कि कुर्बानी भी दी जाये और इबादत भी सही अदा न हो? लिहाज़ा इबादत की दुरूस्तगी के लिये सही मसाइल से आगाही बहुत ज़रूरी है, तभी हम इबादात अच्छे तरीक़े से कर सकेंगे।

यूँही कुर्बानी जो कि हर मालिके निसाब पर वाजिब होती है। इबादत भी है और हक़ीक़ी कुर्बानी भी। इसमें बहुत से लोग ग़लत फहमी के शिकार हो जाते हैं और अपनी कम इल्मी की वजह से अपनी कुर्बानियों को बर्बाद करते हैं और सही मसाइल जानने की कोशिश नहीं करते या ज़रूरी नहीं समझते और इस ख़ुश फहमी में रहते हैं कि हमने तो कुर्बानी कर दी, लिहाज़ा ऐसों को चाहिए कि दीन के ज़रूरी मसाइल सीखें। अपनी इबादत और कुर्बानियों को सही तरीक़े से अदा करें।

अवाम में एक ग़लत फहमी यह पाई जाती है कि वह कहते हैं कि पिछली बार हमने दादा के नाम से कुर्बानी की थी इस बार नाना के नाम करनी है। पिछली बार हुज़ूर ﷺ के नाम की थी इस बार बड़े पीर साहब के नाम की होगी। ऐसे ही बुज़ुर्गाने दीन या दूसरे रिश्तेदारों के नाम गिनाने लगते हैं। ऐसे लोग अच्छी तरह याद रखें कि जब तक अपने ज़िम्मे की वाजिब कुर्बानी नहीं करेगे तब तक कोई नफ़्ली कुर्बानी कुबूल नहीं होगी।

कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि घर के ज़िम्मेदार यानी बाप का इन्तेक़ाल हो गया है और तमाम बच्चों का मुश्तरका (साझे में) कारोबार है और सभी मालिके निसाब हो जाते हैं तो तमाम भाईयों पर कुर्बानी वाजिब होगी। ऐसा नहीं है कि सिर्फ बड़े भाई के कुर्बानी करने से दूसरों की कुर्बानी साक़ित हो जाये, बल्कि सबको कुर्बानी करनी होगी, यूँही एक शक्ल यह है कि तमाम लड़के कारोबार से पैसे कमाकर अपने बाप को दे देते हों जो सबका ज़िम्मेदार है और खुद इतना पैसा न रखते हों जो निसाब तक पहुँच जाये तो अब सिर्फ इसी ज़िम्मेदार बाप पर कुर्बानी वाजिब होगी, जिसके पास निसाब भर माल है, दूसरे बेटों के पास निसाब तक माल न होने की सूरत में उन पर कुर्बानी वाजिब नहीं होगी।

कुर्बानी के दिनों में भी अगर किसी के पास इतना माल आ गया जो निसाब तक पहुँचता हो तो उस पर कुर्बानी वाजिब हो जाती है। ज़कात की तरह साल गुज़रना ज़रूरी नहीं और कुर्बानी के दिन ख़त्म होने से पहले पहले कुर्बानी करना ज़रूरी है। वरना गुनाहगार होगा और बाद में कुर्बानी के बराबर सदक़ा करना भी ज़रूरी होगा। यह कुर्बानी आने वाले साल करने से अदा नहीं होगी। हाँ! आने वाले साल कुर्बानी के दिनों में अगर मालिके निसाब रहा तो इस साल की कुर्बानी वाजिब होगी।

एक शक्ल यह भी है कि बाप का इन्तेक़ाल हो गया अब उसके दो या चार या उससे ज़्यादा बेटे हैं। अब माल अगरचे मिला हुआ एक साथ है, जब बाटेंगे तो सब मालिके निसाब बन जायेंगे। (अगरचे अभी बाँटा नहीं गया) तो हर एक को अपनी तरफ से क़ुर्बानी करनी होगी। ऐसा नहीं हो सकता है कि मरहूम बाप की तरफ़ से एक क़ुर्बानी कर दी या माल जो मौजूद है उसके नाम से एक क़ुर्बानी कर दी और समझ लिया कि सब बेटे की तरफ़ से हो गई। यूँही एक भाई, बड़े भाई हों या छोटे की तरफ़ से क़ुर्बानी की तो सबकी नहीं होगी सिर्फ उस एक ही की होगी जिसके नाम से क़ुर्बानी की गई।

यह भी देखा जाता है कि मसाइल मालूम न होने की वजह से लोग ऐबदार जानवर की क़ुर्बानी कर देते हैं या ऐसा ऐब जिसके होने से क़ुर्बानी सही होने में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, उसके ऐब होने के शक में क़ुर्बानी नहीं करते, हर कोई इतना मालदार नहीं होता कि फ़ौरन वह दूसर जानवर लाकर क़ुर्बानी करे, इसलिए हर क़ुर्बानी करने वाले को ज़रूरी मसाइल से आगाह होना बहुत ज़रूरी है। आज कल मल्टी मीडिया मोबाइल का दौर है जिसके ज़रिये मसाइल को समझने में आसानी हो जाती है। लिहाज़ा ऐसे मौक़े पर इसका बेहतरीन इस्तेमाल किया जाये।

हमारे एक मुलाक़ाती ने बड़े जानवर के किसी ऐब से मुताल्लिक़ मसला पूछा तो मैंने कहा कि फ़ोटो खींचकर भेजिये ताकि आसानी से मसला समझ में आ जाये तो फ़ोटो देखने पर मालूम हुआ कि वह ऐब नहीं था, उसकी क़ुर्बानी दुरूस्त थी। जबकि लोग उसे ऐब गुमान कर रहे थे। इस मिसाल से यह साबित हुआ कि कम ही लोग इस तरह बारीक बारीक ग़लत फ़हमियों को दूर करके अपनी क़ुर्बानियाँ दुरूस्त करते हैं।

यह बात भी अवाम में पाई जाती है कि जिसका अक़ीक़ा नहीं हुआ है उसकी क़ुर्बानी सही नहीं, हालाँकि क़ुर्बानी का अक़ीक़े से कोई ताल्लुक़ नहीं, बग़ैर अक़ीक़े के भी क़ुर्बानी दुरूस्त होगी। अक़ीक़ा का मसला अगल है, क़ुर्बानी का अलग। हाँ बड़े जानवर के हिस्से में क़ुर्बानी के साथ साथ अक़ीक़ा भी हो सकता है। इसके लिये अलग से जानवर लेने की ज़रूरत नहीं। यह भी याद रहे कि अक़ीक़ा सुन्नत है। इस्तेताअ़त होने पर ज़िन्दगी में एक ही बार करना है, अगर बाप ने किसी वजह से अक़ीक़ा नहीं किया तो आदमी ख़ुद अपना अक़ीक़ा भी बड़े होकर कर सकता है। और उम्र भर में कभी भी कर सकता है। हाँ! बेहतर यह है कि बच्चे का अक़ीक़ा पैदा होने के सातवें रोज़ किया जाये।

अगर घर के ज़िम्मेदार ने अपनी तरफ़ से क़ुर्बानी कर दी, लेकिन औरतों के पास इतनी मालियत के ज़ेवारात हैं जो निसाब को पहुँचते हैं और उनकी मालिक ख़ुद औरत है तो उस औरत पर भी क़ुर्बानी वाजिब है। ग़फ़लत में औरतें क़ुर्बानी नहीं करातीं या शौहर की तरफ से क़ुर्बानी को काफ़ी समझती हैं, उनको चाहिए कि ऐसे मसाइल को अच्छी तरह से समझ लें ताकि जिन जिन पर क़ुर्बानी वाजिब है वह अदा कर सकें।

क़ुर्बानी के गोश्त का तीन हिस्सा करना मुस्तहब है। एक हिस्सा ग़रीबों और मिस्कीनों के लिये, एक हिस्सा दोस्त अह़बाब के लिये एक हिस्सा घर वालों के लिये तो जिनके दोस्त अह़बाब कुछ ग़ैर मुस्लिम भी हों तो वह उनको शामिल नहीं कर सकते। क्योंकि क़ुर्बानी का गोश्त ग़ैर मुस्लिम को देना जाइज़ नहीं। क़ुर्बानी का गोश्त पका कर भी ग़ैर मुस्लिम को नहीं खिला सकते, हाँ अलग से गोश्त ख़रीदकर उनको खिला सकते हैं और दे भी सकते हैं। जिनको ताल्लुक़ात निभाना है उनको ऐसा ही

करना चाहिए ताकि शरई मसले पर अमल भी हो जाये और ताल्लुक़ात भी बहाल रहें।

जानवर ज़बह करते वक़्त बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर पढ़कर तीनों रग काटना ज़रूरी है। अगर ज़बह करने वाला तीनों रग नहीं काट सका और क़साई को छुरी दे दी तो उससे भी कहे कि बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर पढ़कर बक़िया रग काटे, अगर बग़ैर बिस्मिल्लाह पढ़े बक़िया रग काट दी तो क़ुर्बानी नहीं होगी। बिस्मिल्लाह पढ़कर शह रग काटना ज़रूरी है। इससे बहुत से लोग गफ़लत बरतते हैं, ख़ास तौर से उस वक़्त जब ज़बह करने वाला कोई कमज़ोर हो, लिहाज़ा इस पर तवज्जोह देना ज़रूरी है।

सात हिस्से वाली क़ुर्बानी में गोश्त तोलकर सबको बराबर बराबर तक़सीम किया जाये, पाये और कलेजी सबके गोश्त में मिला दिया जाये ताकि तक़सीम में परेशानी न हो, या सातों अफ़राद किसी आठवें को बिल इत्तेफ़ाक़ पूरे गोश्त का वकील बना दें तो अब उसे इख़्तियार है जिसको जितना चाहे दे, ऐसी सूरत में तोलने की ज़िम्मेदारी से बचा जा सकता है।

मसलाः ज़बह करने से पहले छुरी को तेज़ कर लिया जाये, कई बार का तजर्बा है कि क़साई हज़रात के घर में जितनी छुरियाँ रखी रहती हैं बक़रीद पर सबको निकाल देते हैं और क़ुर्बानी के लिये दे देते हैं। जब छुरी चलाई जाती है तो चलने का नाम नहीं लेती तो ऐसे में जानवर को बहुत तकलीफ़ होती है। ख़ुद भी बहुत तकलीफ होती है। लिहाज़ा छुरियों पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है ऐसा न हो कि जानवर डबल क़ुर्बानी से गुज़रे और ज़बह के बाद जब तक जानवर ठण्डा न हो जाये उसके तमाम हिस्से से रूह निकल न जाये, उस वक़्त तक हाथ पाँव न काटें और न चमड़ा उतारें और बेहतर यह है कि अपनी क़ुर्बानी अपने हाथ से करे, अगर अच्छी तरह ज़बह करना जानता हो और अगर अच्छी तरह न जानता हो तो दूसरे को हुक्म दे वह ज़बह करे, मगर इस सूरत में बेहतर यह है कि क़ुर्बानी के वक़्त हाज़िर हो। हदीस में है कि हुज़ूर ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमायाः ''खड़ी हो जाओ और अपनी क़ुर्बानी के पास हाज़िर हो जाओ कि उसके ख़ून के पहले ही क़तरे में सबकी मग़फ़िरत हो जायेगी।'' इस पर अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ कीः या रसूलल्लाह! यह आपकी आल के लिये ख़ास है या आपकी आल के अलावा आम मुसलमानों के लिये भी। फ़रमाया किः मेरे आल के लिये भी ख़ास है और तमाम मुस्लिमीन के लिये आम भी है। (बहारे शरीअ़तः हिस्सा 15, पे० 344)

मसलाः ऊँट और भैंस के हिस्सेदारों में से एक काफ़िर है या उनमें एक शख़्स का मक़सद क़ुर्बानी नहीं है बल्कि (सिर्फ़) गोश्त हासिल करना है तो किसी की क़ुर्बानी न हुई। (दुर्रे मुख़्तारः ब-हवाला बहारे शरीअ़तः हिस्सा 15, पे० 343)

काफ़िर के हुक्म में अहले सुन्नत व जमाअ़त के अलावा सारे फ़िरक़ा-ए-बातिला हैं, जिनके अक़ाइद गुस्ताख़ाना हैं, लिहाज़ा हिस्से में क़ुर्बानी करते वक़्त हिस्सेदारों को ख़ूब छानबीन कर शामिल करें। हिस्सादारों में सारे अहले सुन्नत ही होने ज़रूरी हैं वरना क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं होगी।

यह चन्द अवामी ग़लत फ़हमियाँ जो सामने आई नक़्ल कर दी गई। बक़िया क़ुर्बानी के मसाइल सीखने के लिये बहारे शरीअ़त का पन्द्रहवाँ हिस्सा, क़ानूने शरीअ़त वग़ैरह का मुतालआ़ करें। ★★★

★ arifnomani2016@gmail.com

शहादते इमाम हुसैनः अहादीस की रौशनी में

यह वक़्त का बहुत बड़ा अलमिया है कि आज इस्लाम का दावा करने वालों के लिये इमाम आ़ली मक़ाम की शहादत ज़ेहन का कांटा बन के रह गई है और बहुत से नालाइक तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु को हक़ के मुक़ाबले में बग़ावत का इल्ज़ाम देते हैं। इमाम हुसैन और उनके साथी नीज़ वाक़्याते कर्बला के मुताल्लिक़ इस क़िस्म की बहुत सी ग़लत फहमियाँ फैलाने का एक मुस्तक़िल सिलसिला जारी है। इसके मुताल्लिक़ किताबें भी लिखी गई, तक़रीरें भी हुई और हो रही हैं। यह सब इसलिए हुआ और हो रहा है कि जिस तरह कल मैदाने कर्बला में यज़ीदी ज़ालिमों ने निस्बते रसूल के बावजूद अहले बैत का क़त्ले आम किया। आज भी कुछ यज़ीद की तरह ज़ालिम, निस्बते रसूल और एह़तिरामे अहले बैत का ख़ून करते हुए दरिन्दगी से नहीं बाज़ आते। ह़ालाँकि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इसकी बड़ी ताकीद फ़रमाई।

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने हज़रत अ़ली, फ़ातिमा, ह़सन और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के बारे में इरशाद फ़रमायाः ''मैं उससे जंग करूँगा जो इनसे जंग करेगा और मैं उससे सुलह करूँगा जो इनसे सुलह रखेगा।'' (तिर्मिज़ी शरीफ़ व मिश्कात शरीफ़ पे० 570)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः अल्लाह से मुह़ब्बत करो इस वजह से कि वह तुमको अपनी नेअ़मतों से नवाज़ता है और मुझसे मुह़ब्बत करो अल्लाह की मुह़ब्बत की वजह से और मेरे अहले बैत से मुह़ब्बत करो, मेरी मुह़ब्बत की वजह से।

ह़ज्जतुल विदाअ से वापसी पर मक़ामे ग़दीर ख़ुम पर भी अल्लाह के रसूल ﷺ ने किताबुल्लाह के साथ अहले बैत के एह़तिराम के बारे में ताकीद फ़रमाई इरशाद फ़रमायाः क़रीब है कि मेरे पास अल्लाह का पैग़म्बर उसका हुक्म लेकर आये और मैं इस पर लब्बैक कहता हुआ, अपने रब से जा मिलूँ। लिहाज़ा मैं तुममें दो वज़नी और नफ़ीस चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। एक तो अल्लाह की किताब क़ुरआ़ने हकीम, जिसमें हिदायत और नूर है तो अल्लाह की किताब को मज़बूत पकड़ लो (रावी-ए-ह़दीस हज़रत ज़ैद बिन अरक़म फ़रमाते हैं) रसूलुल्लाह ﷺ ने अल्लाह कि किताब (की अज़मत पर) पर उभारा और उसमें रग़बत दिलाई, फिर फरमाया दूसरे मेरे अहले बैत। मैं तुमको अल्लाह से डराता हूँ। अपने अहले बैत के बारे में, मैं तुमको अल्लाह से डराता हूँ, अपने अहले बैत के बारे में। (मुस्लिम शरीफ़ः जि० 2, पे० 279, मिश्कातः 568)

अमीरूल मोमिनीन हज़रत सय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु अहले बैत के बारे में इरशाद फ़रमाते हैंः हुज़ूर ﷺ का पास व लिहाज़ रखो, उनके अहले बैत के बारे में (यानी उनकी ताज़ीम तौक़ीर करो) उन्हें बुरा न कहो और न उन्हें तकलीफ़ दो। अगर उनके साथ अच्छा सुलूक न करोगे तो गोया रसूल का

एह़तिराम और पास न रखा)। (सह़ीह़ बुख़ारीः जि० 1, पे० 526, 530)

इनके अलावा फज़ाइले अहले बैत की बे शुमार ह़दीसें ह़दीस की किताबों में मौजूद हैं, उन्हीं पर इक्तिफ़ा करते हुए अब चन्द उन ह़दीसों का ज़िक्र किया जाता है, जिनमें शहादते इमामे हुसैन का तज़किरा या पेशीन गोई मौजूद है। हज़रत उम्मुल फ़ज़ल बिन्त हारिस ज़ौजा हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा मैं हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मैंने आज की रात एक बुरा ख़्वाब देखा है। हुज़ूर ने फ़रमायाः वह क्या ख़्वाब है? बयान करो अर्ज़ कियाः हुज़ूर बहुत ही सख़्त है फिर फरमायाः उसको बयान तो करो। मैंने अर्ज़ किया कि मैंने ख़्वाब देखा है कि आपके जिस्मे पाक का एक टुकड़ा काट कर मेरी मेरी गोद में रख दिया गया। हुज़ूर ने फ़रमायाः ऐ उम्मुल फज़ल! तुमने जो ख़्वाब देखा है वह अच्छा ख़्वाब है। इंशाअल्लाह मेरी बेटी फ़ातिमा के यहाँ एक फ़रज़न्द पैदा होगा और वह तुम्हारी गोद में होगा। चुनाँचे हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से हज़रत इमाम हुसैन की विलादत हुई और वह मेरी गोद में रखे गए जैसा कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया था।

एक दिन मैं हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुई और हुसैन को आपकी गोद में देकर दूसरी तरफ मुतवज्जेह हो गई, फिर जब मैंने देखा तो हुज़ूर की आँखों से आँसू बह रहे थे। अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा यह क्या माजरा है? आपकी आँखें आँसू क्यों बहा रही हैं। फ़रमायाः अभी अभी जिब्राइल आये थे वह मुझे ख़बर दे गए हैं कि इस फ़रज़न्द को मेरी उम्मत क़त्ल करेगी। मैंने हुसैन की तरफ़ इशारा करके पूछाः जिब्राइल इसको? तो कहाः हाँ! इसी हुसैन को। और जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने मक़ामे शहादत की सुर्ख़ मिट्टी भी लाकर मुझे दी है। (मिश्कात ब रिवायत बैहक़ी बाब मनाक़िबे अहले बैतिन्नबीः पे० 6, मतबूआ़ कुतुब ख़ाना रशीदिया देहली)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने एक दिन दोपहर के वक़्त हुज़ूरे अकरम ﷺ को ख़्वाब में देखा, इस ह़ाल में कि आपके बाल बिखरे हुए हैं और दस्ते मुबारक में एक ख़ून से भरी बोतल है। मैंने अर्ज़ कियाः मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान। यह कैसा ख़ून है या रसूलल्लाह! फ़रमायाः यह हुसैन और उसके साथियों का ख़ून है। जिसको मैं सुबह से उठा रहा हूँ। मैंने उस वक़्त को याद रखा, बाद में मालूम हुआ कि इमाम हुसैन को उसी वक़्त शहीद किया गया। ''इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजेऊन'' (मिश्कातः पे० 576)

हज़रत सलमा ज़ौजा अबू राफ़ेअ़ बयान करती हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुई। तो देखा कि आपकी आँख से आँसू जारी हैं। अर्ज़ कियाः ऐ उम्मुल मोमिनीन! क्यों रो रही हैं? फ़रमायाः अभी मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़्वाब में देखा इस ह़ालत में कि आपके सर मुबारक और दाढ़ी पर ग़ुबार पड़ा हुआ है, अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! क्या ह़ाल है? फ़रमायाः अभी अभी मैं हुसैन की शहादत में हाज़िर हुआ। (तिर्मिज़ी शरीफ़ः जि० 2, पे० 218)

हज़रत मौला-ए-काएनात अ़ली मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैंः मैं हुज़ूर ﷺ के पास हाज़िर हुआ, देखा कि आपकी दोनों आँखें बह रही हैं। मैंने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! किस ने आपको ग़ज़ब में डाल दिया है। क्या बात है आपकी दोनों आँखें बह

रही हैं तो हुज़ूर ने फ़रमायाः अभी इस गुफ़्तगू से पहले मेरे पास से जिब्राइल उठकर गए हैं और मुझसे बयान कर गए हैं कि बेशक हुसैन को फुरात के किनारे क़त्ल किया जायेगा। फिर हुज़ूर ने फ़रमायाः क्या तुम चाहते हो कि उसकी मिट्टी तुम्हें सुँघाऊँ। मैंने अर्ज़ कियाः हाँ या रसूलल्लाह! तो हुज़ूर ने अपना दस्ते मुबारक फैलाया फिर एक मुठ्ठी मिट्टी ली और उसको मुझे दे दिया। फिर मैं भी रोये बग़ैर न रह सका। (मुस्नदे अह़मद, मिरक़ात शरहे मिश्कात मुल्ला अ़ली क़ारी ह़नफ़ीः जि० 5, पे० 609, मतबूआ़ असह्हुल मताबेअ़ मुम्बई)

अब चन्द अह़ादीस फ़ज़ाइल में भी मुलाहज़ा हों:

हज़रत अबू यअ़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ। जो हुसैन से मुह़ब्बत करेगा अल्लाह उससे मुह़ब्बत करेगा और हुसैन मेरी नस्ल की एक टहनी है। (तिर्मिज़ी शरीफ़ः जि० 2, पे० 219)

हज़रत अनस रिवायत करते हैं हुज़ूर ﷺ से पूछा गया अहले बैत में से कौन आपके नज़दीक ज़्यादा मह़बूब है। फ़रमायाः ह़सन और हुसैन सबसे ज़्यादा मेरे नज़दीक मह़बूब और प्यारे हैं। आप हज़रत फ़ातिमा से फ़रमातेः मेरे दोनों लाडलों को मेरे पास लाओ। जब आपके पास दोनों लाये जाते तो उनको चिम्टा लेते और सूँघते। (तिर्मिज़ीः जि० 2, पे० 218)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम ﷺ ने फ़रमायाः ह़सन और हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं। (तिर्मिज़ी जि० 2, पे० 218, इब्ने माजाः जि० 1, पे० 56)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से एक इराक़ी ने ह़ालते एह़राम में मक्खी मारने के बारे में फ़तवा पूछा तो आपने फ़रमायाः अहले इराक़ मुझसे मक्खी मारने का हुक्म पूछते हैं, हालाँकि उन्होंने बिन्ते रसूल हज़रत फ़ातिमा के फ़रज़न्द इमाम हुसैन को शहीद किया है। हालाँकि मैंने रसूलल्लाह ﷺ को यह फ़रमाते सुना है कि ह़सन और हुसैन मेरे दुनिया के दो फूल हैं। (सह़ीह़ बुख़ारीः जि० 1, पे० 530, तिर्मिज़ी जि० 2, पे० 218)

अह़ादीसे रसूल ﷺ की इतनी वाज़ेह और खुली हुई गवाही के बावजूद अगर कोई शहादते कर्बला के वाक़्यात को फ़र्ज़ी अफ़साना या इमाम हुसैन की ग़लती पर मह़मूल करे तो उसे अपने रोग का इलाज करना चाहिए। एक मोमिन के लिये तो सरकार का फ़रमाना ही काफ़ी है, तारीख़ी शहादतें हों या न हों। इन ह़दीसों से यह भी मालूम हुआ कि यह सारे वाक़्याते कर्बला हुज़ूरे अकरम ﷺ की निगाहों के सामने हुए और सरकार खुद मैदाने कर्बला में मौजूद थे। और यह सब कुछ हुज़ूर की पेशीन गोई को अवामी ख़्वाब पर महमूल नहीं किया जा सकता। इसलिए कि हुज़ूर फ़रमाते हैंः जिसने मुझे देखा उसने मुझी को देखा कि बेशक शैतान मेरी शक्ल में नहीं आ सकता। ★★★

★ दारूल उलूम क़ादिरिया चिरैयाकोट, ज़िला मऊ, (यूपी)

सुल्तानुल आशिक़ीन हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़्मा फ़रमाते हैंः "हमेशा अल्लाह तआ़ला की रह़्मत से उम्मीद लगायें और उसी करीम व रहीम के करम व रह़्मत पर भरोसा और तवक्कुल इख़्तियार करें।" (इदारा)

तिलावते कुरआ़न की फ़ज़ीलत

कुरआ़ने करीम उस रब तबारक व तआ़ला का बे-मिस्ल कलाम है जो अकेला मअ़बूद, तन्हा ख़ालिक़ और सारी काएनात का हक़ीक़ी मालिक है। अल्लाह इरशाद फ़रमाता हैः ''और ऐ सुनने वाले अगर तुझे कुछ शुब्हा हो इसमें (कुरआ़न) जो हमने तेरी तरफ़ उतारा तो उनसे पूछ जो तुझसे पहले किताब पढ़ने वाले हैं। बेशक तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से हक़ आया तो तू हरगिज़ शक वालों में न हो। और हरगिज़ उनमें न होना जिन्होंने अल्लाह की आयतें झुठलाईं कि तू ख़सारे वालों में हो जायेगा।'' (सूरह युनूसः पे० 94—95)

उसने अपना यह कलाम रसूलों के सरदार, ह़बीबे बे-मिस्ल मुह़म्मदुर्रसूलल्लाह ﷺ पर नाज़िल फ़रमाया ताकि उसके ज़रिये आप ﷺ लोगों को रब तबारक व तआ़ला पर ईमान लाने और दीने हक़ की पैरवी करने की तरफ़ बुलायें और शिर्क व कुफ़्र व नाफ़रमानी के अन्जाम से डरायें। लोगों को कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों के तारीक रास्तों से निकालकर ईमान व इस्लाम के रौशन और मुस्तक़ीम रास्ते की तरफ़ हिदायत दें और उनके लिये दुनिया व आख़िरत में फ़लाह व कामरानी की राहें आसान फ़रमायें। अल्लाह तआ़ला कुरआ़न में इरशाद फ़रमाता हैः ''तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिये हैं जिसने अपने बन्दे पर किताब नाज़िल फ़रमाई, इसमें कोई कुंजी नहीं रखी। लोगों की मसलेह़तों को क़ायम रखने वाली निहायत मोअ़तदिल किताब, ताकि अल्लाह की तरफ़ से सख़्त अज़ाब से डराये और अच्छे आमाल करने वाले मोमिनों को ख़ुश ख़बरी दे कि उनके लिये अच्छा सवाब है।'' (पारा 15, सूरह अल-कहफ़ः 1—2)

कुरआ़न से पहले अल्लाह तआ़ला ने तौरेत, ज़बूर, इंजील, इनके अलावा भी बहुत से सह़ीफ़े और किताबें नाज़िल फ़रमाई, लेकिन वह किताबें जैसी अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल की थीं वैसी पूरी दुनिया में कहीं मौजूद नहीं, क्योंकि उनके मुतबईन ने उनको तस्हील बिल अमल, आम व ख़ास से माल व दौलत के नज़राने हासिल करने की ग़र्ज़ से बदल डाला, जिसका तज़किरा कुरआ़न में मौजूद हैः ''बेशक वह लोग जो अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब को छुपाते हैं और उसके बदले ज़लील क़ीमत लेते हैं, वह अपने पेट में आग ही भरते हैं और अल्लाह क़यामत के दिन उनसे न कलाम फ़रमायेगा, और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।'' (सूरह बक़रहः 174)

कुरआ़न पाक वाह़िद ऐसी किताब जैसी अल्लाह के रसूल ﷺ पर नाज़िल हुई आज तक वैसी ही है, हालाँकि कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन व दुश्मनाने इस्लाम व कुरआ़न ने उसमें बहुत रद्दे बदल करने और मिटाने की नाकामी कोशिशें की जितनी उन्होंने उसको मिटाने, बदलने की कोशिशें की, वह इतना ही तेज़ रफ़्तार के साथ अपनी नूरानियत व हक़्क़ानियत से लोगों के तारीक दिलों को शिर्क व कुफ़्र की ग़लाज़त व ख़ुबासत से पाक व साफ़ करके मुनव्वर व रौशन करता हुआ आगे बढ़ता गया। अपना क़ाइल व गिरवीदा बनाता गया, आख़िर उसकी क्या वजह थी कि मुन्किर

लोगों ने उसको मिटाने की नाकाम कोशिशें कीं, करते हैं, करते रहेंगे, लेकिन इसमें किसी क़िस्म की तब्दील नहीं कर पाये। इसका सबब यही है कि उसकी हिफ़ाज़त रब्बे आलम कर रहा है। जिसका ज़िक्र क़ुरआन में मौजूद है। इरशाद बारी हैः ''बेशक हमने इस क़ुरआन को नाज़िल किया है और बेशक हम ख़ुद इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।'' (सूरह हजरः 9)

क़ुरआने मजीद के नाज़िल होने की इब्तिदा रमज़ान के बा-बरकत व रह़मत महीने में हुई, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः ''रमज़ान का यह वह महीना है जिसमें क़ुरआन नाज़िल किया गया जो लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई है और फ़ैसले की रौशन बातों पर मुश्तमिल है।'' (सूरह बक़रहः 185)

इसकी तिलावत करने के शाइक़ीन की तारीफ़ व तौसीफ़ क्यों न बयान की जाये, क्योंकि इसका पढ़ना इबादत, देखना इबादत, छूना इबादत, समझना इबादत, समझाना इबादत, सुनना इबादत, सुनाना इबादत, ग़ौर व फ़िक्र करना इबादत ऐसा क्यों न हो क्योंकि इसकी तिलावत दिलों से नजासत व ग़लाज़त मअ़सियत को साफ़ करके दिलों को पाक व साफ़ करता है और उनकी तारीकी को दूर करके उनको पुरनूर करता है। इसकी तिलावत से दिलों को सुकून मिलता है और आँखों को ज़िया मिलती है और ज़बान को लताफ़त व तलज़्ज़त और उसकी तिलावत से क़ील व क़ाल में ह़लावत व शीरनी और तबीअ़त में लुत्फ़ व बशाशत और चाशनी पैदा होती है। इसकी तिलावत अक़्ल व ख़िरद में कसरत व इज़ाफ़े का सबब बनता है। यह सब तिलावते क़ुरआन के लिये फ़वाइद है और उससे भी कहीं ज़्यादा, जिसको इस नाक़िस का क़लम बयान नहीं कर सकता।

फ़वाइदे क़ुरआन जो अह़ादीस से साबित हैं ह़दीस शरीफ़ में हैंः (1) जिस घर में रोज़ाना सूरह बक़रह पढ़ी जाये वह घर शैतान से महफ़ूज़ रहता है। लिहाज़ा जिन्नात के शर से भी मह़फ़ूज़ रहेगा।

(2) रोज़े क़यामत सूरह बक़रह, आले इमरान उन लोगों पर साया करेंगी और उनकी शिफ़ाअ़त करेंगी जो दुनिया में क़ुरआन की तिलावत के आ़दी थे।

(3) जो शख़्स आयतल कुर्सी सुबह व शाम और सोते वक़्त पढ़ लिया करे तो उस घर से जलने और चोरी होने से मह़फ़ूज़ रहेगा। (4) सूरह इख़्लास का सवाब तिहाई क़ुरआन के बराबर है इसी लिए ख़त्म, फ़ातिहा में इसको तीन बार पढ़ते हैं।

(5) हुज़ूर ﷺ फ़रमाते हैंः जो शख़्स क़ुरआन का एक हर्फ़ पढ़ता है उसको दस नेकियाँ मिलती हैं। ख़्याल रहे एक ह़र्फ नहीं बल्कि अलीफ़-लाम-मीम तीन हुरूफ़ हैं। सिर्फ इतना पढ़ने से तीस नेकियाँ मिलती हैं। ख़्याल रहे मुक़तआ़त में से है, जिसका माना अल्लाह व रसूल के सिवा कोई नहीं जानता। (6) जो शख़्स क़ुरआ़न पढ़े उस पर अमल भी करे तो क़यामत के दिन उसके वालिदैन को ऐसा ताज पहनाया जायेगा जिसकी रौशनी आफ़ताब से भी ज़्यादा तेज़ होगी।

(7) क़ुरआ़न को देखकर पढ़ने में दुगना सवाब है और बग़ैर देख के पढ़ने में एक। इसलिए कि चन्द चीज़ों का देखना इबादत है। क़ुरआ़न, काबा शरीफ़, और वालिदैन का चेहरा मुहब्बत से और आलिमे दीन का चेहरा अक़ीदत से वग़ैरह वग़ैरह।

(8) क़ुरआ़न की तिलावत और मौत की याद दिल की ग़लाज़त को इस तरह साफ़ कर देती है जैसे कि ज़ंग आलूद लोहे को आग।

(9) जो शख़्स क़ुरआ़न की तिलावत में इतना मशग़ूल हो कि कोई दुआ़ न मांग सके तो अल्लाह

तआ़ला उसके मांगने वालों से ज़्यादा देता हे।

(10) जो हर रात सूरह वाक़्या पढ़ा करे उसे कभी फ़ाक़ा न होगा। (11) जो सरूह यासीन अव्वल दिन में निस्फ़ुन्नहार से पहले पढ़ने का आ़दी तो उसकी ह़ाजतें पूरी होती हैं। (12) सूरह यासीन पढ़ने से तमाम गुनाह माफ़ होते हैं, मुश्किलें आसान होती हैं, लिहाज़ा उसको मरीज़ों के पास पढ़ो। (13) सूरह काफ़ीरून सोते वक़्त पढ़ने वाला कुफ़्र से मह़फ़ूज़ रहेगा। (14) सूरह फ़लक़ व नास पढ़ने से आँधी व अंधेरी दूर होती है। पाबन्दी से पढ़ने वाला जादू से मह़फ़ूज़ रहेगा। (15) सूरह फ़ातिह़ा जिस्मानी और रूह़ानी बीमारियों की दवा है। (तफ़सीरे नईमीः जि० 1, पे 19)

क़ुरआ़न के फ़ायदे सिर्फ़ पढ़ने वाले पर ही ख़त्म नहीं होते, बल्कि दूसरों तक भी पहुँचते हैं। मसलन जहाँ तक उसकी आवाज़ पहुँचे वहाँ तक मलाइका रह़मत का इज्तिमा होता है। जब ताली-ए-क़ुरआ़न तिलावत करता तो उस वक़्त स पर रह़मतों का नुज़ूल होता है और अल्लाह के मुक़द्दस फ़रिश्ते क़ुरआ़न को सुनने के लिये तशरीफ़ लाते हैं और ताली-ए-क़ुरआ़न से क़रीब होकर क़ुरआ़न सुनते हैं। इसके लिये दुआ़-ए-ख़ैर व आफ़ियत व मग़फ़िरत करते हुए वापस हो जाते। जैसा कि ह़दीस में है हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रात के वक़्त सूरह बक़रह की तिलावत कर रहे थे और उनका घोड़ा उनके पास ही बंधा हुआ था। इतने में घोड़ा बदकने लगा तो उन्होंने तिलावत बन्द कर दी तो घोड़ा भी रूक गया। फिर उन्होंने तिलावत शुरू की तो घोड़ा फिर बिदकने लगा। इस मर्तबा भी जब उन्होंने तिलावत बन्द की तो घोड़ा भी ख़ामोश हो गया। तीसरी मर्तबा उन्होंने तिलावत शुरू की तो फिर घोड़ा बिदका। उनके बेटे याहया चूँकि घोड़े के क़रीब ही थे इसलिए उस डर से कहीं उन्हें कोई तकलीफ़ न पहुँच जाये। उन्होंने तिलावत बन्छ कर दी और बच्चे को वहाँ से हटा दिया फिर ऊपर नज़र उठाई तो कुछ न दिखाई दिया। सुबह के वक़्त यह वाक़्या उन्होंने हुज़ूर ﷺ से बयान किया। नबी-ए-पाक ﷺ ने फ़रमायाः इब्ने हुज़ैर! तुम पढ़ते रहते तिलावत बन्द न करते (तो बेहतर होगा) उन्होंने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मुझे डर लगा कि कहीं घोड़ा मेरे बच्चे याहया को न कुचल डाले, वह उससे बहुत क़रीब था। मैंने सर ऊपर उठाया और फिर याहया की तरफ़ देखा। फिर मैंने आसमान की तरफ सर उठाया तो एक छतरी सी नज़र आई जिसमें रौशन चिराग़ थे। फिर जब मैं दुबारा बाहर आया तो मैंने उसे नहीं देखा। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि तुम्हें मालूम भी है वह क्या चीज़ थी? उसैद न अर्ज़ किया कि नहीं। नबी-ए-पाक ﷺ ने फ़रमाया कि वह फ़रिश्ते थे, तुम्हारी आवाज़ सुनने के लिये क़रीब हो रहे थे। अगर तुम रात भर पढ़ते रहते तो सुबह तक और लोग भी उन्हें देखते वह लोगों से छुपते नहीं। (सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ः 5018)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बयान करती हैं कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः माहिर क़ुरआ़न, इताअ़त गुज़ार, मुअ़ज़्ज़ फ़रिश्तों और मोहतरम व मोअ़ज़्ज़म नबियों के साथ होगा और जो शख़्स अटक अटक कर क़ुरआ़न पढ़ता है और वह उस पर दुश्वार होता है तो उसके लिये दुगना अज्र होगा। (मिश्कातः 2111)

माहिर क़ुरआ़न हर वह आ़लिम है जो अल्फ़ाज़ क़ुरआ़न, मानी, मसाइल, इसरार व रूमूज़ क़ुरआ़न का वाकिफ़ हो। क़ुरआ़न का आ़लिम अम्बिया, मलाइका जैसा काम करता है इसलिए उसका हश्र भी उन्हीं जमाअ़तों के साथ होगा। लेकिन वह जो कुंद ज़ेहन

मोटी ज़बान वाला जो क़ुरआ़न सीख तो न सके मगर कोशिश में लगा रहे कि मरते दम तक कोशिश किये जाये तो वह डबल अज्र का मुस्तहि़क़ है। (मरअतुल मनाजीहः जि० 3, पे० 237)

हज़रत इब्ने उमर बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमायाः सिर्फ दो आदमियों पर रश्क करना जाईज़ है, वह आदमी जिसे अल्लाह ने क़ुरआ़न का इल्म अता किया हो और वह दिन रात उसकी तिलावत व अमल का एहतिमाम करता हो और एक वह आदमी जिसे अल्लाह ने माल अता किया हो और वह दिन रात उसमें से ख़र्च करता हो। (मिश्कातः 2112)

रश्क के माना हैं दूसरे की सी नेमत अपने लिये भी चाहना, दीनी चीज़ों में रश्क जाईज़ है। जिसको क़ुरआ़न का इल्म दिया गया, नमाज़ें पढ़ता हो, उसके अह़काम पर अमल करता हो, हर वक़्त उसके मसाइल सोचता हो, उसमें ग़ौर व ताम्मुल करता हो तो उसकी ज़िन्दगी मुबारक है। और मुबारक है वह मौत जो क़ुरआ़न व ह़दीस की ख़िदमत में आये, अल्लाह मुझे भी नसीब करे।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि सरकारे दो आ़लम ﷺ ने फ़रमायाः बेशक अलाह उस किताब के ज़रिये कुछ लोगों को रिफ़अ़त अता फ़रमाता है और कुछ लोगों को पस्ती का शिकार कर देता है। (मिश्कातः 2114)

मुसलमान क़ुरआ़न को सही तरह समझें और सही तरह अमल करें तो वह दुनिया में बुलन्द दर्जे पायेंगे, जो उससे ग़ाफ़िल रहें या ग़लत तरह समझें, ग़लत तौर पर अमल करें वह दुनिया व आख़िरत में ज़लील होंगे और उससे ज़िन्दगी व मौत तय्यब होती है यह मह़बूबीन के लिये रह़मत है और मह़जूबीन के लिये दमा व ख़ून है।

क़ुरआ़न अज़ीम की तिलावत करना और सुनना ऐजाज़ मुसलमानी है इसलिए हर मुसलमान को ज़्यादा से ज़्यादा क़ुरआ़न की तिलावत करके रह़मतें और बरकतें हासिल करना चाहिए, लेकिन वह लोग जो क़ुरआ़न पढ़ना नहीं जानते तो वह दूसरे लोगों से क़ुरआ़न पढ़वाकर सुनें या मोबाइल से सुनें इसलिए कि अल्लाह के रसूल को दूसरों से क़ुरआ़न पढ़वाकर सुनना बहुत मह़बूब था, जिसका ज़िक्र ह़दीस में मौजूद है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान करते हैं कि मुझसे हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि मैं क़ुरआ़न मजीद दूसरे से सुनना मह़बूब रखता हूँ। (मिश्कात)

आज मुसलमान तालीम क़ुरआ़न व तिलावत से बहुत दूर हैं, ना ही ख़ुद उसकी तालीम हासिल करता और नाही अपने बच्चों को तालीम दिलाता, यही वजह आज हमारे मुआ़शरे व घरों में तरह तरह की बुराईयाँ पैदा हो रही हैं। घर बीमारियों से तबाह व बर्बाद और वीरान हैं, हम लोग तंगदस्त, बद-अख़्लाक़, बद-तहज़ीब, बे-अदब होते जा रहे हैं। और अपने ख़ालिक़ से दूर होकर बे-राह रवी के शिकार हो रहे हैं, क्योंकि हमने क़ुरआ़न शरीफ़ की तिलावत और उसकी तालीम व तअ़ल्लुम का सिलसिला रवा नहीं रखा, जिसकी तालीम की तरग़ीब सरकारे दो आ़लम ﷺ ने अपने अल्फ़ाज़ में यूँ फ़रमाई, आप फ़रमाते हैंः तुममें सबसे बेहतर वह शख़्स जो क़ुरआ़न सीखे और दूसरे को सिखाये। (मिश्कातः 2109)

इसलिए कि क़ुरआ़न ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के असरार व रूमूज़ बयान करता है, इन्सान के लिये क्या सही और क्या ग़लत है? उसकी तसरीह करता है, जो क़ुरआ़न की तालीम से सही आरास्ता हैं,

उनके किरदार व अमल से इस्लाम की हक़्क़ानियत चमक रही है। ज़रा सहाबा, ताबईन, तबअ़ ताबईन का दौर देखों तो मालूम होगा कि उन्होंने सिर्फ क़ुरआ़न सीखा ही नहीं, बल्कि पूरे आ़लम मे क़ुरआ़न की नश्र व इशाअ़त की और उसकी तालीम को आम करने के लिये अपनी क़ीमती जानों को भी क़ुर्बान करने से पीछे नहीं हटे। इसी लिए उनकी ज़िन्दगियाँ हमारे लिये आइडियल, मशअ़ले राह और नमूना-ए-अमल हैं।

काश हमने उसकी तालीम पर ध्यान दिया होता तो ज़माना हमारा दुश्मन न होता, क्योंकि यह क़ुरआ़न का ही फ़ैज़ान था कि जब हमारे असलाफ़ किसी मुल्क व बलद क़रिया से गुज़रा करते थे तो मुश्रिकीन व यहूद व नसारा के कलेजे मुँह को आने लगते थे और अपने बस्तियों को बे-यार व मददगार तन्हा छोड़कर भाग जाया करते थे। और बहुत से लोग उनके किरदार व अमल से मुतास्सिर होकर आग़ोशे इस्लाम में आ जाया करते थे, कोई भी बातिल ताक़त उनके सामने सर उठाने की जुरअत नहीं करती थी, यह सब क्या था, बस क़ुरआ़न की तिलावत करने और उसकी तालीम व तअ़ल्लुम का सिलसिला रवा रखने और उस पर आमिल होने का ही समरा था। इसलिए कि हमेशा उनके शब व रोज़ तिलावते क़ुरआ़न व तालीम व तअ़ल्लुम और बन्दगी ख़ुदा मे गुज़रा करते थीं, लेकिन आज हम अपनी हालत ज़ार के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं किसी और से क्या शिकवा-ए-रंज व अलम।

अगर आज हमने क़ुरआ़न को बराये ताक़ न रखा होता तो आज हम दूसरों के ज़ुल्म व जबर के शिकार न बनते और ना ही दूसरों के मोहताज और न दर-दर की ठोकरें खाते-फिरते और ना ही हमारा जिस्म हज़ार बार क़िस्म की बीमारियों का मरकज़ बनता क्योंकि उस किताब में अल्लाह ने सिर्फ इन्सान की हिदायत, आख़िरत में जज़ा व सज़ा का ही तज़किरा नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उसमें इन्सान के लिये शिफ़ा और दुनिया में पेश आमदा तमाम मसाइब व मुश्किलात के हल का भी तज़किरा किया है। अल्लाह फ़रमाता हैः ''और हम क़ुरआ़न में वह चीज़ उतारते हैं जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत है और उससे ज़ालिमों को ख़सारा ही बढ़ता है।'' (बनी इस्राईल)

एक जगह और इरशाद फ़रमाता हैः ''और हमने तुम पर यह क़ुरआ़न उतारा जिसमें हर चीज़ का रौशन बयान है और मुसलमानों के लिये हिदायत और रह़मत और बशारत है।'' (सूरह नह़लः 89)

एक अहम पैग़ाम मुसलमानों के नामः तो हम अहद करते हैं हर रोज़ बाद नमाज़े फ़जर या दिन के किसी ह़िस्से में क़ुरआ़न की तिलावत कम से कम एक रूकूअ़ तसलसुल के साथ ज़रूर करेंगे और अपने घरों को क़ुरआ़न की तिलावत से शाद व आबाद रखेंगे और घर के हर छोटे बड़े अफ़राद को क़ुरआ़न की तालीम की तरग़ीब देंगे। हर मुसलमान बाद नमाज़े इशा सोने से पहले सूरह मुल्क अपने घर के हर छोटे बड़े अफ़राद के साथ पढ़ने का ख़ास एहतिमाम करे। अगर पढ़ना नहीं जानते तो क़ुरआ़न ख़्वान्दा से पढ़वाकर सुनें, सूरह मुल्क पढ़ने की बड़ी बरकतें और रह़मतें हैं।

अल्लाह हमें क़ुरआ़न की तिलावत और उसका अदब व एह़तिराम और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और क़ुरआ़न की तालीम को घर आम करने की तौफ़ीक़ फ़रमाये और फ़ैज़ाने क़ुरआ़न से तमाम मोमिनीन, मोमिनात को मुस्तफ़ीज़ फ़रमाये। (आमीन)

★ उस्तादः जामिआ़ अह़सनुल बरकात
फ़तहपुर (यूपी)

निकाह और फ़िक्रे मआ़शः इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र से

मर्द व औरत का जिन्सी ताल्लुक़ इन्सानी ज़िन्दगी बाक़ी रखने के लिये बुनियाद है। इसलिए इसे न तो नज़र अन्दाज़ किया जा सकता है और न यूँ ही बे-हंगम, बे-निज़ाम छोड़ा जा सकता है वरना इन्सानी मुआ़शरे का निज़ाम बिगड़ जायेगा और समाज में तरह तरह के फ़ितने उठेंगे।

मज़हबे इस्लाम ने इस इन्सानी ज़रूरत पर भरपूर तवज्जोह दी और मर्द व औरत के जिन्सी मिलाप के लिये ऐसा क़ाबिले तक़लीद नमूना पेश किया, जिससे मर्द व औरत की जिन्सी ज़रूरत भी पूरी हो जाती है। इन्सानी ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त का मसला भी हल हो जाता है। समाजी निज़ाम भी सलामत रहता है और मर्द व औरत के हुक़ूक़ की हिफाज़त भी हो जाती है। इस्लाम ने इस को निकाह का नाम दिया है। आइये सबसे पहले निकाह के बारे में कुछ अहम बातें जानते हैं।

निकाह का लुग़वी व शरई मतलबः लिसानुल अ़रब में है कि निकाह का माना अमले इज़्दवाज है। यानी मर्द व औरत का हम बिस्तर होना। और तज़व्वुज़ यानी शादी को भी निकाह कहते हैं।

शरीअ़त में निकाह उस अक़्द को कहते हैं जो इसलिए मुक़र्रर किया जाता है कि मर्द व औरत का एक दूसरे से सोहबत और क़ुरबत करना ह़लाल हो जाये।

निकाह का हुक्मः फ़िक़्हे ह़न्फ़ी की मशहूर किताब ''रद्दुल मोहतार'' मे है कि निकाह करना वाजिबुल ऐन है। इस सिलसिले में फ़र्ज़ और सुन्नते मोअक्कदा का क़ौल भी मिलता है। इन सबके दरमियान मुताबकत इस तरह दी जाती है कि अगर किसी को इस बात का यक़ीन है कि निकाह न करने की सूरत में वह गुनाह कर बैठेगा तो निकाह करना उस पर फ़र्ज़ है। अगर गुनाहों से आलूदा होने का यक़ीन तो न हो लेकिन गुमाने ग़ालिब हो तो निकाह करना वाजिब है और अगर ऐसी कोई बात न हो तो निकाह करना सुन्नते मोअक्कदा है।

इसी तरह अगर यक़ीन है कि हक़ूके ज़ौजियत (शौहर होने का हक़) अदा नहीं कर सकेगा या बीवी पर ज़ुल्म करेगा तो निकाह करना ह़राम है और ऐसी बातों के होने का गुमाने ग़ालिब हो तो निकाह करना मकरूहे तह़रीमी है। (रद्दुल मोहतारः जि० 2, पे० 283)

शादी के ताल्लुक़ से फ़िक्रे मआ़श और इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़रः आज हमारे मुआ़शरे का एक आम मिज़ाज यह बन गया है कि लड़कों के माँ-बाप या सरपरस्त उनकी शादी के हवाले से यह सोच रखते हैं कि लड़के जब अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे। बरसरे रोज़गार हो जायेंगे और किसी अच्छी मुलाज़मत या कामयाब तिजारत से वाबस्ता हो जायेंगे तब उनकी शादी करेंगे और लड़कियों की शादी के बारे में यह फ़िक्र रखते हैं कि कोई रोज़गार, नौकरी और पैसे वाला लड़का मिलेगा तो उनकी शादी करेंगे।

माँ-बाप और सरपरस्त अपनी इस फ़िक्र के नतीजे में अपने लिहाज़ से मुनासिब वक़्त का इन्तेज़ार करते रहते हैं और उधर लड़कों और लड़कियों की जवानी का क़ीमती वक़्त गुज़रता रहता है। यहाँ तक कि

उनकी उम्र अच्छी ख़ासी हो जाती है, बल्कि कुछ की उम्र तो ढलने लगती है और अब मुनासिब रिश्ता तो क्या कोई भी रिश्ता मिलना मुश्किल हो जाता है।

कुछ माँ-बाप और सरपरस्त अपने इस नज़रिये में इतने ढीट और ज़िद्दी होते हैं कि अपने बच्चों के जज़्बात और उनकी ख़्वाहिशात को बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर देते हैं। लड़कियाँ चाहती हैं कि किसी शरीफ़ लड़के से उनकी शादी कर दी जाये, चाहे वह मालदार न हो, लेकिन माँ-बाप अमीर लड़के की चाहत में लड़कियों की इस ख़्वाहिश को नज़र अन्दाज़ कर देते हैं और उन्हें ज़ेहनी तकलीफ़ में मुब्तला रखते हैं और फिर एक वक़्त वह आता है कि कोई मुनासिब रिश्ता नहीं मिलता और अब वह लड़की को बोझ समझने लगते हैं और उधर लड़की जिस अज़ीयत व परेशानी से गुज़र रही होती है वह ना-क़ाबिले बयान है।

इसी तरह बहुत से लड़के जो किसी बड़ी पोस्ट या बड़े कारोबार से जुड़े नहीं होते वह चाहते हैं कि मुनासिब उम्र में उनकी शादी हो जाये, लेकिन उनके माँ-बाप इस उम्मीद पर शादी टालते रहते हैं कि पहले बेटा बड़ी नौकरी हासिल कर ले या बड़ा कारोबार करने लगे, फिर शादी करेंगे और इस तरह उनकी शादी में देर करते रहते हैं। ऐसे माँ-बाप और सरपरस्तों को मालूम होना चाहिए कि उनका यह रवय्या उनके बच्चों के हक़ में शरई, तिब्बी और जिन्सी नुक़्ता-ए-नज़र से निहायत ख़तरनाक है। उनके इस अमल से बच्चे बिगड़ सकते हैं, बद किरदारी में मुब्तला हो सकते हैं, दिमाग़ी और जिस्मानी मर्ज़ के शिकार हो सकते हैं और मज़हबी ऐतेबार से गुमराह हो सकते हैं।

ज़रा नज़र उठाकर अपने समाज का जाईज़ा लें, बहुत से नौजवान ऐसे मिल जायेंगे जो शादी की उम्र को पहुँच चुके हैं और शादी न होने की वजह से जिन्सी बे राह रवी के शिकार हैं। लड़कियों से छेड़ छाड़ और आबरू रेज़ी जैसे वाक़्यात इसका नमूना हैं। शादी में देरी की वजह से लड़कियों में जो बुराईयाँ आई हैं वह भी कम नहीं हैं। मुनासिब उम्र पर शादी न करने के ख़तरनाक नतीजे आये दिन हमारे सामने आते रहते हैं।

इसलिए औलाद की शादी के हवाले से अपनी ग़लत सोच छोड़ दीजिए और इस्लामी नज़रिया इख़्तियार कीजिए। इस्लाम यह कहता है कि औलाद शादी की उम्र को पहुँच जाये तो उसकी शादी कर दी जाये और रोज़ी रोटी के ऐतबार से उनकी ख़ुशहाली का मसला अल्लाह को सोंप दिया जाये। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से और शादी की बरकत से उसे ग़नी (मालदार) फ़रमा देगा। शादी के हवाले से क़ुरआ़न का नुक़्ता-ए-नज़र यही है।

इरशादे रब्बानी हैः और निकाह कर दो अपनों में उनका जो बे-निकाह हों, और अपने लायक़ बन्दों और कनीज़ों का। अगर वह फ़क़ीर होंगे तो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा। अल्लाह वुसअ़त वाला, इल्म वाला है। (सूरह नूरः आयत 32)

देखो क़ुरआ़न ऐलान कर रहा है कि तुम्हारा काम है सिर्फ़ औलाद की शादी कर देना। उन्हे रोज़गार देना, ग़नी करना तुम्हारा काम नहीं है। उन्हें ग़नी करना, ख़ुशहाल ज़िन्दगी देना अल्लाह का काम है और अल्लाह शादी की बरकत से उन्हें ग़नी फ़रमा देगा।

जब अल्लाह साफ़-साफ़ इरशाद फ़रमाता है कि हम अपने फ़ज़्ल से शादी शुदा जोड़े को ग़नी कर देंगे तो फिर एक मुसलमान क्यों अपनी औलाद की शादी में देरी करता है? क्यों उनके ग़नी हो जाने का इन्तेज़ार करता है? बाक़ी पेज न० 42 पर देखें!

खाने पीने के इस्लामी आदाब व अहकाम

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इन्सानों को पैदा किया तो उन्हें ज़िन्दगी जीने का सलीक़ा सिखाने के लिये अम्बिया-ए-किराम और रसूलाने ऐज़ाम को इस दुनिया में भेजा। जो हर क़दम पर लोगों की रहनुमाई करते रहे। हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि ''मैं मुअ़ल्लिम (सिखाने वाला) बनकर भेजा गया हूँ। आपने मुसलमानों को ज़िन्दगी जीने का इस्लामी तरीक़ा बयान फ़रमाया। और ख़ुद उन्होंने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी। उठने बैठने, चलने फिरने का जैसा तरीक़ा क़ुरआ़न पाक और ह़दीस पाक में बताया गया, उसी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का हुक्म दिया।

अब खाने पीने के ताल्लुक़ से कुछ अह़ादीसे करीमा मुलाहज़ा फ़रमायें:

हज़रत अबू हुमैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर ﷺ को फ़रमाते हुए सुना कि ''मैं टेक लगाकर नहीं खाता।'' (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः तुममें से हर एक को चाहिए कि दाहिने हाथ से खाये पिये। और दाहिने हाथ से ले और दे। इसलिए कि शैतान बायें हाथ से खाता-पीता है और बायें हाथ से ही लेता-देता है। (इब्ने माजा)

बायें हाथ से खाने-पीने पर वईदें: एक शख़्स ने हुज़ूर ﷺ की मुक़द्दस बारगाह में बायें हाथ से खाना शुरू किया। आक़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः दाहिने हाथ से खाओ। उसने कहाः मैं दाहिने हाथ से नहीं खा सकता। नबी-ए-पाक ﷺ ने फ़रमायाः अब तू कभी भी दाहिने हाथ से नहीं खा पायेगा। रावी कहते हैं कि उसने तकब्बुर की वजह से ऐसा कहा और हुज़ूर का फ़रमान न माना। इसी वजह से आक़ा ﷺ ने उससे फ़रमाया कि तू अब दाहिने हाथ से नहीं खा पायेगा। रावी कहते हैं कि फिर कभी उसका हाथ मुँह तक पहुँचा ही नहीं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने खड़े होकर पानी पीने से मना किया है। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया कि हुज़ूर ﷺ ने खड़े होकर पानी पीने से मना फ़रमाया। हज़रत क़तादा कहते हैं: मैंने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछाः खाना खाने के मुताल्लिक़ क्या हुक्म है? फ़रमायाः खड़े होकर खाना खाना तो पानी पीने से ज़्यादा बुरा है। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हुज़ूरे अक़्दस ﷺ को फ़रमाते सुनाः कोई भी शख़्स खड़े होकर हरगिज़ पानी न पीये। और जो खड़े होकर पी ले तो क़ैय (उल्टी) कर दे। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया कि हुज़ूर ﷺ ने एक शख़्स को खड़े होकर पीते देखा। आपने उससे फ़रमायाः क़ैय कर दे। उसने अर्ज़ कीः मैं क़ैय क्यों कर दूँ? आक़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः क्या तू यह पसन्द करेगा कि बिल्ली तेरे साथ पिये? उसने अर्ज़ कीः या रसूलल्लाह! मैं यह पसन्द नहीं कर सकता। तब आपने फ़रमायाः तेरे साथ उसने पिया है जो बिल्ली से ज़्यादा बुरा है और वह शैतान है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया कि हुज़ूर ﷺ ने ज़मज़म शरीफ़ खड़े होकर पिया। (मुस्लिम शरीफ़)

बुख़ारी शरीफ़ की शरह फ़तहुल बारी में हज़रत अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी रज़ियल्लाहु अ़न्हु और मुस्लिम शरीफ़ की शरह में हज़रत इमाम नववी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने खड़े होकर पानी पीने या खड़े होकर खाना खाने के जाईज़ होने और नाजाईज़ होने के मुताल्लिक़ दोनों तरह की ह़दीसें बयान करने के बाद नतीजे के तौर पर फ़रमाते हैं। सही यह है कि खड़े होकर खाने पीने वाली अह़ादीस कराहत पर मह़मूल हैं और जिन अह़ादीस से खड़े होकर खाना-पीना साबित है। वह जाइज़ होने के बयान करने के लिये है। लिहाज़ा दोनों क़िस्म की ह़दीसों में कोई टकराव नहीं है।

खाना खाने के आदाब

ह़दीसः नबी-ए-पाक ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः बिस्मिल्लाह पढ़ो और दाहिने हाथ से खाओ और बर्तन के उस तरफ़ से खाओ जो तुम्हारे क़रीब है।

जब खाना खाओ तो दाहिने हाथ से और जब पानी पियो तो दाहिने हाथ से पियो।

नबी-ए-पाक ﷺ ने उँगलियों और बर्तन के चाटने का हुक्म दिया और यह फ़रमाया कि तुम्हें मालूम नहीं कि खाने के किस ह़िस्से में बरकत है।

हुज़ूर ﷺ ने खाने और पीने की चीज़ों में फूँकने से मना फ़रमाया है। जब लुक़मा गिर जाये तो साफ़ करके खाओ, उसे शैतान के लिये न छोड़ो।

इकट्ठे होकर खाओ अलग न खाओ कि जमाअ़त (यानी एक साथ खाने) में बरकत है।

पानी पीने के आदाब

ह़दीसः सरकारे दो आलम ﷺ पानी पीने में तीन बार साँस लेते थे और यह भी फ़रमाते थे कि इस तरह पीने में ज़्यादा सैराबी होती है और सेहत के लिये मुफ़ीद और ख़ुश गवार है।

एक साँस में पानी न पियो, जैसे ऊँट पीता है। बल्कि दो और तीन मर्तबा में पियो, और जब पियो तो बिस्मिल्लाह कह लो और जब बर्तन को मुँह से हटाओ तो अल्लाह की ह़म्द (अलह़म्दुलिल्लाह) करो। पानी की सुन्नतों में से है कि पानी देखकर पिया जाये।

यह खाने पीने के आदाब व मसाइल बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 से लिये गए हैं।

एक मुसलमान की ह़ैसियत से हमारा तर्ज़े ज़िन्दगी हुज़ूर अक़्दस ﷺ के इरशादात के मुताबिक़ होना चाहिए, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब क़ुरआ़न मजीद के साथ अपने सबसे प्यारे और आख़िरी नबी हज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को हमें ज़िन्दगी जीने का सलीक़ा सिखाने के लिये इस दुनिया में भेजा। लिहाज़ा इन्सान की ज़िन्दगी का कोई ह़िस्सा ऐसा नहीं जिसे आक़ा अलैहिस्सलाम ने अमली तौर पर करके न दिखाया हो। लिहाज़ा खाने पीने के मुताल्लिक़ हुज़ूर के इरशादात की तशरीह़ से यह वाज़ेह होता है कि हुज़ूर का बैठकर ही खाने पीने का हमेशा का मामूल था।

अइम्मा व मुह़द्दिसीन ने खड़े होकर खाने-पीने को मकरूह फ़रमाया है, जबकि बैठकर खाना पीना हुज़ूरे अकरम ﷺ का हमेशा का और पसन्दीदा अमल रहा है। इसलिए हमें खाने पीने में इस्लामी आदाब का ख़्याल रखना चाहिए। इसी में दुनिया और आख़िरत की कामयाबी है। ★★★

उस्तादः जामिआ़ अह़सनुल बरकात,
मारहरा शरीफ़, एटा, (यूपी)

मज़हबे इस्लाम में औरतों पर एह़सानात

इस्लाम अल्लाह का पसन्दीदा मज़हब है। अल्लाह का इरशादे गिरामी है: ''बेशक अल्लाह के यहाँ इस्लाम ही दीन है।'' (सूरह आले इमरानः 19)

इस्लाम के अलावा कोई भी दीन अल्लाह की बारगाह में मक़बूल नहीं। फ़रमाने बारी तआ़ला है: ''और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वह हरगिज़ उससे क़ुबूल न किया जायेगा और वह आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में से है।'' (सूरह आले इमरानः 85)

और इस्लाम की शान यह है: ''अल्लाह की डाली हुई बुनियाद जिस पर लोगों को पैदा किया, अल्लाह तआ़ला की बनाई चीज़ न बदलना, यही सीधा दीन है मगर बहुत लोग नहीं जानते।'' (सूरह रूमः 30)

इस्लाम दीने फ़ितरत है इसमें अल्लाह तआ़ला ने हर एक को उसके फ़ितरी तक़ाज़ों के मुताबिक़ हुक़ूक़ और फ़राइज अता फ़रमाये हैं। क़ानूने ख़ुदा वन्दी है: ''अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता, मगर उसकी ताक़त भर।'' (सूरह बक़रहः 286)

इस तमहीद के बाद अर्ज़ है कि अल्लाह तआ़ला की नेमतें तो इस क़द्र हैं कि फ़रमाने बारी तआ़ला है: ''और अगर अल्लाह की नेमतें गिनों तो शुमार न कर सकोगे।'' (इब्राहीमः 34)

इस तनाज़ुर में देखें कि अल्लाह तआ़ला ने औरतों को क्या क्या शर्फ़ व मक़ाम और मर्तबे अता फ़रमाये हैं जो सिर्फ उन्हीं के साथ ख़ास हैं कि दूसरों के पास नहीं। हम शुरूआ़त औरत की पैदाइश से करते हैं:

इमाम सुयूती जामेअ़ सग़ीर में हज़रत वासिला इब्ने असक़अ़ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: ''यह बात औरत के मुबारक होने की निशानी है कि उसकी पहली औलाद बेटी हो, क्या तुमने अल्लाह तआ़ला का यह फ़रमान नहीं सुना कि अल्लाह तआ़ला ने बेटों से पहले बेटियों का ज़िक्र फ़रमाया।'' (मकामुल अख़्लाक़ः 213)

एक और रिवायत बयान की जाती है जिसका मफ़हूम कुछ यहूँ है: ''जब कोई लड़का पैदा होता है तो अल्लाह पाक फ़रमाता है: ''जाओ और अपने वालिद की मदद करो'' और जब कोई लड़की पैदा होती है तो अल्लाह अ़ज़्ज व जल फ़रमाता है: ''जाओ तुम्हारे वालिद की मदद मैं करूँगा।''

यह मिज़ाज, हौसला और मर्तबा इस्लाम ने दिया वरना लोगों का हाल तो यह था जैसा कि क़ुरआ़न में है: ''और जब उनमें किसी को बेटी होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर उसका मुँह काला रहता है और वह ग़ुस्सा खाता है, लोगों से छुपता फिरता है इस बशारत की बुराई के सबब, क्या उसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा, अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं।'' (सूरह नह़लः 58,59)

फिर तर्बियत का मरहला आता है उसके बारे में इस्लामी तालीमात और हौसला अफ़ज़ा इरशाद मुलाहज़ा हों:

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: ''जिसने दो

बेटियों की (दूसरी ह़दीस में एक बेटी पर भी फ़ज़ीलत बयान की गई है) परवरिश की तो मैं और वह शख़्स जन्नत में इस तरह दाख़िल होंगे जिस तरह यह दोनों उँगलियाँ मिली हुई हैं।'' (तिर्मिज़ीः 1914)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः ''जो शख़्स लड़कियों की परवरिश करता हो फिर उनकी परवरिश में आने वाली मुसीबतों पर सब्र करे तो यह सब लड़कियाँ उसके लिये जहन्नम से आड़ बनेंगी।'' (तिर्मिज़ी शरीफ़ः 1913)

सिर्फ बेटी ही नहीं बल्कि बहन की तर्बियत पर भी फ़ज़ीलत वारिद हैः ''जिस शख़्स की तीन बेटियाँ या तीन बहनें हों, या दो बेटियाँ या दो बहनें हों और वह उनके साथ अच्छा सुलूक करे और उनके मामलो में अल्लाह तआ़ला से डरे तो उसके लिये जन्नत है।'' (मुस्लिम शरीफ़ः 1916)

परवरिश और शादी के बाद बेटी एक बीवी की सूरत इख़्तियार करती है। इसके बारे में हुज़ूरे अकरम ﷺ का इरशादे गिरामी मुलाहज़ा फ़रमायेंः ''दुनिया बरतने की चीज़ और दुनिया की सबसे अच्छी चीज़ नेक बीवी है।'' (मुस्लिम शरीफ़ः 1467)

और दूसरी जगह इरशाद फ़रमायाः तुममें बेहतरीन लोग वह हैं जो अपने घर वालों के लिये अच्छे हों और मैं तुममें सबसे ज़्यादा अपने घर वालों के लिये अच्छा हूँ।'' (सुनन् इब्ने माजाः 2053)

फिर एक बेटी जब माँ बनती है तो अल्लाह तआ़ला ऐसा मक़ाम अता फ़रमाता है जो क़ाबिले रश्क है। फ़रमाने रसूलल्लाह ﷺ हैः ''जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है (यानी जन्नत माँ की ख़िदमत से हासिल होती है)।'' (सुनन् निसाई, इब्ने माजा, मुस्नदे अह़मद)

और ब-हैसियत माँ, एक औरत की ख़िदमत को इस्लाम में कितनी अहमियत दी गई है इसका अन्दाज़ा नीचे रिवायत से करेंः

हज़रम मुआ़विया बिन जाहमा से रिवायत है किः ''एक शख़्स हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ कीः या रसूलल्लाह! मैं जिहाद करना चाहता हूँ और आपसे मशवरे के लिये हाज़िर हुआ हूँ। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमायाः ''क्या तुम्हारी वालिदा बा ह़यात हैं?'' अर्ज़ कीः जी हाँ! इरशाद फ़रमायाः ''जाओ उनकी ख़िदमत करो कि जन्नत उनके क़दमों के नीचे है।''

औरतें फितरी तौर पर नाज़ुक और कमज़ोर हैं उन्हें कुछ ऐसे आरज़े भी आते हैं जो मर्दों को नहीं आते, इसकी वजह से अल्लाह ने उनके लिये आसानी रखी और अहकामात में तख़्फ़ीफ़ (कमी) फ़रमा दी।

देखिये माहवारी और पैदाइश के बाद के दिनों में नमाज़ें नहीं पढ़नी, बल्कि बाद में क़ज़ा भी माफ़, ऐसा मर्दों के साथ नहीं। मज़कूरा बाला दिनों में रोज़ों के क़ज़ा करने की इजाज़त है रोज़ा छोड़ने का गुनाह नहीं, उन्हें जिहाद में शरीक होना फ़र्ज़ नहीं, बल्कि घर बैठे जिहाद का सवाब हासिल करें, जैसा कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है किः ''औरतें हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुईं और अर्ज़ कीः ''मर्द अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद में शरीक होकर फ़ज़ीलत ले गए और हमारा तो कोई ऐसा अमल नहीं जिसे करके हम मुजाहिदीन का दर्जा पा सकें।''

हुज़ूरे अकरम ﷺ ने उनसे इरशाद फ़रमायाः ''तुममें से जो अपने घरों में ठहरी रहे वह उन मुजाहिदीन का दर्जा पायेगी जो अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद करते हैं।'' (मुस्नदुल बज़्ज़ारः 2962)

बाक़ी पेज न० 50 पर देखें!

पानी अल्लाह पाक की अनमोल नेअ़मत

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की दी हुई नेमतों, रह़मतों का तसव्वुर इन्सानी सोच से बहुत बुलन्द है। इन्सान की ज़रूरियाते ज़िन्दगी में से पानी अव्वल नम्बर पर आता है। तख़्लीक़े इन्सानी भी पानी के ज़रिया ही हुई है। (क़ुरआ़नी मफ़हूम)

पानी न सिर्फ हमारे लिये बल्कि अल्लाह की हर मख़्लूक़ के लिये ज़रूरी है। पानी सबके लिये अल्लाह का दिया हुआ अनमोल तोह़फ़ा है। इस पर किसी का क़ब्ज़ा नहीं है। इरशादे बारी तआ़ला हैः ''तो भला बतलाओ तो जो पानी पीते हो क्या तुमने इस बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले। हम चाहें तो उसे खार कर दें फिर क्यों नहीं शुक्र करते।'' (सूरह वाक़्याः आयत 78 ता 80)

उजाज उस पानी को कहते हैं जो खारा होता है, जैसे समुन्द्र का पानी। अल्लाह ने न सिर्फ पानी का ज़िक्र फ़रमाया, बल्कि शुक्र करने की तल्क़ीन भी फ़रमाई और हम पानी पीकर, इस्तेमाल करके भी उसका शुक्र नहीं कर रहे हैं। मौसमे गर्मा, शिद्दते धूप के साथ अपने सफ़र का आग़ाज़ कर चुका है। गर्मी की शिद्दत में ज़िन्दगी के हर क़दम पर पानी की ज़रूरतें इन्तेहाई शिद्दत इख़्तियार कर लेती हैं। पानी के बग़ैर भला ज़िन्दगी कैसे मुमकिन हो सकेगी।

नदियों के जाल से मालामाल हमारा मुल्क हिन्दुस्तान जिसमें 23 बड़ी नदियाँ मौजूद हैं। इसके बावजूद आज महाराष्ट्र, कर्नाटक, तिलंगाना, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, आंध्र प्रदेश तक़रीबन आधा मुल्क ख़ुश्क साली, क़हत और पानी की भयानक कमी से तड़प रहा है।

पानी की कमी का ज़िम्मेदार कौन?ः इसकी वजह है तरक़्क़ी के नाम पर बे-लगाम सनअ़त कारी। पेड़ कटने से जंगलात सिकुड़ गए, बल्कि नापैद हो गए। फैक्टरियों की गन्दगी, केमिकल मिला कचड़ा नदियों में डालकर नदियों के पानी को न सिर्फ ज़हरीला किया गया, बल्कि नदियाँ उथल हो गईं (गहराई कम हो गई)। तालाब पाट कर बिल्डिंग खड़ी कर दी गईं। अफ़सरों और लीडरों की तिजोरियाँ लबालब भर गईं। सरकार की अनदेखी, ख़्वाह किसी पार्टी की सरकार हो उसे बढ़ावा मिला और हर हुकूमत का ज़ोर इस पर रहा और आज भी है कि दुबारा भी उसकी सरकार बन जाये, ख़्वाह माहौलियात का कुछ भी हिस्सा बाक़ी न रहें। इस गोरखधंधा को बढ़ावा मिला और रोज़ बरोज़ इसमें तरक़्क़ी होती जा रही है। नतीजा सबके सामने है।

इसके लिये ख़ुद हमारी लापरवाही, आँख बन्द करके सब देखते रहना भी कम ज़िम्मेदार नहीं। इस तरफ़ हुकूमतों ने कोई ठोस कार्यवाई नहीं की और ना ही अवाम ने ही पानी की अहमियत को समझते हुए उसकी बर्बादी को रोकने की ज़िम्मेदारी मह़सूस की। और अगर हालात इसी तरह चलते रहे तो आइन्दा बूँद-बूँद पानी के लाले भी पड़ सकते हैं। क्योंकि इस हक़ीक़त से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अल्लाह की क़ुदरत में दख़ल अन्दाज़ी हमेशा नुक़सान का ही

सबब रही है। हमारा मुल्क पिछले एक दहाई से ख़ुश्क साली और मौसम की मार झेल रहा है। कई रियासतों में हालात इन्तेहाई अबतर हो चुके हैं। एक तरफ पानी पीने को नहीं तो दूसरी जानिब खेती भी नहीं हो रही है। कई सालों से धान, कपास, बाजरा वग़ैरह की पैदावार बहुत मुतास्सिर है, जिससे मुल्की हालात भी कमज़ोर हो रहे हैं। हमारी रियासतें, हमारा मुल्क पानी की हिफ़ाज़त में नाकाम नज़र आ रहा हैं। इस ख़ुश्क साली में भी ज़मीर फ़रोश पानी के ठेकेदारों की चाँदी है। NDTV के रिपोर्टर रविश कुमार के मुताबिक़ लातूर की ख़ुश्क साली में भी यह 5 से 7 लीटर पानी 2 से 3 रूपये में बेच रहे हैं और एक अन्दाज़े के मुताबिक़ इस ख़ुश्क साली में हर रोज़ 50 लाख का पानी बेचा जा रहा है। यह वक़्त है जब लातूर नगर निगम और रज़ाकार तन्ज़ीमों, जमाअ़ते इस्लामी, रज़ा अकेडमी वग़ैरह के 150 टैंकर मुफ़्त पानी तक़सीम कर रहे हैं। ट्रेनों से अलग पानी भेजा जा रहा है। लातूर, मराठवाढ़ा, तिलंगाना वग़ैरह की ख़ुश्क साली ने यह बता दिया है कि पानी के बिना ज़िन्दगी का तसव्वुर नामुमकिन है। हमें इसके बारे में सोचना होगा।

तरक़्क़ी चाहिए या पानीः अगर पानी चाहिए तो तरक़्क़ी के बारे में पानी को मद्दे नज़र रखकर मन्सूबा बनाना होगा। पेड़ उगाने होंगे, तालाब ज़मीन पर बनाने होंगे। (कागज़ और फ़ाइलों में नहीं) नदियों को ज़िन्दगी देने के लिये सबको मिलकर काम करना होगा। तब ही यह नज़्म गा सकेंगे। ''मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है।'' और साथ में यह भी गुनगुना सकेंगे कि ''पानी होगा तभी ज़िन्दगानी होगी'' जो चीज़ जितनी क़ीमती होती है उसकी इज़्ज़त व क़द्र भी उतनी करनी पड़ती है। नेमतों की इज़्ज़त न करना नेमतों के ख़ातमे का सबब बनता है। अज़ाबे इलाही किसी क़ौम पर बिला वजह नहीं आता। अल्लाह ने बनी इस्राईल को बे-शुमार नेमतों से नवाज़ा और सबसे ज़्यादा दौलत अता फ़रमाई थी, पर नेमतों की इज़्ज़त न करने की वजह से अल्लाह ने बनी इस्राईल पर क़ह़त साली, ग़रीबी व तंगदस्ती मुसल्लत कर दी, उनकी बद-आमालियों की वजह से बनी इस्राईल प्यास से तड़पने लगे तो मूसा अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में पानी के लिये दुआ़ फ़रमाई हुक्म हुआ, फ़लाँ पत्थर पर अपना असा (लाठी) मारो।

तर्जुमाः ''और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हमने फ़रमाया उस पत्थर पर अपना असा (लाठी) मारो। फ़ौरन उसमें से बारह चश्मे बह निकले। हर गिरोह ने अपना घाठ पहचान लिया। खाओ और पियो ख़ुदा का दिया हुआ और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ।'' (सूरह बक़रहः आयत 59 ता 42)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐसा ही किया और बारह चश्मे फूट निकले और सबने पानी पिया। पानी की कमी दूर हो गई। पादरी डेन स्टेले (Dean Staley) ने अपनी किताब Sinal Palestine में पूरी तफ़सील लिखी है। (जीवश इन्साईक्लोपीडिया, जि० 10, पे० 151, तफ़सीरे माजदीः पे० 37, 38, तफ़सीरे ज़ियाउल क़ुरआ़न, जि० 1, पे० 40, 41)

सह़ाबा-ए-किराम व ताबईन-ए-एज़ाम और बुज़ुर्गाने दीन के यहाँ पानी का इस्तेमाल बहुत एह़तियात से किया जाता था और पानी के एह़तियात के बारे में बहुत से अक़वाल पाये जाते हैं। पानी की अहमियत, पानी की क़द्र व क़ीमत के लिये क़ुरआ़न व अह़ादीस का

बयान ही काफ़ी है। एक सबक़ आमोज़ वाक़्या पेश किया जाता है।

बादशाह हारून रशीद एक मर्तबा शिकार के पीछे चलते चलते रास्ता भटक गए। जंगल मे प्यास से बे-चैन हो गए। चलते-चलते एक झोंपड़ी नज़र आई, वहाँ पहुँचे झोंपड़ी वाले से कहा पानी पिलाओ, उसने पानी दिया जैसे ही बादशाह हारून रशीद ने पीना चाहा तो उस शख़्स ने कहाः अमीरूल मोमिनीन! ज़रा एक लम्हे के लिये ठहरिये, पहले यह बतायें कि यह पानी जो इस वक़्त आपको दे रहा हूँ उसकी आप क्या क़ीमत देंगे। हारून रशीद ने कहा प्यास से मेरी जान जा रही है। मैं एक गिलास के बदले अपनी आधी हुकूमत देने को तैयार हूँ। बादशाह हारून रशीद ने जल्दी से वह पानी पी लिया। फिर झोंपड़ी वाले ने सवाल कियाः अगर यह पानी पेशाब की सूरत में रह जाये, पेशाब न हो तो आप क्या करेंगे? तो हारून रशीद ने कहाः उसके इलाज में आधी हुकूमत दे दूँगा। आप अन्दाज़ा लगायें दिन में कितने गिलास पीने और बाहर निकालने की सूरत में यह नेमत हम आपको मिलती हैं। कभी आपने ग़ौर किया है कि अल्लाह तआ़ला ने कितनी बड़ी नेमत दे रखी है और हम कितना शुक्रिया अदा करते हैं और पानी जैसी अनमोल नेमत को बचाने के लिये क्या कर रहे हैं। हर शख़्स अपना मुहासबा करे और ज़रूर अपनी सोच और ताक़त भर तवज्जोह से काम करे। आज कल गर्मी के दिन चल रहे हैं। दर्जा-ए-ह़रारत इस क़द्र बढ़ा हुआ है कि न दिन को चैन मिल रहा है, न रात को सुकून। माहेरीन बराबर टी०वी चैनलों पर बहस कर रहे हैं और बता रहे हैं कि आने वाले सालों में इससे आगे टेम्प्रेचर 50 Degree पार कर जायेगा। AC और पंखे नाकाम हो जायेंगे। पिछले 10 सालों में दस करोड़ों पेड़ काटे गए हैं, सड़कें चौड़ी करने और हाईवे (Highways) बनाने के लिये सिर्फ जमशेदपुर से रांची जाने वाली सड़क को फ़ोर लेन बनाने, चौड़ी करने के लिये अब तक 2840 पेड़ काट दिये गए हैं और आगे भी यह सिलसिला चलेगा। क़ुदरत के अनमोल ख़ज़ाने को बर्बाद किया जा रहा है। तरक़्क़ी के नाम पर इन दस सालों में एक लाख पेड़ भी नहीं लगाये गए, ना ही लोगों की जानिब से और न सरकार की जानिब से। हर आदमी हाथ पर हाथ धरे बैठा है कि सरकार कुछ करे। ख़ुदारा सरकार के भरोसे न रहें। मुल्क को ठण्डा रखना है, पानी बचाना है तो हर आदमी को कम से कम एक पेड़ ज़रूर लगाना है। अपने लाडले बेटे के लिये उसके भविष्य के लिये जब हवा ही साफ़ नहीं रहेगी और पानी ही नहीं बचेगा तो बच्चा कहाँ सांस लेगा और क्या पियेगा। सोचना चाहिए आपको तरक़्क़ी चाहिए या ज़िन्दगी। ज़िन्दगी चाहिए तो आज ही उठ खड़े हों। हर शख़्स अपनी ज़िम्मेदारी निभाये। बचाव का काम करना शुरू कर दें न कि सिर्फ बातें करते रहें। क़ुदरत का अनमोल रत्न पानी जो बिला क़ीमत अल्लाह अपनी मख़्लूक़ को अता फ़रमा रहा है।

तर्जुमाः " और हमने उतारा आसमान से पानी अन्दाज़े के मुताबिक़ फिर उसे ज़मीन में ठहराया और बेशक हम उसके ले जाने पर पूरी तरह क़ादिर हैं। (सूरह मोमिनूनः आयत 18)

अगर बारिश का पानी आने वाले कल के लिये मह़फ़ूज़ कर लिया जाये तो कोई एक किसान भी पानी पानी कहता हुआ जान न दे। बारिश का 65 फ़ीसद पानी हमारी लापरवाही से बर्बाद हो जाता है।

इसका मतलब यह है कि हम अल्लाह तआ़ला की दी हुई सस्ती मगर क़ीमती नेमत पानी का सिर्फ 35 फ़ीसद हिस्सा काम में लाते हैं। जिन तलाबों को हमने पाट कर बड़ी बिल्डिंग और फ़्लेट बड़े बड़े मॉल (Mall) खड़े कर दिये हैं उनकी तो वापसी मुमकिन नहीं लेकिन जिन तालाबों को पाट कर खेती शुरू कर दी और जो तालाब छोटे और उथले हो गए हैं, उनको फिर से तालाब बना लिया जाये। तालाबों को भरकर फील्ड बनाई जा रही हैं। बड़े-बड़े डेम के चक्रव्यू में न पड़ कर फिलहाल हर गाँव में एक बहुत बड़ा तालाब बनाना होगा ताकि क़ुदरत की दी हुई नेमत बारिश के पानी को जमा किया जा सके। बारिश का पानी क़ुदरत का तोहफ़ा है।

तोहफ़े की इज़्ज़त सब करते हैं पर यह बिला क़ीमत मिलता है तो उसकी क़द्र नहीं करते। ना-क़द्री की वजह से सूखे का अज़ाब झेलना पड़ रहा है। लाखों लाख इन्सान और जानवर तड़प रहे हैं। अगर अब भी हमें अक़्ल नहीं आई तो कब आयेगी। अभी तो क़ुदरत के अज़ाब से कराह रहे हैं। फिर अवाम के ग़ुस्से का भी शिकार होना पड़ेगा। पानी बचाने की जो भी तदबीरें मुमकिन हों वह अमल में लाई जायें। घरों में पानी का इस्तेमाल एहतियात से करें। अहले इल्म हज़रात, प्रोफ़ेसरान, टीचर्स, उलमा-ए-किराम मस्जिदों में जुमा के ख़ुतबात में पानी की अहमियत और पानी बर्बाद करने के नुक़सानात को क़ुरआ़न व अह़ादीस, सह़ाबा-ए-किराम, बुज़ुर्गाने दीन और सांइस की रौशनी में बतायें। हुकूमतें पानी बर्बाद करने वालों पर जुर्माना आइद करें और पानी बर्बाद करने वालों को तम्बीह करें, स्कूल, कॉलेज और मदरसा के तलबा के ज़रिये मुहिम चलाई जाये, घर घर जाकर पानी बचाओ, जिन्दगी बचाव की मुहिम चलायें। जो भी बन पड़े पानी बचाने के लिये करें यह हर इन्सान की अख़्लाक़ी ज़िम्मेदारी है। अगर हम इस ज़िम्मेदारी से कन्नी काटेंगे तो याद रखें नुक़सान सभी उठायेंगे। अल्लाह हम सबको समझने और अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। (आमीन) ★★★

★ hhmhashim786@gmail.com

पेज न० 34 का बाक़ी!

क्या मुसलमान को क़ुरआ़न पर और अल्लाह के इरशाद पर भरोसा नहीं रहा? या उसका ईमान कमज़ोर हो गया है? या उसको क़ुरआ़न का यह पैग़ाम मालमू ही नहीं है?

कुछ भी हो यह एक मुसलमान की सख़्त कोताही है जिसकी वजह से मुआ़शरा तबाह हो रहा है, नस्लें बिगड़ रही हैं और उनकी दुनिया व आख़िरत ख़राब हो रही है। इसलिए मुसलमानों को बेदार होने की ज़रूरत है, अपने बच्चों की ज़िन्दगी बचाने की ज़रूरत है। मुआ़शरे को बिगड़ने से बचाने की ज़रूरत है और अल्लाह पर भरोसा करते हुए इस्लामी अह़कामात पर अमल करने की ज़रूरत है।

आइये! आज अहद करते हैं कि अपने बच्चों के मुस्तक़बिल की फ़िक्र करेंगे, मुनासिब उम्र में कोई अच्छा रिश्ता देखकर उनकी शादी कर देंगे और उनकी ख़ुशहाली और रोज़ी-रोटी का मामला अल्लाह के सुपुर्द कर देंगे और कोशिश भी करेंगे। यह यक़ीन रखेंगे अल्लाह हमें हमारी नियतों का अज्र ज़रूर अता फ़रमायेगा। इंशाअल्लाह! ★★★

★ उस्तादः अल-जामिअतुल अशरफ़िया
मुबारकपुर, आज़मगढ़, (यूपी)

लॉकडाउन, मदारिसे इस्लामिया और हमारी ज़िम्मेदारियाँ

कोरोना वायरस के तेज़ी से बढ़ते हुए ख़तरात और उसके ह़ालिया क़हर को देखते हुए हिन्दुस्तान में लॉकडाउन किया गया। समाजी दूरी को बहाल करने के लिये फैक्ट्ररियाँ बन्द हुईं, कारख़ानों में ताले लटका दिये गए, आने-जाने का निज़ाम ठप पड़ा है। इस बीमारी ने कमी और बेशी के साथ सबको मुतास्सिर किया है। लेकिन दिहाड़ी मज़दूरों की ज़िन्दगी सबसे ज़्यादा असर अन्दाज़ हुई है। गाँव देहात से लेकर शहर के बाज़ार तक हर कोई कोरोना के दर्द से कराह रहा है। बाज़ारों में सन्नाटा पसरा हुआ है, बड़ी बड़ी कम्पनियाँ और कारखाने मातम कदा में तब्दील हो चुके हैं। मालदार और कारोबारी अपनी बर्बादी के क़िस्से सुना रहे हैं। इस ख़तरनाक वबा ने सिर्फ इन्सानियत ही पर अपने ज़हर आलूद पंजे नहीं गाड़े बल्कि इसकी वजह से देश की अर्थ व्यवस्था में भी भारी गिरवट आई है। पहले ही नोट बन्दी और जी.एस.टी की मार से बिस्मिल की तरह फड़फड़ा रही ज़ख़्मी अर्थ व्यवस्था को इस बीमारी ने आई.सी.यू. में लाकर खड़ा कर दिया है। आंकड़ों के मुताबिक़ बे-रोज़गारी ने पिछले 45 साल का रिकार्ड तोड़कर पढ़े लिखे सनद याफ़्ता नौजवानों को पकौड़े बेचने पर मजबूर कर दिया है। दूसरी तरफ नज़र उठाकर देखें तो मालूम होगा कि उसकी चपेट में फ़लाही और दीनी इदारे भी आ गए हैं। जो अपनी बर्बादी के मरसिये पढ़कर अवाम और दूसरे अहले ख़ैर हज़रात से तआ़वुन और इमदाद की अपील कर रहे हैं। अब ऐसे हालात में जहाँ हुकूमत की ज़िम्मेदारी मुल्क की बदतर अर्थ व्यवस्था को फिर से पटरी पर लाने और पढ़े लिखे नौजवानों और मज़दूरों को रोज़गार दिलाने की है वहीं पर अहले ख़ैर हज़रात की दीनी और अख़्लाक़ी ज़िम्मेदारी मुल्क के सबसे बड़े मॉइनॉरिटी तबक़ा के अफ़राद को ज़ेवरे तालीम से आरास्ता करने की है।

दर असल मामला यह है कि रमज़ानुल मुबारक ही के महीने में तमाम मदारिस अपने पूरे साल के अख़राजात का इन्तिज़ाम करते हैं, जिसके लिये मदारिस के असातिज़ा और मुख़लिसीन हज़रात चन्दे की ग़र्ज़ से हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ बड़े-बड़े शहरों का रूख़ करते हैं। जहाँ अहले ख़ैर और दौलतमन्द हज़रात से मुलाक़ात करके ज़कात व सदक़ात की रक़म वसूल करके लाते हैं और फिर उन पैसों से मदरसों में तालीम हासिल करने वाले ग़रीब तलबा व तालिबात के पूरे साल के रहने-सहने, खाने-पीने और तिब्बी सहूलियात के साथ साथ उनकी किताबों वग़ैरह का बन्दोबस्त किया जाता है। मगर इस मर्तबा लॉकडाउन और कारोबार बन्द होने की वजह से मदारिसे इस्लामिया के वजूद पर भी ख़तरों के बादल मण्डलाने लगे हैं। जिसकी वजह से अहले मदारिस अपने मदरसे के लेटर पैड पर इमदाद नामा लिखकर अहले ख़ैर हज़रात से ऑनलाइन बैंकिंग इमदाद की अपील कर रहे हैं।

मौजूदा दौर में मदारिस की अहमियत से किसे इन्कार हो सकता है। दीनी मदारिस व मकातिब का वजूद इस पुर फ़ितन दौर में बहुत ज़रूरी है। यही वह मदारिस हैं जो ग़ैरों की हज़ारों इल्ज़ाम तराशियों और बे-बुनियाद तोहमतों के बावजूद अपनी फैक्ट्रियों से लाखों की तादाद में उलमा तैयार करके मसाजिद व मदारिस को भेजते हैं। जहाँ यह जाकर दीन की ख़िदमत का फ़रीज़ा अच्छे तरीक़े से अन्जाम दे रहे हैं। लोगों को इस्लामी रंग में रंगते हैं और इस्लाह व रहनुमाई का काम करते हैं। इस्लाम के ख़िलाफ़ उठने वाली तहरिकों और प्रोपेगण्डों की पुर ज़ोर मज़म्मत करके दारूल इफ़्ता और मदरसों में बैठकर हल तलाश करते हैं। यह बात कहने में ज़र्रा बराबर भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए कि मौजूदा दौर मे जहाँ दीनी मदारिस इस्लाम के क़िले, दीन के फ़रोग़ का बेहतरीन प्लेट फ़ॉर्म हैं, वहीं पर यह फ़लाही, इस्लाही और तालीमी मराकिज़ भी हैं, जहाँ इल्म हासिल करने वालों को इल्म व हुनर से आरास्ता किया जाता है।

यह बात भी बिल्कुल दुरूस्त है कि दीने इस्लाम और अक़ीदा-ए-तौहीद व रिसालत की हिफ़ाज़त के लिये दीनी तालीम बहुत ज़रूरी है। जिस क़ौम में दीनी तालीम और इस्लामी तर्बियत का निज़ाम अहले दीन व दानिश के ज़ेरे निगरानी चलता है। वह क़ौम अपने दीन व ईमान के मामले में न सिर्फ पक्की होती है बल्कि उसके अन्दर इख़लास और लिल्लाहियत की ख़ुशबू भी ख़ूब महसूस की जा सकती है। यह बात ज़ेहन नशीं रहनी चाहिए कि ईमानियात, इबादात, हुस्ने, मामलात और अख़्लाक़ियात व समाजियात यहाँ तक कि ज़िन्दगी के किसी भी हिस्से को इस्लामी तालीमात व नुक़ूश के बग़ैर गुज़ारना मुमकिन नहीं है। इसके बग़ैर न हम अपनी ज़िन्दगी का सिस्टम बाक़ी रख सकते हैं और ना ही समाजी तरक़्क़ी की तरफ कोई मुस्बत क़दम बढ़ाने में कामयाब हो सकते हैं। गोया हम सबकी कामयाबी मदारिस और इस्लामी तालीमात की हिफ़ाज़त में पोशिदा है।

अल्लाह तआ़ला ने हम सबको बेहतरीन उम्मत बनाया है। हम को पहला सबक़ अल्लाह तआ़ला ने अपने मह़बूब ﷺ की ज़बानी ''इक़रा'' से दिया यानी पढ़िये, जिससे तालीम की अहमियत व ज़रूरत का अन्दाज़ा होता है। क़ुरआ़न पाक और ह़दीसे मुबारका में कई जगहों पर इल्म के सीखने और उसे फ़रोग़ देने के मुताल्लिक़ अह़कामात मौजूद हैं। जिनमें से यहाँ कुछ बयान करना बेहतर समझता हूँ ताकि इस तह़रीर को और बेहतर बना सकूँ। अल्लाह तआ़ला क़ुरआ़न हक़ीम मे इरशाद फ़रमाता हैः

तर्जुमाः पढ़िये! अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। पैदा किया उसने इन्सान को एक ख़ून के लोथड़े से। पढ़िये! आपका रब बड़ा करीम है, जिसने इल्म सिखाया क़लम के ज़रिये। उसने इन्सान को हर उस चीज़ का इल्म दिया जो वह नहीं जानता था। (सूरह अल-अ़लक़)

तर्जुमाः तुममें से जो लोग ईमान लाये और जिनको इल्म अता हुआ है। अल्लाह उनके दर्जात बुलन्द फ़रमायेगा और जो अमल करते हो अल्लाह उससे बा-ख़बर है। (अल-मुजादला)

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मुझे ख़ूब इल्म अ़ता फ़रमा। (सूरह ताहा)

दूसरी जगह आ़लिम की अज़मत को बयान

करते हुए यूँ बयान फ़रमाता है: ''ऐ नबी फ़रमा दीजिए! कि इल्म रखने वाले (आ़लिम) और इल्म न रखने वाले (जाहिल) बराबर नहीं हो सकते हैं। नसीह़त तो वही हासिल करते हैं जो अक़्ल वाले हैं।'' (सूरह अल-ज़ुमर)

ह़दीस पाक में पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ ने हर मुसलमान पर इल्म सीखने को फ़र्ज़ क़रार दिया है और इल्मे दीन हासिल करने वालों और पढ़ाने वालों को सबसे बेहतरीन गिरोह बताया है।

ह़दीस पाक में है: ''इल्मे दीन का हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।'' (इब्ने माजा)

दूसरी ह़दीस में है: ''जो बच्चा इल्मे दीन हासिल करने की ख़ातिर घर से बाहर निकला वह घर लौटने तक अल्लाह के रास्ते में है।'' (तिर्मिज़ी शरीफ़)

ह़दीस में है: ''अल्लाह जिस शख़्स से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ अता फ़रमाता है।'' (बुख़ारी शरीफ़)

तुममें से सबसे बेहतर वह शख़्स है जो क़ुरआ़न का इल्म सीखे और फिर उसे दूसरों को सिखाये। (बुख़ारी शरीफ़)

ऊपर ज़िक्र की गई क़ुरआ़नी आयात और अह़ादीस से जहाँ इल्मे दीन की अहमियत व ज़रूरत मालूम होती है वहीं पर इल्मे दीन सीखने और सिखाने वालों का भी मर्तबा बयान किया गया है और इल्म सीखने और सिखाने वालों को बेहतरीन उम्मत कहा गया है। क्योंकि इल्मे दीन ही से हक़ और बातिल की पहचान होती है। इसी से अल्लाह की पहचान और रसूल व नबी की रिसालत व नुबूव्वत की पहचान होती है। इसी के ज़रिये सह़ाबा-ए-किराम की अज़मत का जाम पिलाया जाता है और इसी से बुज़ुर्गों का अदब व एह़तिराम और छोटों पर शफ़क़त करने का सबक़ मिलता है।

आख़िर में एक मर्तबा फिर मैं अहले इस्लाम को उनकी अज़ीम ज़िम्मेदारी का एह़सास दिलाना चाहता हूँ कि बराये करम! दीनी मदारिस की ज़रूरत व अहमियत को मद्दे नज़र रखते हुए उनकी तरफ तवज्जोह फ़रमायें और उनकी इमदाद के लिये हाथ बढ़ाये इन गुज़ारिशात से साथ मदारिस के मुन्तज़ीमीन, असातिज़ा और तलबा से गुज़ारिश है कि वह सिर्फ और सिर्फ ज़रूरतमन्द तलबा ही को ज़कात व सदक़ात से तालीम और दीगर सहूलियात फ़राहम करायें। मालदार और ज़कात देने वाले वालिदैन के बच्चों के इस्तेमाल में हरगिज़ हरगिज़ ज़कात के पैसों को न लायें। क्योंकि वह सिर्फ़ मदरसों में पढ़ने की वजह से उसके मुस्तहिक़ नहीं हैं। ऐसे बच्चों की निशानदही करके उनसे फ़ीस का मुतालबा करें और उन्हीं के पैसों से उनके तालीम व तर्बियत का इन्तेज़ाम करें।

मदरसों के नाज़िम (प्रबंधक) हज़रात किसी क़िस्म के एह़सासे कमतरी का शिकार न हों और न ही किसी तरह के ख़्याल को ख़ातिर में लायें। किसी तरह की मायूसी को क़रीब भटकने न दें। पूरे ऐतमाद और हौसले के साथ अल्लाह की ज़ात पर भरोसा रखें। यक़ीनन हर सख़्ती के बाद आसानी है।

अल्लाह की ज़ात से पूरी उम्मीद और हौसले से तैयार रहें और हालात के सुधरते ही बच्चों की दीनी तालीम का इन्तेज़ाम करें। ★★★

★ रिसर्च स्कॉलर: रानीपुर, पुरन्दर, महाराजगंज, (यूपी)

हुज़ूर साहिबुल बरकात अलैहिर्रह़मा के तसर्रूफ़ात

हुज़ूर अह़सनुल उलमा हज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यद ह़सन मियाँ अलैहिर्रह़मा रिवायत करते हैं कि हज़रत मख़्दूम शाह बरकात अलैहिर्रह़मा के पोते सय्यद शाह हमज़ा अलैहिर्रह़मा ने काशिफ़ुल अस्तार शरीफ़ में हुज़ूर साहिबुल बरकात की चन्द करामात लिखने के बाद फ़रमाया कि अगर दादा साहिबुल बरकात के करामात व तसर्रूफ़ात पर लिखा जाये तो एक दफ़्तर नाकाफ़ी होगा। इसलिए राक़िमुल हुरूफ़ चन्द करामात को बतौरे सुबूत पेश करने की सआ़दत हासिल करता है।

ख़तराते दिल पर आगाहीः काशिफ़ुल अस्तार शरीफ़ में सिराजुल आरेफ़ीन हज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा अलैहिर्रह़मा रिवायत करते हैं कि एक बार नवाब मुह़म्मद ख़ाँ नबकश वाली-ए-फ़र्रूख़ाबाद के नौकर शुजा ख़ाँ (जो हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु का सालाना उर्स मुबारक मारहरा शरीफ़ में करते थे) एक बार अजमेर शरीफ़ गए और इसी दरमियान में सरकारे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उर्से मुबारक की तारीख़ क़रीब आ गई। वह वहाँ से मन्ज़िल ब मन्ज़िल तय करते हुए मारहरा शरीफ़ आये ताकि हुज़ूर ग़ौसियत मआ़ब का उर्स करें। शुजाअ़त ख़ाँ ने सराय में क़याम किया तो वहाँ उन्हें एक नूर नज़र आया, जिसकी वजह से उनका दिल दुनिया से फिर गया और उन्होंने सोचा कि मैं दरवेशी इख़्तियार कर लूँ और हुज़ूर साहिबुल बरकात को साहिबे तसर्रूफ़ उस वक़्त समझूँगा कि वह मुझे मुलाक़ात के वक़्त कुछ खाने को दें?

यहाँ तक कि असर के वक़्त जब शुजा ख़ाँ आपसे मुलाक़ात करने हाज़िर हुए तो आप महल सरा में तशरीफ़ फ़रमा थे, थोड़ी देर में वुज़ू के लिये बाहर तशरीफ़ लाये। उस वक़्त आपके दस्ते मुबारक में बाजरे की रोटियाँ और गोश्त पड़ा हुआ मेंथी का साग था। शुजाअ़त ख़ाँ को देखकर मुस्कुराये तो शुजाअ़त के पाँव कप-कपाने लगे और दिल धड़कने लगा। आपने शुजाअ़त ख़ाँ को बाजरे की रोटी और साग इनायत फ़रमाया और हुक्म दिया। तुझे दरवेशी की हाजत नहीं मख़्लूक़े ख़ुदा तुझसे बग़ैर दरवेशी के फ़ैज़याब हो रही है। आपके इस इरशाद से शुजाअ़त ख़ाँ को आपके साहिबे तसर्रूफ़ होने का यक़ीने कामिल हो गया।

तीन दिन में राहे सुलूकः अहले दिल इस बात से ख़ूब वाक़िफ़ हैं कि मनाज़िले सुलूक तय करने में कितनी दिक्कत होती है और इस राह को तय करने के लिये कितना लम्बा वक़्त चाहिए। मगर हुज़ूर साहिबुल बरकात की यह मशहूर करामत है कि आप तालिब को तीन दिन में राहे सुलूक तय करा देते थे और बक़ौल हुज़ूर सिराजुल आरेफ़ीन सय्यद शाह हमज़ा अलैहिर्रह़मा कि बाज़ दफ़ा तो साहिबुल बरकात ने कई तालिबों को दो घड़ी में सालिक बना दिया।

हर एक की ज़बान पर ज़िक्रे ख़ुदाः इसी तरह आपकी एक रौशन करामत यह भी है कि आपके दौर में मारहरा शरीफ़ में मुसलमान के अलावा हिन्दू भी अपनी

ज़बानों पर सिवाये ज़िक्रे ख़ुदा के कुछ न लाते थे और हर एक के दिल पर ख़ौफ़े ख़ुदा तारी रहता था। सरकार सय्यद शाह हमज़ा अलैहिर्रह़मा यहाँ तक फ़रमाते हैं: ''परिन्दे भी कलमा-ए-तौह़ीद पढ़ा करते थे। हज़रत शाह हमज़ा अपने जद्दे मुकर्रम के दौरे मुबारक को याद करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं:

फिरते थे दश्त-दश्त दीवाने किधर गए
वो आशिक़ी के हाये ज़माने किधर गए

अज़ीम व नादिर तबरूर्कातः हज़रत अल्लामा मौलाना मुह़म्मद मियाँ मारहरवी अलैहिर्रह़मा फ़रमाते हैं कि हज़रत के वक़्त में हुज़ूर सरकारे काएनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मूए मुबारक ख़ानक़ाह में आये। यह मूए मुबारक हज़रत के ख़लीफ़ा शाह रूहुल्लाह ख़ैर अन्देश ख़ाँ आलमगीरी ने नवाब मौसूफ़ के छोड़े से लाकर हज़रत को दिया था। इस मूए मुबारक की सनद और जिस तरह से नवाब ख़ैर अन्देश ख़ाँ को मिला था, उसकी तफ़सील आसारे अह़मदी और काशिफ़ुल अस्तार शरीफ़ में ज़िक्र है। ब-फ़ज़्लेही तआ़ला यह मूए मुबारक इस वक़्त तक बड़ी सरकार के तबरूर्काते मुश्तरका में चाँदी के छोंछी में है और उर्सों में ज़ियारत होती है और फिर ख़िरक़ा-ए-मुर्तज़वी और मूए मुबारक हज़राते ह़सनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा भी हज़रत के पास तबरूर्कात में थे।

अतिया-ए-ग़ौसियाः ऊपर ज़िक्र किये गए तबरूर्कात के अलावा इसी अहदे मुबारक में सात मनके और एक दस्तार भी आई, जिसकी रिवायत यह बयान की जाती है कि हुज़ूर सरकारे ग़ौसियत मआब से हज़रत बू अ़ली क़लन्दर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़रिये आपको अता हुई। आपको मुराक़बा में मालूम हुआ था कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म से कुछ ईनाम व इकराम मिलेगा कि उसी ज़माने में हज़रत अलाउद्दीन अ़ली अह़मद साबिर कलियरी के उर्स मुबारक का मौसम था। आपकी तरफ़ से एक दरवेश को हज़रत साबित कलियरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उर्स मुबारक में हाज़िरी के लिये भेजा कि सफ़र के दौरान रास्ते में एक शख़्स मिले जो एक खेत की देखभाल कर रहे थे, उन्होंने इस दरवेश को यह सात मनके और दस्तार देकर फ़रमायाः

यही पयाम यही रिसाला
कहियो बरकात मारहरा वाला

उस दरवेश ने आपको यह सब कुछ पेश करने के बाद आपसे अर्ज़ किया कि हुज़ूर! यह कौन साह़ब थे जो यह चीज़ें मुझे दे गए थे? आपने फ़रमायाः यह हज़रत बू अ़ली शाह क़लन्दर रह़मतुल्लाह अलैहि थे और यह अतिया-ए-ग़ौसिया (ग़ौसे पाक का तोह़फ़ा) है। जो मरह़मत फ़रमा गए हैं। (ख़ानदाने बरकातः पे० 10)

★★★

★ज्वाइंट सेक्रेटरी, अलबरकात ऐजुकेशनल सोसायटी, अलीगढ़, (यूपी)

पंज गंजे क़ादरिया

1. बाद नमाज़े फ़जर **या अज़ीज़ो या अल्लाह**
2. बाद नमाज़े ज़ोहर **या करीमो या अल्लाह**
3. बाद नमाज़े असर **या जब्बारो या अल्लाह**
4. बाद नमाज़े मग़रिब **या सत्तारो या अल्लाह**
5. बाद नमाज़े इशा **या गफ़्फ़ारो या अल्लाह**

सब सौ-सौ बार अव्वल व आख़िर तीन-तीन बार दुरूद शरीफ़ के साथ पढ़ें। इंशाअल्लाह इसकी पाबन्दी करने से बे-शुमार दीन व दुनिया की बरकतें हासिल होंगी।

हज़रत सय्यदना शेख इब्राहीम ईरजी अलैहिर्रहमा

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीख दे दाता भिखारी बादशाह के वास्ते

पैदाइशः हज़रत सय्यदना इब्राहीम ईरजी रहमतुल्लाह अलैहि की विलादते बा सआदत 865 हि० में ''ईरज'' के मक़ाम पर हुई, इसी वजह से आपको ईरजी कहा जाता है। आपके वालिदे माजिद का नाम हज़रत सय्यद मुईन बिन अब्दुल क़ादिर बिन मुर्तज़ा हसनी अलैहिमुर्रहमा है।

तालीम व तर्बियतः आप अलैहिर्रहमा ने अपने वक़्त के बड़े बड़े उलमा व मशाइख़ से इल्मे शरीअत व तरीक़त हासिल किया। शरीअत की तालीम देने वाले असातिज़ा में सरे फेहरिस्त शेख़ अलीमुद्दीन मुहद्दिस रज़ियल्लाहु अन्हु और तरीक़त में शेख बहाउद्दीन जुनैदी अलैहिर्रहमा हैं। हज़रत शेख़ इब्राहीम ईरजी अलैहिर्रहमा सिलसिला-ए-आलिया क़ादिरिया के 26 वें इमाम और शेख़े तरीक़त हैं। आप अपने वक़्त के बड़े जय्यद आलिम, आली मर्तबत बुज़ुर्ग और फ़लसफ़ी थे। तमाम तारीख़ निगारों ने आपके फ़ज़ाइल व कमालात का ऐतेराफ़ किया है।

आदत और ख़सलतः शेख़ इब्राहीम ईरजी अलैहिर्रहमा का दस्तूर था कि लोगों की जेहालत, ना-इन्साफ़ी और बे-क़द्री की वजह से गोशा नशीन होकर किताबों का मुतालआ फ़रमाते और उनकी तसहीह फ़रमाते। बहुत कम लोगों को आपने पढ़ाया। शेख़ अब्दुल हक़ और दूसरे सूफ़िया ने आपसे उलूमे तसव्वुफ़ हासिल किये, इनके अलावा दूसरे मशाइख़ और बुज़ुर्ग हज़रात भी आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए। शेख़ बहाउद्दीन क़ादरी शत्तारी आपके मुरीद थे।

तक़वाः आप महफ़िले सेमाअ (कव्वाली की महफ़िल) में शरीक नहीं होते थे। सुना गया है कि शेख़ रूक्नुद्दीन बिन शेख़ अब्दुल क़ुद्दूस कहते हैं कि मैं एक दिन आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा आज हज़रत ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन अलैहिर्रहमा का उर्स है। अगर आप मजलिस में शिरकत फ़रमायें तो मुनासिब होगा। आपने जवाब में फ़रमायाः तुम चले जाओ और क़ब्र की ज़ियारत करो, बाद में उनकी रूहानियत की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ और देखो कि हज़रत ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन क्या फ़रमाते हैं? चुनाँचे मैं (रूक्नुद्दीन) हज़रत ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन की क़ब्र के पास बैठकर उनकी रूहानियत की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ, मजलिसे सेमाअ गर्म थी। क़व्वाल और सूफ़ी सब जोश व ख़रोश में थे, उस वक़्त ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन ने मुझसे फ़रमाया कि इन बद-बख़्तों ने हमारा दिमाग़ खा लिया है और ज़ेहन को परेशान कर रखा है।

चुनाँचे क़ुतुब साहब का यह हुक्म सुनकर सय्यद इब्राहीम के पास आया, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए फ़रमायाः अब भी आप मुझको सेमाअ की मजलिस में जाने से मअज़ूर रखेंगे या नहीं। मैंने जवाबन कहा वही दुरूस्त है जो आप फ़रमाते हैं और आप ही हक़ पर हैं, बाक़ी अल्लाह ही ज़्यादा जानता है। (अख़बारूल

अख़्यार तर्जुमाः पे० 593–594)

हज़रत शेख़ निज़ामुद्दीन काकोरवी अलैहिर्रह़मा आपके मशहूर मुरीद व ख़लीफ़ा हैं।

वफ़ातः आपकी वफ़ात इस्लाम शाह के ज़माना-ए-हुकूमत में 5 रबीउस्सानी 953 हि० में हुई। आपका मज़ार शरीफ़ हिन्दुस्तान के शहर दिल्ली में दरगाहे हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया अलैहिर्रह़मा में हज़रत अमीर खुसरो के मज़ार के क़रीब वाकेअ़ है।

हज़रत सय्यदना निज़ामुद्दीन अलैहिर्रह़मा

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीख दे दाता भिखारी बादशाह के वास्ते

नाम व पैदाइशः आपका नाम सय्यद मुह़म्मद निज़ामुद्दीन है। मुरीदीन व ख़ुलफ़ा के दरमियान भिखारी के नाम से मशहूर हैं। चुनाँचे शिजरा-ए-आ़लिया में इसी नाम से याद किये गए हैं। आपकी विलादते बा सआ़दत 890 हि० में लखनऊ के क़स्बा काकोरी में हुई। आपके वालिदे माजिद का नाम हज़रत सय्यद सैफ़ुद्दीन अलैहिर्रह़मा है।

आपकी तर्बियत आपके वालिदे माजिद हज़रत सैफ़ुद्दीन रह़मतुल्लाह अलैहि के ज़ेरे साया हुई। आपके वालिद अपने वक़्त के बड़े माया नाज़ आ़लिम, फ़ाज़िल और किराअते सबआ के मुसल्लम इमाम थे। इन्ही की निगरानी में आपने तफ़सीर व तजवीद और दूसरे तमाम उलूम व फ़ुनून हासिल किये। मौलाना ज़ियाउद्दीन मुह़द्दिस मदनी अलैहिर्रह़मा से आपने इल्मे ह़दीस हासिल किया। हिन्दुस्तान के मशहूर अकाबिर उलमा व मशाइख़ में आपका शुमार होता है।

बैअ़त व ख़िलाफ़तः आपको हज़रत सय्यदना इब्राहीम ईरजी रह़मतुल्लाह अलैहि से बैअ़त का शर्फ़ हासिल था और ख़िरक़ा-ए-ख़िलाफ़त व इजाज़त भी उन्हीं से हासिल था। आप सिलसिला आ़लिया क़ादिरिया के 27 वें इमाम और शेख़े तरीक़त हैं।

आपके ऊपर आपके पीर व मुर्शिद की बे-शुमार इनायतें हैं। आप ख़ुद ही बयान फ़रमाते हैं कि ''मैंने फ़िरोज़ाबाद में हज़रत अमीर इब्राहीम ईरजी रह़मतुल्लाह अलैहि से बैअ़त का शर्फ़ हासिल किया तो हज़रत ने ऐसी इनायतें फ़रमाईं जो बयान से बाहर हैं। चन्द माह हज़रत की ख़िदमते अक़्दस में रहा। रोज़ाना कोई न कोई नया इन्किशाफ़ ज़रूर होता था, दर्स व तदरीस के मुताल्लिक़ भी कभी-कभी दरियाफ़्त फ़रमाते। मुझी से नमाज़ की इमामत करवाते और फ़रमाते कि तुमसे किराअत ख़ूब अदा होती है और आवाज़ भी उम्दा है। तुम्हारे आने से मुझे ख़ुशी हुई है।'' (तज़किरा मशाइख़े क़ादिरिया रज़वियाः पे० 322, ब-ह़वाला मशाहीरे काकोरवीः पे० 422)

आपका नसबः आप अ़लवी सय्यद हैं और मुह़म्मद बिन ह़नफ़िया आपके जद्दे अमजद हैं। इक्कीस वास्तों से आपका सिलसिला-ए-नसब वहाँ तक पहुँचता है। तफ़सील इस किताब (तज़किरा मशाइख़े क़ादिरिया रज़वियाः पे० 316) में देखें।

आपका वतने असली बग़दाद का एक क़रीबी इलाक़ा ''सेह़राम'' है। आपके बाप दादा वहाँ से हिजरत करके अवध के इलाक़े में तशरीफ़ लाये। पहले मुख़्तलिफ़ जगहों में क़याम फ़रमाया, फिर काकोरी में मुस्तक़िल क़याम फ़रमाया। और इल्मे तरीक़त और

शरीअ़त से लोगों को दिलों को मुनव्वर किया। दूर दूर से लोग दीनी उलूम सीखने आपकी बारगाह में आते, इल्मे दीन सीखकर अपने वतन वापस होते। (तज़किरा मशाइख़े क़ादिरिया रज़वियाः पे० 317)

आ़दात व मामूलातः आप साहि़बे ह़ाल मजज़ूब और सालिक थे। आप क़व्वाली नहीं सुनते थे औन अपने मुरीदों को भी क़व्वाली से परहेज़ करने का हुक्म देते। और कहते हैं कि ''मुफ़्त इख़्तिलाफ़ में क्यों पड़ते हो अगर तक़लीद करते हो तो बुज़ुर्गों की तक़लीद किया करो।'' (अख़बारूल अख़्यारः पे० 658)

आपका दस्तूर था कि सुबह सादिक़ होते ही मस्जिद में तशरीफ़ लाकर नमाज़ पढ़ते थे। एक दिन आप ख़लवत से मस्जिद में आये और बाहर के सेहन में खड़े होकर फ़रमाया ''हम यहीं नमाज़ पढ़ेंगे, हो सकता है पहली वाली जगह पर कोई तकलीफ़देह चीज़ हो। चुनाँचे जब लोगों ने तहक़ीक़ की तो देखा कि आपकी बिछी हुई जा-नमाज़ के एक कोने में साँप लिपटा हुआ था।'' (अख़बारूल अख़्यारः पे० 659)

आपको कई बार सरवरे काएनात ﷺ की ज़ियारत हुई। सरकारे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु की भी अक्सर ज़ियारत होती।

आपके अक़वाल व इरशादातः आप फ़रमाते हैं कि मेरी औलाद में जो कोई शादी बियाह में नाच रंग करेगा उसका अन्जाम रंज व ग़म के सिवा कुछ न होगा। (इसलिए हमें इससे ज़रूर बचना चाहिए, ताकि अल्लाह और उसके रसूल की ख़ुशनूदी हासिल हो) वह लोग निहायत क़ाबिले अफ़सोस हैं जो अपने अख़्लाक़ से लोगों के क़ुलूब (दिलों) को ख़ुश नहीं रखते, हालाँकि दिलों का ख़ुश रखना ख़ुदा की ख़ुशनूदी की दलील है। (तज़किरा मशाइख़े क़ादिरिया रज़वियाः पे० 328)

विसालः 91 बरस की उम्र में 9 ज़ि क़अ़दा 981 हि० मुताबिक़ 1572 ई० को आपका विसाल हो गया। आपका मज़ारक मुबारक क़स्बा काकोरी के मोहल्ला झंझरी में वाकेअ़ है। (तज़किरा मशाइख़े क़ादिरिया रज़वियाः पे० 330, ब-ह़वाला मशाहीरे काकोरवीः पे० 456) ★★★

★ डायरेक्टरः अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, अलीगढ़ (यूपी)

पेज न० 38 का बाक़ी! यह तो वह नेमतें और एह़सानात हैं जो अल्लाह ने उन्हें इस दुनिया में अता फ़रमाये। आख़िरत का अज्र उनके आमाल के मुताबिक़ है। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता हैः ''और जो कुछ भले काम करेगा, मर्द हो या औरत और हो मुसलमान तो वह जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे और उन्हें तिल भर नुक़सान न दिया जायेगा।'' (सूरह निसाः 124)

इसके अलावा दुनिया में उनके फ़ितरी आरज़े, हमल, वज़्अे हमल और बच्चों की तर्बियत पर अलग सवाब है। यह सिर्फ औरतों पर इस्लाम के एह़सानात की एह झलक है, तफ़सील की जाये तो एक किताब तैयार हों जायें।

आख़िरी बात यह है कि मर्दों की तरह औरतों की भी कुछ ज़िम्मेदारियाँ और फ़राइज़ हैं जो मर्दों से अलग हैं। इस्लामी माँओं और बहनों को चाहिए कि वह इन फ़राइज़ और ज़िम्मेदारियों को क़ुबूल करें और ख़ुश दिली से अपने रब, रसूलल्लाह ﷺ , माँ-बाप, शौहर और भाईयों, बहनों को राज़ी करने वाले काम करें और उसमें अपनी हक़ारत या ज़िल्लत महसूस न करें ताकि नेमतों का शुक्र हो और दुनिया व आख़िरत की भलाई मिले। इंशाअल्लाह अज़्ज व जल! ★★★

★ मुक़ीम हॉल, मलावी सेंटरल अफ़्रीक़ा।

बरकाते ख़ानदाने बरकात

इस कॉलम में इंशाअल्लाह तआ़ला ख़ानवादा-ए-आलिया बरकातिया मारहरा शरीफ़ के आसान और मुजर्रब तावीज़ात और वज़ीफ़े वग़ैरह शाए होते रहेंगे। हर सुन्नी मुसलमान को नेक मक़सद के लिए इन पर अ़मल करने की इजाज़त है। (इदारा)

बाग़ की हिफ़ाज़त के लिये: जो कोई يَا مُتَكَبِّرُ एक काग़ज़ पर लिखकर कुल्हड़ में बंद करके बाग़ में गाड़ देगा तो बाग़ नुक़सान से महफ़ूज़ रहेगा।

टिड्डी भगाने की दुआ़: नीचे लिखी गई इबारत चार पर्चों पर लिखकर खेती या बाग़ के चारों कोनो पर लटका दें, वहाँ से अल्लाह के हुक्म से टिड्डीयों का दल भाग जायेगा। वह इबारत यह है:

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِى الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَ يُهْلِكَ الْحَرْثَ وَ النَّسْلَ وَاللّٰهُ لَايُحِبُّ الْفَسَادَ.

टिड्डी भगाने का टोटका: जब टिड्डी खेत में आ जायें तो एक या कई टिड्डीयों को पकड़कर जला दें। अल्लाह के हुक्म से सब भाग जायेंगी।

ग़ल्ला में बरकत के लिये: يَا كَرِيْمُ लिखकर गल्ले में रख दें बरकत होगी।

खाने में बरकत के लिये: जो शख़्स सूरह क़ुरैश पढ़कर खाने पर दम करे, खाने में बरकत होगी और खाना नुक़सान नहीं पहुँचायेगा।

क़र्ज़ की अदायेगी के लिये: क़र्ज़ की अदायेगी के लिये नीचे दी गई दुआ़ को 100 बार पढ़ें, शुरू और आख़िर में तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें। जल्द ही कर्ज़ की अदायेगी होगी। दुआ़ यह है: ह़दीसे पाक में है कि अगर पहाड़ के बराबर भी कर्ज़ होगा अल्लाह तआ़ला अदा फ़रमा देगा। दुआ़ यह है:

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِى بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِى بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

एहतिलाम (नाइट फाल) से बचने की दुआ़: जो कोई रात में सोते वक़्त सूरह तारिक़ (सूरह न० 86) पढ़कर सोये तो उसे एहतिलाम नहीं होगा।

बराये हिफ़ाज़त अज़ इस्क़ाते ह़मल: इस आयत को लिखकर औरत की कमर में बाधे।

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ.

लड़की का रिश्ता आने के लिये: हर रोज़ सूरह इख़्लास قل هو الله احد शरीफ़ पढ़ें।

भागे हुए को वापस लाने के लिये: यह नक़्श काग़ज़ पर लिखकर पत्थर के नीचे दबाये।

۴	۹	۲
۳	ع	٦
۸	۱	٦

शब कोरी या रतौन्धी के लिये: सूरह अबस (सूरत न० 80) अपने पास लिखकर रखे और पढ़े भी अल्लाह के हुक्म से रतौन्धी जाती रहेगी। ★★★

हयाते साहिबुल बरकात के चन्द गोशे

बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक में औलिया-ए-किराम और सूफ़िया-ए-एज़ाम ने दीन को फैलाने में जो मेहनतें कीं, और जो मशक़्क़तें उठाईं, उस से इन्कार नहीं किया जा सकता। सूफ़िया-ए-किराम ने अल्लाह के बन्दों को इन्सान दोस्ती का सबक़ दिया, और नेकी की तरफ़ बुलाया। ज़्यादा तर सूफ़िया-ए-तरीक़त किसी न किसी सिलसिले से ज़रूर वाबस्ता होते हैं। बर्रे सग़ीर में तरीक़त के 4 सिलसिले बहुत मशहूर हैं। 1. क़ादरिया, 2. चिश्तिया, 3. नक़्शबंदिया और 4. सोहरवर्दिया।

इन चारों सिलसिलों के बुर्ज़ुगों का वाहिद मक़सद यह था कि बन्दे को ख़ालिक़ तक पहुँचाया जाये, गोया इन चारों सलासिल के रास्ते अलग-अलग हैं, मगंर मक़सूद सिर्फ़ ज़ाते बारी तआ़ला है।

साहिबुल बरकात हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा का शुमार हिन्दुस्तान के क़ादिरिया सिलसिले के अहम बुज़ुर्गों में होता है। गंगा यमुना के मैदान यानी ''दो आबा'' के बीच बर्ज के इस तहज़ीबी इलाक़े में कोई सूफ़ी बुज़ुर्ग शाह बरकतुल्लाह के मर्तबे को नहीं पहुँचा। आप अपने ज़माने में उलूमे शरीअ़त और उलूमे तरीक़त दोनों के संगम थे।

नाम व पैदाइशः आपका नाम ''बरकतुल्लाह'', लक़ब ''साहिबुल बरकात'' और तख़ल्लुस ''इश्क़ी'' व ''पेमी'' था। आप सय्यद शाह उवैस के बड़े साहबज़ादे थे। आपकी पैदाइश 26 जुमादल आख़िरा 1070 हि० मुताबिक़ 1660 ई० को जिला हरदोई (उत्तर प्रदेश) के मशहूर क़स्बा बिलग्राम शरीफ़ में हुई।

तालीम व तर्बियतः हज़रत शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा का ज़माना उ़लूम व फ़ुनून के लिहाज़ से बहुत साज़गार था। साहिबुल बरकात का दौलत ख़ाना उ़लूम-ए-जाहिरी और बातिनी का संगम था। इस्लामी उ़लूम सीख़ना ज़रूरी समझा जाता था। शाह साहब ने क़ुरआ़न, ह़दीस, फ़िक़्ह, मन्तिक़ और फ़ल्सफ़ा वग़ैरह की तालीम अपने वालिदे गिरामी और दीगर असातज़ा-ए-किराम से ह़ासिल की। इसके अलावा अ़रबी, फ़ारसी और संस्कृत के कलासिकी अदब को भी पढ़ा। नीज़ गीता, वेद, उपनिशद और हिन्दू फलसफ़े को भी अच्छी तरह़ से समझा।

बैअ़त व ख़िलाफ़तः साहिबुल बरकात को सिलसिला-ए-क़ादरिया आबाई क़दीम में भी बैअ़त व ख़िलाफ़त अपने वालिदे माजिद हज़रत सय्यद शाह उवैस अलैहिर्रह़मा से हासिल थी। इसके अ़लावा आपको अपने चचाज़ाद भाई सय्यद मुरब्बी बिन सय्यद अ़ब्दुल नबी, सय्यद ग़ुलाम मुस्त़फ़ा और सय्यदुल आ़रेफ़ीन सय्यद शाह लुत्फ़ुल्लाह बिलग्रामी अलैहिर्रह़मा से भी इजाज़त व ख़िलाफ़त ह़ासिल हुई।

बातिनी उलूम की तकमीलः आपको सय्यदना हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रह़मतुल्लाहि अलैहि से मुह़ब्बत थी। आप हमेशा उनकी मुह़ब्बत में बेचैन रहते थे, उस ज़माने में काल्पी के बुज़ुर्ग ह़ज़रत सय्यद शाह फ़ज़्लुल्लाह काल्पवी अलैहिर्रह़मा की शोहरत चारों तरफ़

फैली हुई थी। बातिनी इशारा मिलते ही साहिबुल बरकात काल्पी शरीफ़ रवाना हो गये। मदरसा (ख़ानक़ाहे मुहम्मदिया काल्पी) के अन्दरूनी दरवाज़े पर शाह फ़ज़्लुल्लाह काल्पवी को इन्तज़ार करते हुए पाया। हज़रत फ़ज़्लुल्लाह साहब ने आपको अपने सीने से लगाकर ''दरिया ब दरिया पेवस्त फ़रमाते हुए सिलसिला-ए-क़ादरिया जदीदा की इजाज़त अता फ़रमाई'' और तमाम उलूम-ए-बातिनी आपको अता फ़रमाये। नीज़ चारों सिलसिले की ख़िलाफ़त से भी मुशर्रफ़ फ़रमाया। काल्पी में कुछ दिन रहने के बाद हुज़ूर साहिबुल बरकात को मारहरा वापस जाने का हुक्म हुआ।

हुज़ूर साहिबुल बरकात की मारहरा आमदः साहिबुल बरकात अपने वालिदे माजिद की वफ़ात (20 रजब 1097 हि०) के बाद मारहरा आए, और अपने दादा सय्यद शाह अ़ब्दुल जलील अलैहिर्रह़मा की ख़ानक़ाह में क़याम पज़ीर हुए। ख़ानक़ाह के आस पास एक बदमाश क़ौम रहा करती थी, जो ह़ज़रत को सुकून से नहीं रहने देती थी, हज़रत ने तंग आकर उनके लिये बद-दुआ़ की और फ़रमाया ''तुम सब जवान मरो'' हज़रत की बद-दुआ़ का यह असर हुआ कि कुछ अर्से में यह पूरी क़ौम ग़ारत हो गई। हज़रत साहिबुल बरकात ने एक बार फिर बिलग्राम शरीफ़ जाने का इरादा किया, लेकिन चौधरी फ़रीद ख़ाँ आ़मिल मारहरा के इसरार पर हज़रत ने दुबारा वहीं क़याम फ़रमाया। यह वह ज़माना था कि जब हज़रत शाह जलाल कुतुब मारहरा रह़मतुल्लाह अलैहि थे। बड़े साहिबे कमाल सालिक थे। ख़ुर्द तख़ल्लुस फ़रमाते थे। **''बूस्ताने ख़ुर्द''** आपकी मशहूर तस्नीफ है। हज़रत सय्यद शाह हमज़ा ऐनी की तस्नीफ़ **''फ़स्सुल कलेमात''** में दर्ज है कि एक रात साहिबुल बरकात को हुज़ूर ग़ौस पाक की ज़ियारत हुई उस वक़्त हुज़ूर मह़बूबे सुब्ह़ानी ने साहिबुल बरकात को बशारत दी कि तुम पुश्तहा पुश्त के लिये मारहरा के कुतुब किये गए जल्द से जल्द किसी मुरीद को कलियर भेजो ताकि तुमको इस विलायत और कुतुबियत की सनद मअ़ ख़िलअ़त के दी जाये। सुबह को सबसे पहले हज़रत साहिबुल बरकात ने इस वाक़्ये की इत्तेला ब-ज़रिया एक तह़रीर हज़रत सय्यद जलाल को दी। फ़रमायाः **''जिस जगह जमाल हो वहाँ जलाल की क्या ज़रूरत, जब आशिक़ आये तो अक़्ल क्यों बाक़ी कैसे बाक़ी रहे।''** इस पयाम के साथ ही हज़रत शाह जलाल साहब ने इन्तेक़ाल फ़रमाया और साहिबुल बरकात कुतबियते मारहरा पर फ़ाइज़ हुए।

1118 हि० में शहर से बाहर नयी आबादी की बुनियाद डाली, और ख़ानकाह और मस्जिद बनवाई। इस नयी आबादी का नाम **''पेम नगर'' ''बरकात नगरी''** रखा। मारहरा के कानून गो चौधरी फ़रीद जुबैरी ने इस तामीर में बड़ी मदद की। जब नई बस्ती बन गई तो साहिबुल बरकात ने अपने घर वालों को बिलग्राम से मारहरा बुला लिया और हमेशा के लिए इसी बस्ती में बस गये।

ज़ियारत का शर्फ़ः हुज़ूर साहिबुल बरकात को एक मर्तबा नबी-ए-करीम ﷺ और हज़रत सय्यदना गौसे आज़म की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल हुआ। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने हुज़ूर साहिबुल बरकात की आल में सात कुतुब पैदा होने की बशारत फ़रमाते हुए हज़रत बू अली शाह पानीपती अलैहिर्रह़मा के ज़रिये अपनी तस्बीह के सात दाने इस बशारत की तसदीक़ में अता फ़रमाए, साथ ही हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने हुज़ूर साहिबुल बरकात से

ऐसा जुमला इरशाद फ़रमाया जिस पर सुबहे क़यामत तक बरकाती गुलाम फ़ख़्र भी करेंगे और मुतमईन भी रहेंगे। सरकारे बगदाद ने फरमायाः ''बरकतुल्लाह! अब्दुल कादिर जब तक तेरे मुरीदों को जन्नत में न दाख़िल करा देगा खुद जन्नत में दाखिल न होगा।''

आपके खुलफ़ाः 1. शाह अब्दुल्लाह, 2. शाह मीम कश्मीरी, 3. शाह मुश्ताकुल बरकात, 4. शाह मिनउल्लाह, 5. शाह राजू, 6. शाह हिदायतुल्लाह, 7. शाह रूहुल्लाह, 8. शाह आ़जिज़ मारहरवी, 9. शाह नज़र, 10. शाह साबिर, 11. शाह जमीअ़त, 12. शाह आले मुह़म्मद, 13. शाह सादिक़, 14. शाह बू अ़ली, 15. शाह हमामी, 16. शाह ऐन हक़, 17. शाह आशिकुल बरकात, 18. शाह बेरेया वग़ैरह।

तसनीफ़ातः आपने उर्दू, अ़रबी व फारसी ज़बानों में बहुत सी किताबें लिखी हैं। जिनमें से कुछ किताबों के नाम यह हैंः (1) चहार अनवा (2) रिसाला सवाल व जवाब (3) अ़वारिफ़े हिन्दी (4) दीवाने इश्क़ी (5) पेम प्रकाश (6) तरजीअ-ए-बन्द (7) मस्नवी रियाज़े इश्क़ (8) वसीयत नामा (9) बयाज़ बातिन (10) बयाज़े ज़ाहिर (11) रिसाला-ए-तकसीर।

सय्यद शाह बरकतुल्लाह की तसानीफ़ में ''पेम प्रकाश'' का मर्तबा बहुत बुलन्द है। यह शाह साह़ब की हिन्दी शायरी का मजमूआ़ है।

सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा हिन्दी में पेमी तख़ुल्लुस फ़रमाते थे जिसके माना हैं ''आशिक'' शाह साह़ब की तालीमात में ''इश्क़'' पर बहुत ज़ोर दिया गया है। अक्सर सूफ़िया-ए-किराम ने इश्क़ को बुनियादी हैसियत दी है। यह इश्क़ इश्क़े हक़ीक़ी है यानी ख़ालिक़ व मख़्लूक़ की मुह़ब्बत को बढ़ाना सूफ़िया का तरीक़ रहा।

नसीहतेंः अल्लाह के बन्दों को चाहिए कि वह अल्लाह की याद में मशगूल रहें, और सुलूक़ व फ़िक़्ह की किताबों को पढ़ते रहें। बुज़ुर्गों के मक़ाम पर क़ायम रहें, और दुनिया दारों के घरों की तरफ़ रूख़ भी न करें। कब्रों की ज़ियारत के लिये ज़रूर-ज़रूर जायें। अल्लाह के बन्दों के काम के लिये हर आदमी की मन्नत व समाजत करें। इसलिए कि यह सवाब है। शरीअ़ते मुतह्हरा पर सख़्ती से अमल करें। दीन के किसी भी मामले में चाहे कितनी भी परेशानियॉ और मुसीबतें झेलनी पड़ें, बर्दाश्त करें।

(अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद करो) जिहादे अकबर अपने आपसे जिहाद करना है, यानी खुद को कभी आराम न दें, ताकि आराम पायें। नफ़्से अम्मारा (बुराई वाला नफ़्स) जो कुछ भी कहे उसकी मुख़ालिफ़त करें वगैरह।

विसालः हुज़ूर साह़िबुल बरकात अलैहिर्रह़मा का विसाल आशूरा की रात मुह़र्रमुल ह़राम सन् 1142 हि० मुताबिक़ 1729 ई० को मारहरा शरीफ़ में हुआ। नीचे का मिसरा तारीख़े विसाल हैः

فَنَا فِی اللّٰہ شُدْآں پِیْر مَحْرَمْ

1142 हि0

नवाब मुह़म्मद ख़ान बंगश मुजफ़्फ़र जंग वाली-ए-फ़र्रुख़ाबाद ने नाज़िमे हुकूमत शुजाअ़त ख़ाँ के ज़ेरे एहतिमाम शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा का रौज़ा-ए-पाक तामीर कराया जो अब ''दरगाह-ए-शाह बरकतुल्लाह'' के नाम से जाना जाता है। ★★★

★ सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया,
मारहरा शरीफ़, एटा, (यूपी)

नात शरीफ़

सय्यद मुहम्मद अशरफ़ क़ादरी

क़लम को जावेदाँ कर दें, सुख़न को दाइमा कर दें
लिखें नाते नबी और हक़ गुलामी का अदा कर दें

सिवा कर दें, बढ़ा कर दें, उठा कर दें, अता कर दें
किसी को ख़ामुशी से दें, किसी को बरमला कर दें

बवक़्ते नज़्अ़ दिल में बस उन्हीं की याद बाक़ी हो
मेरे अह़बाब मेरे हक़ में बस इतनी दुआ़ कर दें

अरे मोमिन ज़रा तू अपने दिल को ज़र्फ़ वाला कर
तू जब माँगे अ़ता कर दें, वो जब चाहें अ़ता कर दें

मदीने से पलटकर फिर मदीने की तरफ़ रूख़ हो
करम हो जाये आक़ा का जो ऐसा रास्ता कर दें

सुराक़ा पर करम था, जूद की बारिश थी वहशी पर
"नबी मुख़्तारे कुल हैं जिसको जो चाहें अ़ता कर दें"

फ़रिश्तों ने मुझे देखा तो यूँ फ़रमाया आक़ा से
जो दामन में छुपा है पहले उसका फैसला कर दें

ख़याले हज़रते ह़स्साँ से हम नातें सजाते हैं
कमी रह जाये तो पूरी बरैली के रज़ा कर दें

ख़तायें करने वाला मैं, अ़तायें करने वाले तुम
मेरे आक़ा मेरे हक़ में इसे दस्तूर सा कर दें

हम अपनी तंगी-ए-दामन से क्यों शाकी रहें अशरफ़
वही दामन में वुसअ़त दे के कुछ इसमें अ़ता कर दें

तमन्ना-ए-दिले अशरफ़ बस इतनी है सरे कौसर
जब आक़ा जामे कौसर दे, लबे अक़्दस लगा कर दें

★★★

मन्क़बत

दरशाने सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा

मौ० अ़ली अह़मद सीवानी मिस्बाह़ी

ह़म्दे ख़्वाने ज़ाते वह़दत, शाहे बरकत आप हैं
मज़हरे अनवारे क़ुदरत शाहे बरकत आप हैं

वासिफ़े ज़ाते रिसालत शाहे बरकत आप हैं
आशिक़े ह़ुस्ने नुबूव्वत शाहे बरकत आप हैं

क्यों न हों सच्चाईयों की शोहरतें आ़लम में आज
पैकरे सिद्क़ो सदाक़त शाहे बरकत आप हैं

ख़ुशबूयें किरदार पर क़ुर्बां हैं गुल की नुज़हतें
निकहते बाग़े शरीअ़त शाहे बरकत आप हैं

आपकी नज़रों से पीकर रिन्द सारे मस्त हैं
साक़ी-ए-जामे मुह़ब्बत, शाहे बरकत आप हैं

क्यों न क़दमों से लिपटकर ख़ुल्द की जानिब चलूँ
रहनुमाये राहे जन्नत शाहे बरकत आप हैं

आपके क़दमों का धोवन कहकशाँ का नूर है
सुरमा-ए-चश्मे बसीरत शाहे बरकत आप हैं

मैं हूँ रिज़वी मन्ज़री बरकाती व नूरी अ़ली
मुशफ़िक़े मन दर हक़ीक़त शाहे बरकत आप हैं

★★★

कोविड-19: अ़लामात और हिफ़ाज़ती तदाबीर

आज-कल पूरे मुल्क बल्कि पूरी दुनिया में एक जानलेवा बीमारी ने तबाही मचा रखी है जिसे हम कोविड-19 के नाम से जान रहे हैं। इस बीमारी ने तमाम लोगों के दिलों में खौफ़ पैदा कर रखा है। किसी ने इसे नेशनल पॉलिटिक्स तो किसी ने इंटरनेशनल पॉलिटिक्स से जोड़ रखा है तो कोई इस बीमारी को ऐसे देख रहा है जैसे यही सबसे गलीज़ चीज़ है, बेहरहाल हम आज ये जानने की कोशिश करेंगे की आखिर यह बीमारी कहाँ से शुरू हुई और किस चीज़ से होती है?, क्या है, किन लोगों पर इसका ज़्यादा असर फैलता है?, इससे बचने के तरीके क्या हैं?, इसका इलाज क्या है? और फिर हम एक नज़र इस पर भी डालेंगे की आखिर ये बीमारी एक साजिश तो नहीं?

कहाँ से शुरू हुआ कोविड-19 मर्ज?: साउथ मह्र्निंग चाइना पोस्ट नामी अखबार में ये ख़बर देखने को मिलती है की पहला कोविड-19 केस हूबेई प्रांत के एक 55 साल के आदमी में 17 नवम्बर 2019 ई० को देखने को मिला। WHO की रिपोर्ट से एक महीना पहले की बात है। जबकि WHO के हिसाब से इस बीमारी को 31 दिसम्बर 2019 में वुहान प्रांत में देखा गया। माना जाता है की इस बीमारी के फैलने की वजह वुहान का समुंदरी खान-पान बाज़ार था, खैर हम इसके बारे में आगे तफ़सील से बात करेंगे।

किस चीज़ से होता है कोविड-19 मर्ज?: कोविड-19 मर्ज नह्वल कोरोना वायरस के इन्फ़ेकशन की वजह से होता है, जो कि एक +ssRNA वायरस है। ये वायरस पहले भी कई बार, कई बीमारियों में देखने को मिला था जैसे की 2003 में डॉक्टर कार्लो अर्बानी (जो कि WHO के एक डॉक्टर थे) ने एक चीनी व्यापारी में SARS नामी मर्ज़ में पाया और फिर उस व्यापारी की उसी बीमारी से मौत हुई, बाद में ये वायरस 2012 में MERS नामी मर्ज में भी देखने को मिला जो की सऊदी अरब, कतर और तमाम गल्फ़ मुल्कों में फैला हुआ था। New England Journal of Medicine की एक रिसर्च के मुताबिक ये वायरस हवा में आधे घंटे तक ज़िन्दा रह सकता है, जिससे हमें ये पता चलता है की यह वायरस हवा से तो बिलकुल नहीं फैलता, प्लास्टिक और स्टील पर ये वायरस 72 घंटों तक ज़िन्दा रह सकता है, तांबे पर ये सिर्फ कुछ ही घंटे ज़िंदा रहता है मगर गत्तों पर ये 24 घंटे तक ज़िंदा रहता है।

क्या है कोविड-19 मर्ज?: यह मर्ज़ आम तौर पर जानवरों में पाया जाता था, मगर जानवरों को खाने से या यह कहा जाए तो और बेहतर है की जानवरों के अधपके गोश्त को खाने से इंसान में यह बीमारी आई, इसी लिए इसे Zoonotic Disease भी कहा जाता है। यह वायरस ऊपरी और निचले दोनों ही निज़ामे तनफ्फुस (Respiratory System) को बराबर से इनफेक्ट करता है, जिससे इंसान में बुख़ार, नज़ला, खांसी, निमोनिया और सांस लेने में तकलीफ़ देखने को मिलती है। क़ारेईने किराम! हैरान होंगे की भला इस बीमारी का बुख़ार से क्या लेना-देना क्योंकि यह तो

निज़ामे तनफ्फुस (सांस के सिस्टम) को ही इनफेक्ट कर रही है? तो मैं एक बात आपको बताता चलूँ की बुखार एक ऐसी अलामत है जो बताती है की आपके जिस्म में कुछ तो गलत हो रहा है, बुखार आपको हर क़िस्म के इन्फ़ेक्शन में देखने को मिलेगा चाहे फिर वो कोई भी इन्फ़ेक्शन ही क्यूँ न हो, मिसाल के तौर पर आप टाइफ़ाइड ले लें, इसमें भी आपको तेज़ बुखार आता है मगर असल में टाइफ़ाइड एक क़िस्म का Diarrhoea है।

इस मर्ज़ से मुतास्सिर शख्श में हमे सबसे पहले बुखार देखने को मिलता है और इस बुखार की खासियत ये है की ये हमेशा 100 ^{o}F (फारेनहाइट) से ज़्यादा होता है, उसके बाद उस शख्श में आपको सूखी खांसी, गले में ख़राश, बदन में तेज़ दर्द और आखिर में सांस लेने में तकलीफ देखने को मिलती है। इस मर्ज की एक खासियत ये भी है की मरीज़ को बलगम नहीं आता, नाक नहीं बहती और ज़्यादा छींक भी नहीं आती, मगर आप गौर करें कि यह सब तो मरीज़ को एक आम इन्फ़ेक्शन से भी हो सकता है तो इसके लिए हमें खून की जांच देखना बहुत ही अहम है जिसमे हमें कोविड-19 से मुतास्सिर मरीज में व्हाइट ब्लड सेल्स और लिंफोसाइट्स कम देखने को मिलेंगे, क्रेटिनिन बढ़ा होगा, आपका L_o F_o T बढ़ा हुआ होगा और IL-6 बढ़ा हुआ होगा।

आपको यह जानकर हैरानी होगी कि अभी तक इसकी किसी खास जांच के बारे में ज़िक्र क्यूँ नहीं हुआ तो सबसे पहले हमें सही तरह से इसके Antigenic Structure के बारे में जानकारी नहीं है, लेकिन हम इसकी जांच Real Time RT&PCR से करते हैं, मगर ये जांच काफी महंगी और काफी वक़्त लेने वाली है इसलिए इसका ज़िक्र बहुत ही कम आता है।

किन लोगों पर कोविड-19 का असर ज़्यादा होता है?: कोविड-19 मर्ज ज़्यादातर उन्हीं लोगों में देखने को मिलता है जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) कम हो चुकी होती है या तो कम होती ही है, गौर करें की इसका कम हो चुका होना और कम होना दोनों ही अलग-अलग चीज़ें हैं।

HIV&AIDS, डाईबिटीज़, कैंसर, टी. बी, 60 से ज़्यादा उम्र, या 2–6 साल के बच्चों में और किसी भी तरह के दिल, गुर्दे, जिगर और फेफड़ों के मर्ज़ में मुब्तला इन्सानों को कोविड-19 ज़्यादा जल्दी होता है और यह ज़्यादा खतरनाक रूप भी इन्हीं लोगों में लेता है। यह बीमारी वैसे तो किसी भी उम्र के इंसान को हो सकती है मगर अच्छी Immunity की वजह से और थोड़ी दवाओं के बाद ये बीमारी ठीक हो जाया करती है।

इस बीमारी से बचने के तरीके क्या हैं?: कुर्बान जाइये सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर की हम उनके कहे से वुज़ू में फर्ज़ के साथ-साथ सुन्नतें भी अदा करते हैं और फिर हमें याद आता है की अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त कुरआन शरीफ़ में इरशाद फरमाता है: "और तुम हमारी किन-किन नेमतों को झुठ लाओगे" यक़ीनन हुज़ूर ﷺ हम सब के लिए नेमत ही नेमत हैं।

साइन्स की रिसर्च के एतबार से हमें ये देखने को मिला की हम इस बीमारी से बार-बार हाथ मुंह और तमाम हिस्से जो खुले हैं उन्हें धो कर, मास्क लगा कर, अपने आपको तमाम तरह की निजासतों से बचा कर और लोगों से दूरी बनाकर इस बीमारी से बच सकते हैं। कुछ लोग मौजूदा दौर में Social Distancing का गलत मतलब निकाल रहे हैं, मगर यकीन मानिए की ये भी एक सुन्नत है, खुद आका

करीम ﷺ ने फ़रमाया कि ''ऐसी जगहों पर जाने से बचो, जहाँ बीमारियाँ फैली हुई हों।'' आज इस दौर में यह बीमारी पूरी दुनिया में फैली हुई है, इसलिए बचिए, कहीं भी बाहर निकालने से, हाँ अगर बहुत ज़रूरी काम है तो बाहर निकालने की इजाज़त है।

कोविड-19 का इलाज क्या है?: बड़े ही अफसोस के साथ ये बात कहनी पड़ रही है की अभी तक हम इस बीमारी की वैक्सीन बनाने में नाकाम हैं, मगर एक उम्मीद अभी भी दवाओं ने बना रखी है। हमारे पास Hydroxychloroquine, Lopinavir और Oseltamivir जैसी बेहतरीन दवाएं मौजूद हैं।

याद रखें की इन दवाओं का नाम सिर्फ आपको एक उम्मीद दिलाने के लिए लिखा है, अगर आपको लगता है (खुदा न करे) कि आपको कोविड-19 है तो आप अपने नज़्दीकी अस्पताल में जायें और वहाँ से दवाएँ हासिल करें और अपना पूरा इलाज करायें।

क्या कोविड-19 एक साज़िश है?: हम सब इन्सानों को खुदा-ए-तआ़ला ने एक बहुत ही अच्छा हि़स्सा अता किया और जिसका नाम दिमाग़ दिया और उसी के ज़रिये हम तमाम चीजों के बारे में ग़ौर करते हैं और हमारे ज़ेहन में एक बात आती है कि क्या यह बीमारी वाक़ई कोई साज़िश तो नहीं? हमने इस बात पर थोड़ा ग़ौर किया तो पता चला कि जेन्ना ब्रायनर जो कि लाइव साइन्स एडिटर चीफ़ हैं, लिखती हैं कि ''साउथ मॉर्निंग चाइना पोस्ट नामी अख़बार में यह ख़बर देखने को मिलती है कि पहला कोविड-19 केस हूबेई प्रांत के एक 55 साल के आदमी में 17 नवम्बर 2019 देखने को मिला जो कि WHO रिपोर्ट से एक महीना पहले की बात है, क्योंकि WHO के हिसाब से इस बीमारी को 31 दिसम्बर 2019 ई० में वुहान प्रांत में देखा गया।''

द वायर के बड़े पत्रकार माइकल ओ० ओहान्लोन लिखते हैं ''अमरीकी नेवी सेक्रेटरी थॉमस मोडली ने जहाज़ U.S.S टेड्डी रूज़वेल्ट के कप्तान ब्रेट्ट क्रोज़ियर को नौकरी से निकाल दिया, जब कप्तान ने यह बताया कि उनका जहाज़ वियतनाम से लौटा तो उसमें 5000 लोग कोविड-19 से मुतास्सिर हैं।''

WHO का कहना है की हमारे पास पहला कोविड-19 केस 31 दिसम्बर 2019 ई० में दर्ज कराया गया। ए. राल्फ की किताब ''द न्यू वर्ल्ड ऑर्डर'' और डॉक्टर डेनिस कड्डी की किताब ''सीक्रेट रेकॉर्ड्स रिवील्ड'' के हिसाब से यह काम एक खुफ़िया तन्ज़ीम ''इल्लुमिनाटी'' का भी हो सकता है।

ऊपर दी गई ख़बरों से यह तो साफ ज़ाहिर है कि कहीं ना कहीं कोई बहुत बड़ी साज़िश इस बीमारी की आड़ में इंटरनेशनल पॉलिटिक्स में हो रही हैं, चीन धीरे-धीरे दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी बनने जा रहा है और केवल कुछ ही दिनों में वह सबसे ज़्यादा ताकतवर मुल्क़ भी होगा। वहीं दूसरी ओर यह भी कहा जा सकता है कि चीन ने अपना पहला केस WHO से छिपाया और वुहान के बारे में इस वजह से पता चला क्योंकि वहाँ यह बीमारी काफ़ी तेज़ी से फैली, लिहाज़ा कुछ ना कुछ तो चीन और अमेरिका अब भी छुपा रहे हैं, क्योंकि यह महज़ ख़्यालात हैं मुख़्तलिफ़ पत्रकारों के, इसलिए हमें इसे पत्थर की लकीर मानना गलत होगा, बेशक अल्लाह बेहतर जानता है। दुआ गो हूँ की अल्लाह तआ़ला इस ख़तरनाक बीमारी से पूरे आलम को महफ़ूज़ फरमाए और खुसूसन उम्मते मुस्लिमा को अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे! (आमीन)

★★★

★ azhardark12@gmail.com

बचत खाता (Saving Account) खुलवाने के फ़वाइद और एहतियाती तदाबीर

आइये जानते हैं क्या होता है Saving Account (बचत खाता):

Saving Account एक ऐसा Account (खाता) है जिसमें कोई भी भारतीय नागरिक किसी भी भारतीय या भारत में कोई विदेशी बैंक चल रहा हो, उसमें खुलवा सकता है। इस खाते में हम कितनी भी रक़म रख सकते हैं और ज़रूरत पड़ने पर उसमें से निकाल भी सकते हैं, लेकिन इस रक़म की सारी जानकारी हमारे पास होनी चाहिए, ताकि हम किसी परेशानी का शिकार न हों और ज़रूरत पड़ने पर हम किसी को भी इसकी जानकारी दे सकें।

इस पैसे को रखने के बदले में बैंक हमें एक Certain Amount (मुक़र्रर रक़म) देते हैं, जिसे हम Finance की ज़बान में Interest (ब्याज) कहते हैं। अगर हम अपना पैसा किसी भी सरकारी बैंक में रखते हैं, जिसमें सालाना 3.5 फ़ीसद ब्याज मिलता है। कुछ प्राइवेट बैंक कस्टमर को लुभाने के लिये ज़्यादा ब्याज भी दे रहे हैं जो कि 6 फ़ीसदी है। इन सब बैंक की सही देख-रेख के लिये सरकार ने एक इदारा क़ायम किया है, जिसको हम रिज़र्व बैंक ऑफ़ इण्डिया के नाम से जानते हैं।

कौन से Documents (दस्तावेज़) की ज़रूरत होती है बचत खाता खुलवाते वक़्तः

बैंकों ने दस्तावेज़ के लिये हमे बहुत से Options दे रखें है, जिन्हें जमा करके हम अपना बचत खाता खुलवा सकते हैं।

1. आधार की फ़ोटो कॉपी, 2. पासपोर्ट की कॉपी 3. ड्राइविंग लाइसेंस 4. वोटर आई डी कार्ड और पैन कार्ड में से कोई भी दो या दो से ज़्यादा दस्तावेज़ देकर हम अपना बचत खाता खुलवा सकते हैं।

ऐसी 5 चीज़ें जिनका हमें ध्यान रखना है, अपने बचत खाता खुलवाने मेंः

1. सबसे पहले कोशिश यही होनी चाहिए कि जिस Branch (शाख़ा) में हम अपना खाता खुलवाने जा रहे हैं, वह हमारे घर के क़रीब हो, क्योंकि अक्सर हमको बैंक के काम के सिलसिले में Branch जाना पड़ता है। इसलिए अगर Branch घर के क़रीब है तो बेहतर है।

2. किस तरह का खाता हमारे लिये बेहतर है। बैंक में दो तरह के खाते खुलते हैं। एक Current Account (चालू खाता) और दूसरा Saving Account (बचत खाता)।

Current Account उन लोगों के लिये होता है जो ज़्यादा लेन-देन करते हैं और उनका कोई Business या Company होती है। आम तौर से Business man इस तरह का खाता खुलवाते हैं।

दूसरा खाता जो अक्सर हम लोग खुलवाते हैं वो Saving Account है, जिस पर हमें एक फिक्स ब्याज (Fixed Interest) मिलता है। Current

Account में हमें कोई Interest नहीं मिलता।

3. आख़िर किस बैंक में खाता खुलवायें:

वैसे तो बैंक बहुत तरह के होते हैं। जैसे कि Government Banks, Private Banks, Cooperative Banks, Regional Rural Banks.

हम अपना बचत खाता किसी भी बैंक में खुलवा सकते हैं, लेकिन आज कल कुछ प्राइवेट बैंक हमें ज़्यादा ब्याज दे रहें हैं, जिसकी वजह से बहुत से लोग प्राइवेट बैंक में खाता खुलवाना ज़्यादा पसन्द कर रहे हैं सरकारी बैंक के मुक़ाबले।

ज़्यादा Accounts मतलब ज़्यादा Charge देना होगा:

आज कल बैंक हमसे बहुत से Charges या Amount अपने बचत खाते को मेंटेन करते वक़्त ले रहे है। इसलिए ज़्यादा खाता खुलवाने में समझदारी नहीं है। जितने बैंक होंगे, उसी हिसाब से Atm Card Charges, Demand Draft Charges, Pass Book Maintain Charges, हमें बैंक को देने होंगे।

5. हस्ताक्षर (दस्तख़त) का ख़ास ध्यान रखें:

अक्सर हम बैंक में जल्दबाज़ी में दस्तख़त कर देते हैं और जब हम बहुत दिनों के बाद बैंक में जाते हैं तो उस वक़्त हमारे दस्तख़त मिलते नहीं हैं, जिसकी वजह से हमें काफ़ी दुश्वारी का सामना करना पड़ता है और कभी-कभी हम अपना ही पैसा बैंक से नहीं निकाल पाते।

इस परेशानी से बचने के लिये हमें चाहिए कि हम कम से कम बचत खाते खोलें और जो भी खाते चल रहे हैं, उसमें एक ही दस्तख़त करें, एक दस्तख़त करने से वह हमें याद रहता है, हमारा खाता आसानी से चलता है। दस्तख़त अगर हम बार-बार बदलते हैं तो बहुत से बैंक हमसे 250 रूपये तक चार्ज करते हैं। ऐसी सूरत में हम बिला वजह नुक़सान उठाते हैं।

5. ज़्यादा खाते का मतलब ज़्यादा Minimum Balance रखना:

ज़्यादा खाते खुलवाने का सबसे बड़ा नुक़सान यह है कि हमें हर खाते में अलग अलग बैंक के हिसाब से Minimum Balance रखना ज़रूरी है। जैसे कि किसी बैंक में हज़ार रूपये और किसी बैंक में कम से कम 5000 रूपये हर वक़्त रखना ज़रूरी होता है। अगर हम यह बैलेंस नहीं रखते हैं तो बैंक हमसे एक फिक्स पैसा काटता है। इन सबका यही मतलब है कि हमें कम से कम और ज़रूरत के हिसाब से ही खाते रखने चाहिए और बिला वजह की परेशानी से बचना चाहिए।

बचत खाता के साथ बैंक में लॉकर भी ले सकते हैं:

बहुत से बैंक हमें बचत खाता खोलने के साथ एक लॉकर भी देते हैं। लॉकर एक ऐसी जगह होती है, जिसमें हम अपना क़ीमती सामान, घर में रखने के बजाय लॉकर में रख सकते हैं।

इससे हमारा सामान महफ़ूज़ भी रहता है, हालाँकि बैंक हमसे लॉकर के लिये अलग से सालाना एक मुशत रक़म ले लेते हैं।

ऊपर दी गई मालूमात को ज़ेहन में रखकर बचत ख़ाता खुलवाना हमारे लिये बड़ा फ़ायदेमन्द होता है। इसलिए कि अगर हम घर पर या जेब में पैसे राते हैं तो ख़र्च होते रहते हैं और हमें एहसास भी नहीं होता है, लेकिन अगर हम पैसे बैंक में रखते हैं तो हमारे पैसे बचे रहते हैं, जिन्हें हम ज़रूरत पड़ने पर कभी भी बैंक से निकाल सकते हैं।

★★★

★ असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, अलबरकात इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेनेजमेंट स्टडीज़, अलीगढ़, (यूपी)

सबक़ आमोज़ कहानियाँ

तुम कौन हो?: एक बार राजाभोज और उसके वज़ीरे आज़म माघ जंगल में शिकार खेलने गए। शिकार खेलते खेलते जंगल में दोनों भटक गए। भटकते हुए वह चले जा रहे थे कि जंगल के अन्दर उन्हें एक झोंपड़ी दिखाई दी, घने जंगल में एक झोंपड़ी देखकर उन दोनों की ढहारस बंध गई कि चलो जंगल से निकलने का रास्ता उस झोंपड़ी में रहने वालों से मालूम हो सकता है। जब वह दोनों झोंपड़ी के क़रीब पहुँचे तो घोड़ों की टाप सुनकर झोंपड़ी से एक बूढ़ी औरत बाहर निकली।

राजा ने बुढ़िया से पूछाः ''माँ! यह रास्ता कहा जायेगा?'' बूढ़िया ने कहाः ''यह रास्ता यहीं रहेगा, इसके ऊपर चलने वाला ही आगे या पीछे कहीं जायेगा। लेकिन तुम कौन हो?''

''हम तो मुसाफ़िर हैं।'' इस बार वज़ीरे आज़म माघ बोले। ''मुसाफ़िर तो दो ही हैं एक सूरज दूसरा चाँद। तुम कौन हो?'' बुढ़िया ने तसल्ली से पूछा। ''माँ! हम तो मेहमान हैं।'' राजा भोज ने बात बदलते हुए कहा। ''मेहमान तो दो ही हैं। एक दौलत और दूसरी जवानी, तुम कौन हो?'' बुढ़िया ने फिर एक सवाल दाग़ दिया। इस बार दोनों ही बुढ़िया का सवाल सुनकर हैरतज़दा रह गए। थोड़ी देर ठहरने के बाद दोनों ने एक साथ कहा कि ''हम तो एक दूसरे के काम आने वाले लोग हैं।''

''दूसरों के काम आने वाले तो दो ही हैं एक औरत और दूसरे ज़मीन, तुम कैसे एक दूसरे के काम आते हो, तुम कौन हो?'' इस बार बुढ़िया मुस्कुराते हुए बोली। ''अरे माई! हम दोनों तो साधू हैं।'' अब की बार राजा भोज ने झल्लाते हुए कहा तो वज़ीरे आज़म माघ ने उनका हाथ दबाया और इशारे से कहा कि ग़ुस्सा मत कीजिए। बुढ़िया ने जब राजा को इस तरह झल्लाते हुए देखा तो उसे बड़ा लुत्फ़ महसूस हुआ। उसने फिर कहना शुरू किया किः ''साधू तो दो ही हैं एक सच्चाई और दूसरे बहादुरी। तुम कौन हो?''

माघ वज़ीर ने कहाः ''बूढ़ी माँ! हम परदेसी हैं।?'' यह सुनकर बुढ़िया की मुस्कुराहट में इज़ाफ़ा हुआ और उसने कहाः ''परदेसी दो ही होते हैं एक जान और दूसरे दरख़्त के पत्ते। तुम कौन हो?''

अब राजा भोज और वज़ीरे आज़म को बुढ़िया की बातें सुनकर झल्लाहट नहीं हुई, बल्कि उनको बुढ़िया की हाज़िर जवाबी बहुत पसन्द आई। उसके बाद राजा, वज़ीरे आज़म और बुढ़िया के दरमियान और भी ऐसे कई सवाल व जवाब हुए। आख़िर में राजा भोज और वज़ीरे आज़म ने हार मान ली और कहा किः ''माई! यह इस मुल्क के राजा और मैं इनका वज़ीर हूँ। हम दोनों शिकार खेलते हुए रास्ता भटक गए हैं, हमको महल वापस जाना है।'' बुढ़िया यह सुनकर बहुत ख़ुश हुई, उसने दोनों को दूध पिलाया और ख़ूब मेहमान नवाज़ी की और उन्हें रास्ता समझाने लगी तो राजा भोज ने कहा कि तुम भी हमारे साथ महल चलोगी और आज से हमारी कैबिनेट की मुशीरे ख़ास रहोगी। इस तरह बुढ़िया की रहनुमाई में राजा भोज और वज़ीरे आज़म घने

जंगल से अपने महल वापस लोट आये।

बाप की नसीहतः बयान किया जाता है कि एक फ़क़ीह ने अपने बाप से कहा यह मुक़र्रिर बातें तो बहुत लच्छेदार करते हैं लेकिन उनका अमल उनके क़ौल के मुताबिक़ नहीं होता। दूसरों को यह नसीहत करते हैं कि दुनिया से दिल नहीं लगाना चाहिए, लेकिन ख़ुद माल व दौलत जमा करने की फ़िक्र से फ़ारिग़ नहीं होते। उनका हाल तो क़ुरआन मजीद की इस आयत के मुताबिक़ हैः ''तुम लोगों को तो भलाई इख़्तियार करने की ताकीद करते हो, लेकिन इस सिलसिले में अपनी हालत पर कभी ग़ौर नहीं करते।''

बाप ने कहाः ऐ बेटे! इस ख़्याल को ज़ेहन से निकाल दे कि जब तक कोई आलिम बा-अमल नहीं मिलेगा तो नसीहत पर कान न धरेगा भलाई और नेकी की बात जहाँ से भी सुने उसे क़ुबूल कर। उस नाबीना शख़्स जैसा बन जाना मुनासिब नहीं जो कीचड़ में फंस गया था और कह रहा था कहा ऐ बिरादराने इस्लाम! जल्द से मेरे लिये एक चिराग़ रौशन कर दो। उसकी यह बात सुनी तो एक ख़ातून ने कहा कि जब तुझे चिराग़ ही दिखाई नहीं देता तो उसकी रौशनी से किस तरह फ़ायदा हासिल करेगा। उसे बेटे! वाइज़ की महफिल बाज़ार की दुकान की तरह है कि जब तक नक़द क़ीमत अदा न की जाये माल हाथ नहीं आता। इसी तरह आलिम के साथ अक़ीदत शर्ते अव्वल है। दिल में अक़ीदत न होगी तो उसकी बात दिल पर असर न करेगी। नसीहत दीवार पर भी लिखी हुई तो क़ाबिले क़ुबूल होती है।

वज़ाहतः हज़रत शेख़ सअ़दी अलैहिर्रह़मा ने इस हिकायत में इस्लाहे नफ़्स के लिये यह तरीक़ा बयान किया है कि जिन लोगों से कुछ हासिल करना हो उनमें ऐब तलाश करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इल्म हासिल करने का इन्हेसार तो अक़ीदत और अदब पर ही है। नसीहत भी उस वक़्त तक दिल पर असर नहीं करती जब तक सुनने वाला अक़ीदत से न सुने उसके अलावा यह बात भी हर वक़्त ज़ेहन में रखने के क़ाबिल है कि बे-ऐब ज़ात तो सिर्फ़ अल्लाह पाक की है। ऐब ढूँढने की नज़र से देखा जाये तो अच्छे अच्छे आदमी में भी कोई कमी निकल आयेगी।

बद-आवाज़ क़ारीः बयान किया जाता है कि एक ऐसा शख़्स जिसकी आवाज़ अच्छी न थी बहुत बुलन्द आवाज़ में क़ुरआन मजीद की तिलावत किया करता था। एक दिन एक दानिशमन्द शख़्स उस तरफ़ से गुज़रा तो उसने पूछाः भाई! तुझे इस काम का क्या मुआवज़ा मिलता है? उसने जवाब दिया, कुछ भी नहीं, दानिशमन्द ने कहाः फिर इस क़द्र मशक़्क़त क्यों उठाता है? वह बोला ख़ुदा के लिये पढ़ता हूँ। दानिशमन्द ने कहाः ख़ुद के लिये मत पढ़ा करः

तू इसी सूरत से गर पढ़ता रहा क़ुरआने पाक
देख लेना रौनके इस्लाम कम हो जायेगी

वज़ाहतः इस हिकायत में हज़रत शेख़ सअ़दी अलैहिर्रह़मा ने इस तरफ़ तवज्जोह दिलाई है कि नेकी और भलाई के कामों में भी दरमियान तरीक़ा इख़्तियार करना ज़रूरी है, लोगों पर ऐसे ही अन्दाज़ का अच्छा असर पड़ता है और लोग इस्लाम के क़रीब होते हैं और इस्लाम की बातों पर अमल करना चाहते हैं। अगर यूँही भद्दे अन्दाज़ में इस्लाम की बातें लोगों तक पहुँचायें तो क़रीब होने कि बजाये लोग दूर हो जायेंगे। लिहाज़ा हमें हर चीज़ में अच्छा तरीक़ा अपनाना चाहिए और इस्लाम की बातें अच्छे अन्दाज़ में फैलाना चाहिए।

★★★

बरकाती ख़बरें

जामिआ़ अह़सनुल बरकात में तलबा की ऑन लाइन क्लासेज़ शुरूः आलमी वबा कोरोना वायरस की वजह से पूरे मुल्क में लॉकडाउन शुरू होने से 6 दिन पहले ही जामिआ़ में छुट्टी कर दी गई ताकि तलबा व असातिज़ा आसानी के साथ अपने अपने घर पहुँच सकें। ऐसी अचानक छुट्टी के सबब उस वक़्त ऐसा ज़रूर लगा कि तलबा का तालीमी नुक़सान हुआ, लेकिन उसकी भरपाई के लिये ऑनलाइन क्लासेज़ शुरू कर दी गईं। यह जामिआ़ और इसके ज़िम्मेदारान के लिये बहुत ख़ुशी की बात है कि जदीद टेक्नॉलोजी के ज़रिये तालीम का इन्तेज़ाम किया गया और शोआ़ब-ए-अ़रबिया व हिफ़्ज़ व किराअत में तालीमी सिलसिला अच्छी तरह चल रहा है।

खानकाहे बरकातिया मारहरा से न्यूज 18 टीवी चैनल के एंकर अमिश देवगन को कानूनी नोटिस रवानाः हाल ही में न्यूज 18 टीवी चैनल के एंकर अमिश देवगन ने अपने एक शो में सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी की शान में नाजेबा जुमले कहे, जिसके चलते पुरे मुल्क हिन्दुस्तान में ग़म व गुस्से का माहौल है। इस एंकर के खिलाफ़ FIR दर्ज करने की प्रक्रिया पूरे देश में समान रूप से चल रही है। खानक़ाहे बरकातिया मारहरा के जानिब से सुल्तानुल हिन्द की शान में गुस्ताख़ी करने वाले दारिदा दहन एंकर अमिश देवगन को क़ानूनी नोटिस भेजी गई है।

हज़रत सय्यद नजीब हैदर साह़ब ने अपने क़ानूनी नोटिस में अमीश देवगन के खिलाफ़ सख़्त कार्यवाही करने की बात कही है, उन्होंने यह भी कहा कि ख़ानकाहे बरकातिया भारत की सबसे पुरानी ख़ानक़ाह में से एक है। यह 400 से अधिक वर्षों से तसव्वुफ़ की मीरास है। सिलसिला-ए-कादरिया के आदेशों का पालन करने के लिए सबसे बड़े केन्द्रों में से एक है। ख़ानकाहे बरकातिया के भारत और विदेशों में लगभग 220 मिलियन फोलोवर्स हैं। क़ानूनी नोटिस के ज़रिये तत्काल और बिना शर्त माफ़ी मांगने का मुतालबा किया गया है, लिखित में भी और एक ही तरीक़े से, एक ही स्तर पर, यानी लाइव टीवी डिबेट शो के दौरान।

अमिश देवगन के बयान पर शदीद प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए हज़रत सय्यद मुहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी (सज्जादा नशीन खानकाहे बरकातिया मारहरा) ने कहा कि यह भारत के इतिहास में पहली बार है कि किसी पत्रकार ने सार्वजनिक रूप से भारत के रूहानी पेशवा की शान में गुस्ताख़ी की है। इस नाज़ुक वक़्त में जब देश कोविड-19 बीमारी की चपेट में है और देश आर्थिक तंगी के कगार पर है। ऐसे माहौल में मीडिया के कुछ अवसरवादी और लालची सदस्य देश को संप्रदायवाद और नफ़रत की आग में झोंकने का काम कर रहे हैं जो सभी परिस्थितियों में निंदनीय है। ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा भारत सरकार को इस तरह के अपराधियों पर सख़्त प्रतिबंध लगाने की गुज़ारिश करती है। खानक़ाहे बरकातिया मारहरा ने एक संप्रदायवादी और मंफी विचारधारा वाले पत्रकार अमिश देवगन को गिरफ़्तार करने और मुक़द्दमा चलाने के लिए भारतीय हुकूमत से मुतालबा किया है।

रिपोर्टः मुह़म्मद अकबर अ़ली बरकाती।

मुश्किल अल्फ़ाज़ की तशरीह

इस शुमारे के जिन मज़ामीन में मुश्किल अल्फ़ाज़ आए हैं उनके मआ़नी और तशरीहात को यहाँ लिखा जा रहा है।

अ़लम्बरदारः झण्डा उठाकर चलने वाला

मुन्फ़रिदः अकेला

मख़्लूत तहज़ीबः मिली जुली तहज़ीब तौर तरीक़ा

सरकशीः ग़ुरूर, घमण्ड

नाज़ेबा जुमलाः ना मुनासिब बात

आबिद व ज़ाहिदः इबादत करने वाला परहेज़गार

हुलूले ख़ुदाईः ख़ुदा का एक दूसरे में दाख़िल होना

क़नाअ़तः थोड़ी सी चीज़ पर राज़ी होना

साहिबुन्नअ़ल वल विसादाः ख़िदमत करने वाला

सेग़ाः अन्दाज़, ढाँचा

मुतआ़ः फ़ायदाः कुछ दिनों का निकाह जो शिया मज़हब में जाइज़ है

सरबराहाने हुकूमतः हुकूमत के अफ़सर

दस्तारे इक़्तिदारः हुकूमत की पगड़ी

इक़्बाल मंदः ख़ुश किस्मत

अमीक़ः गहरा

सरकूबीः सज़ा देना

सितारा परस्तः सितारों को पूजने वाला

नसरानीः ईसाई

मआ़दे जिस्मानीः जिस्म के वापस जाने की जगह

प्रागंदा सरः बिखरे हुए बाल

पिंडलीः घुटने के नीचे वाला हिस्सा

वफ़ा शेआ़रीः वफ़ादारी

ना मवाफ़िक़ः जो बराबरी का न हो

रग़बतः ख़्वाहिश, आरज़ू

अलमियाः दुख भरा

गिरवीदाः आशिक़ और शैदा

मआ़सियतः नाफ़रमानी

हलावतः मिठास

वईदः सज़ा देने की धमकी

मुसल्लत करनाः मुक़र्रर करना

डिबेटः गुफ़्तगू, बात चीत

मुन्तज़िमीनः इन्तेज़ाम करने वाले लोग

दश्त-दश्तः जंगल जंगल

फ़लसफ़ीः इल्मे फ़लसफ़ा का जानने वाला

इन्किशाफ़ः किसी बात का खुलना

जावेदाः हमेशा रहने वाला

दाइमाः हमेशा

बवक़्ते नज़अः दम तोड़ने के वक़्त

बरमलाः खुल्लम खुल्ला

निस्फ़ुन्नहारः दोपहर, आधा दिन

फ़िक्रे मआ़शः रोज़गार की फ़िक्र

तदाबीरः सोच विचार, तरीक़ा, इन्तेज़ाम

वहदतः एक होना, अकेले होना

कहकशाँः वो लम्बी सफ़ेदी जो अंधेरी रात में सड़क की तरह आसमान में दूर तक गई हुई नज़र आती है।

पैकरः सरापा, मुजस्समा

फ़सीहः अच्छी गुफ़्तगू करने वाला

बे-मुमासिलः जिसकी तरह कोई न हो

R.N.I Ref. No. : 1287438 QUARTERLY Title Code: UPHIN/2016/69091

Vol.: 05
Issue No.: 03

PAYAM~E~BARKAAT

Rs. 35/-
Total Pages: 64

Al-Barkaat Islamic Research & Training Institute, Jamalpur, Aligarh -202122, (U.P) E-mail: payamebarkaat@gmail.com

AL-BARKAAT
Educational Institutions

AL-BARKAAT PUBLIC SCHOOL

From: Nursery to 10+2 (with all stream)
*Qualified & Competent Teachers, **State-of-the-art Computer & Science Labs,
***Sprawling Sports Infrastructure ****Emphasis on overall Personality Development
Separate Section for Girls from 6th to 12.
www.albarkaat.com, e-mail: abpsprincipaloffice@gmail.com, Phone: 8899691307, 9045502007 (Ext. 202)

AL-BARKAAT INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES (MBA)

Approved by AICTE, GOL, New Delhi & Affiliated to Dr. A.P.J. Abdul Kalam Technical University (Formerly UPTU), Lucknow
Course: *Master of Business Administration (MBA)
Eligibility: Graduate with 50% and See Rank Holder of UPSEE-16 Rank Holder, CAT-2016 Rank Holder, MAT-2015
Duration: 2 Years
www.abims.ac.in, e-mail: admission@abims.ac.in | abims117@rediffmail.com, Phone: 9105178607, 9105178608, 9045502007 (Ext. 802)

AL-BARKAAT INSTITUTE OF EDUCATION (B.Ed.)

Approved by NCTE, Jaipur & Affiliated to Dr. B.R. Ambedkar Univesity, Agra
Course: Academic Programme * (B.Ed.)
www.abie.ac.in, e-mail: abie.b.ed@gmail.com, Phone: 9105178604, 9045502007 (Ext. 901)

AL-BARKAAT ISLAMIC RESEARCH & TRAINING INSTITUTE

Course: Advance Diploma in Islamic Studies & Personality Development
Duration: 2 Years
www.albarkaat.com, e-mail: director.abiriti@gmail.com, Phone: 9105178603, 9045502007 (Ext. 903)

AL-BARKAAT PUBLIC SCHOOL (AFTERNOON SHIFT) UNDER PROJECT "RAHAT"

*Specially for Educationally & Economically Weaker Section of the Society,
**Fees Rs. 100/- Per Month Only, ***Dress & Books will be provided free of cost by the school.
www.albarkaatrahatproject.org, e-mail: afternoonschool.albarkaat@gmail.com, Phone: 9105706786, 9045502007 (Ext. 107)

AL-BARKAAT COLLEGE OF GRADUATE STUDIES

Affiliated to Dr. B.R. Ambedkar University, Agra
Course: BBA & BCA
*Focus on Personality Development, **Yearly Scholarship to Meritorious & Economically Weak Students,
***Fully Equipped Lab. & Sports Facilities
www.abcgs.org, e-mail: abcgsaligarh@gmail.com, Phone: 9105178606, 9045502007 (Ext. 906)

AL-BARKAAT SYED HAMID COMMUNITY COLLEGE

Courses Jointly Certified by NIELIT & NCPUL, Ministry of HRD & IT Govt. of India
*Diploma in Urdu Language, **Diploma in Arabic Language,
***Diploma in Calligraphy & Graphic Design,
****Diploma in Refrigeration and Air Conditioners, *****Certificate Course in Food Production,
******Certificate Course in Garment Making
e-mail: abccsl12@gmail.com, Phone: 9105178605, 9045502007.

Separate Hostel Accommodation for Boys and Girls

Al-Barkaat Masjid

Qadiria Girls Section

Junior Wing

Al-Barkaat Hostels

Senior Wing

Nursery Section

Islamic Research & Training Institute

Institute of Education (B.Ed.)

College of Graduate Studies

Institute of Management Studies (MBA)